Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ

(सूरः जुमा 4-5)

अनुवाद : और इन्ही में से दूसरों की तरफ़ भी (उसे मबऊस किया है) जो अभी उनसे नहीं मिले। वह कामिल ग़लबा वाला (और) साहिब हिक्मत है। यह अल्लाह का फ़ज़ल है वह इस को जिसे चाहता है अता करता है और अल्लाह बहुत बड़े फ़ज़ल वाला है

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 8
अंक-10-11

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद
अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन
फ़रीद

16- 23 शाबान 1444 हिज्री कमरी, 16-9 अमान 1402 हिज्री शम्सी, 9-16 मार्च 2023 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

शरायत-ए-बैअत सिलसिला आलीया अहमदिया
(अहमदिय्या सम्प्रादय में दीक्षित होने की शर्ते)

प्रथम : बैअत करने वाला (दीक्षित होने वाला) सच्चे दिल से इस बात की प्रतिज्ञा करे कि भविष्य में उस समय तक कि कब्र में दाख़िल हो जाए शिर्क (अल्लाह तआला के साथ देवी–देवताओं और अन्य सृष्टि की उपासना का सिद्धान्त अर्थात् अनेकश्वरवाद) से बचता रहेगा।

द्वितीय : यह कि झूठ और व्यभिचार और बुरी दृष्टि और प्रत्येक दुराचार और अत्याचार और ख़यानत (धरोहर को हानि पहुँचाना) और कलह और विद्रोह की नीतियों से बचता रहेगा और तामसिक आवेगों के समय उनके वशीभूत नहीं होगा चाहे कैसा ही उत्तेजक भाव पेश आए।

तृतीय : यह कि ख़ुदा और उसके रसूल के आदेशानुसार पाँचो समय की नमाज़ बिला नाग़ा अदा करता रहेगा और यथा-शक्ति तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने और अपने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजने और प्रत्येक दिन अपने गुनाहों की माफ़ी माँगने और क्षमायाचना करने में निरन्तर लगा रहेगा और हार्दिक प्रेम से ख़ुदा तआला के उपकारों को याद करके उसकी स्मृति और प्रशंसा करना प्रतिदिन का नियम बनाएगा।

चतुर्थ : यह कि सामान्य रूप से सम्पूर्ण मानव-समाज और विशेषकर मुसलमानों को अपने तामसिक आवेगों के समय किसी प्रकार का अनुचित कष्ट नहीं पहुँचाएगा, ना वाणी से, न हाथ से, न किसी अन्य प्रकार से।

पंच्चम : यह कि प्रत्येक अवस्था सुख-दुःख, सम्पन्नता-विपन्नता और सम्पदा-आपदा– में ख़ुदा तआला के साथ वफ़ादारी करेगा और प्रत्येक स्थिति में अल्लाह तआला के निर्णय पर राज़ी होगा और उसके मार्ग में प्रत्येक अपमान और दुःख को स्वीकार करने के लिए तैयार रहेगा और किसी विपत्ति में आने पर मुँह नहीं फेरेगा अपितु आगे कदम बढ़ाएगा।

षष्टम : यह कि रूढ़ियों और लोभ लालसा के अनुसरण से रुक जाएगा और क़ुर्आन शरीफ की आदेशों को पूर्ण रूप से स्वीकार करेगा और अल्लाह और उसके रसूल के आदेशों को अपनी प्रत्येक अवस्था में नियम बना लेगा।

सप्तम : यह कि अहंकार और अभिमान को सर्वथा त्याग देगा और शालीनता और सदाचार और दीनता और निरीहता और नम्रतापूर्वक जीवन व्यतीत करेगा।

अष्टम : यह कि धर्म और धर्म की प्रतिष्ठा और इस्लाम के प्रति सहानुभूति को अपने प्राण और अपने धन और अपनी मान-मर्यादा और अपनी सन्तान और अपने प्रत्येक प्रिय सम्बन्धी से प्रियतम समझेगा।

नवम : यह कि प्रभु की समस्त दृष्टि के प्रति सहानुभूति में केवल मात्र अल्लाह तआला के लिए लगा रहेगा और यथासम्भव अपनी ईश्वर प्रदत शक्तियों और वरदानों से मानव समाज को लाभ पहुँचाएगा।

दशम : यह कि इस विनीत के साथ केवल मात्र ख़ुदा तआला के भ्रातृ-सम्बन्ध, पुण्यादेशों के पालन के द्वारा स्थापित करके उस पर मरने तक क़ायम रहेगा। और इस भ्रातृ-सम्बन्ध में ऐसा उच्च कोटि का होगा कि उसका उदाहरण सांसारिक रिश्तों और सम्बन्धों और समस्त सेवकजन्य अवस्थाओं में पाया न जाता हो।

(इश्तेहार तक्मील-ए-तब्लीग़ 12 जनवरी सन् 1889 ई.)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - **निगरान बदर बोर्ड क़ादियान**

لَآ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ

क्रम	विषय सूची	पृष्ठ
1	शरायत-ए-बैअत सिलसिला आलीया अहमदिया	1
2	वसीयत की एहमीयत और बरकात	2
3	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 3 फ़रवरी 2022 ई.	3
4	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी ख़ुदा पर विश्वास और दुआ की स्वीकृत की दृष्टि से	9
5	जमात अहमदिया की प्रगति के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हामात	13
6	हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इशक़	17
7	ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 10 फ़रवरी 2022 ई.	21

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का आँहज़-रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अद्वितीय प्रेम

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सबसे बड़े आशिक़ थे। आप अपने आक़ा-ओ-मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ऐसा इशक़ था जिसकी नज़ीर चौदह सौ साल में हमें नज़र नहीं आती।

सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तक़रीर-ओ-तहरीर, आपके मंसूर-ओ-मंज़ूम कलाम, आपकी प्रत्येक अदा , आपकी प्रत्येक हरकत-ओ-सुकून, आपका क़ौल-ओ-फ़ेअल, आपकी नशिश्त-ओ-बर्ख़ास्त, आपकी बातचीत, आपका खाना पीना, आपका उठना बैठना, आपका सोना जागना आपके शब्द शब्द और लफ़्ज़ लफ़्ज़ से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इशक़ की ख़ुशबू फूटती है।

अपने आक़ा-ओ-मौला से इशक़-ओ-मुहब्बत का इज़्हार करते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

وَذِكْرُ الْمُصْطَفٰى رُوْحٌ لِقَلْبِی ... وَصَارَ لِمُهْجَتِی مِثْلَ الطَّعَامِ

कि मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की याद मेरे दिल की रूह हैऔर आपका वर्णन मेरी ग़िज़ा है जिसके बग़ैर मैं ज़िंदा नहीं रह सकता!

يَا حِبِّ اِنَّكَ قَدْ دَخَلْتَ مَحَبَّةً ... فِیْ مُهْجَتِیْ وَمَدَارِكِیْ وَجَنَانِیْ

हे मेरे माशूक़ हे मेरे महबूब मुहब्बत के लिहाज़ से तू मेरे जिस्म-ओ-जान में सरायत कर चुका है। मेरी जान में और मेरे दिमाग़ में और मेरे दिल में बस तू ही तू है।

مِنْ ذِكْرِ وَجْهِكَ يَا حَدِيْقَةَ بَهْجَتِیْ ... لَمْ اَخْلُ فِیْ لَحْظٍ وَّلَا فِیْ اٰنِ

हे मेरी ख़ुशी-ओ-शादमानी के बाग़ तेरी याद से एक लम्हा और एक आन के लिए मैं कभी ख़ाली नहीं रहा।

पाठकों नबी बढ़ोतरी नहीं करता। यह एक ठोस हक़ीक़त है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम कभी भी, एक लम्हा के लिए भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की याद से ख़ाली नहीं हुए। जिसकी डयूटी यह लगी हो कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीन को पूरी दुनिया में ग़ालिब करना है, जिसने इस राह में अपना सब कुछ निछावर कर दिया हो, वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत से और आप की याद से कैसे ख़ाली हो सकता है? आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं।

اِنِّیْ اَمُوْتُ وَلَا تَمُوْتُ مَحَبَّتِیْ ... يُدْرٰی بِذِكْرِكَ فِی التُّرَابِ نِدَائِیْ

मैं तो एक दिन मर जाऊंगा मगर मेरी मुहब्बत कभी नहीं मरेगी। मेरे मरने के बाद भी मेरी क़ब्र की मिट्टी से तेरी मुहब्बत की निदा बुलंद होती रहेगी।

سرے دارم فدائے خاکِ احمد ... دلم ہر وقت قربان محمدﷺ

فدا شد در رہش ہر ذرّۂ من ... کہ دیدم حسن پنہان محمدﷺ

कि मेरा सर अहमद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ख़ाक-ए-पा पर निसार है और मिरा दिल हर वक़्त मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर क़ुर्बान रहता है। इस की राह में मेरा प्रत्येक ज़रा क़ुर्बान हो चुका है क्योंकि मैंने मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का मख़फ़ी हुस्न देख लिया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत और इताअत में फ़ना हो चुके थे। यही वजह है कि आप अलैहिस्सलाम के आने को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आना क़रार दिया गया। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"अगर कोई ग़ैर शख़्स आ जावे तो ग़ैरत होती है लेकिन जब वह ख़ुद ही आवे तो फिर ग़ैरत कैसी? इस की मिसाल ऐसी है कि अगर एक शख़्स आईना में अपना चेहरा देखे और पास उसकी बीवी भी मौजूदा हो तो क्या उसकी बीवी आईना वाली तस्वीर को देखकर पर्दा करेगी? और उसको यह ख़्याल होगा कि कोई नामुहर्रम शख़्स आ गया है इसलिए पर्दा करना चाहीए और या पति को ग़ैरत महसूस होगी कि कोई अजनबी शख़्स घर में आ गया है और मेरी बीवी सामने है नहीं बल्कि आईना में उन्हें पति बीवी की शक्लों का प्रारूप होता है और कोई इस प्रारूप को ग़ैर नहीं जानता और न उनमें किसी किस्म की दोई होती है।

यही हालत मसीह मौऊद की आमद की है वह कोई ग़ैर नहीं न आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जुदा है और किसी नई तालीम या शरीयत को लेकर आने वाला नहीं है बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही का प्रारूप और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ही आमद है जिस से आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस के आने से कोई ग़ैरत दामंगीर नहीं हुई बल्कि उसको अपने साथ मिला या है और यही रहस्य है आपके इस इरशाद में कि वह मेरी क़ब्र में दफ़्न किया जावेगा यह अमर ग़ायत इत्तहाद की तरफ़ रहबरी करता है।"

(मल्-फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 281 मुद्रित कादियान 2003)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मंज़ूम कलाम में फ़रमाते हैं :

سَاَدْخُلُ مِنْ عِشْقِیْ بِرَوْضَةِ قَبْرِهٖ ... وَمَا تَعْلَمُ هٰذَا السِّرَّ يَا تَارِكَ الْهُدٰى

कि मैं अपने बेपनाह इशक़ की बरकत से रुहानी तौर पर रोज़-ए-रसूल में दाख़िल किया जाऊँगा। परंतु हे हिदायत के दुश्मन तुझे इस राज़ की कोई ख़बर नहीं।

पाठकों सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से इंतेहाई दर्जा पर मुहब्बत की और अपनी जमात को भी सच्ची मुहब्बत की तालीम दी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्ची मुताबअत को ही नजात का ज़रीया क़रार देते हैं। न केवल एक दफ़ा बल्कि बार-बार इस बात का एतराफ़ किया है कि मुझे जो कुछ मिला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अधीन मिला और जो कुछ मेरा है वह मेरा नहीं बल्कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का है

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"नौ-ए-इन्सान के लिए समस्त ज़मीन पर अब कोई किताब नहीं परंतु क़ुरआन और तमाम आदम जादों के लिए अब कोई रसूल और शफ़ी नहीं मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सो तुम कोशिश करो कि सच्ची मुहब्बत इस जाह-ओ--जलाल के नबी के साथ रखो और इस के ग़ैर को इस पर किसी नौ की बड़ाई मत दो ता आसमान पर तुम निजात याफताह लिखे जाओ।" (कुश्ती-ए-नूह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 13)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"अल्लाह तआला ने अपना किसी के साथ प्यार करना इस बात से मशरूत किया है कि ऐसा शख़्स आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पैरवी करे इसलिए मेरा यह ज़ाती तजुर्बा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्चे दिल से पैरवी करना और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत रखना अंजाम-कार इन्सान को ख़ुदा का प्यारा बना देता है। (रुहानी ख़ज़ायन भाग22 हकीकतुल वह्यी पृष्ठ : 67)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"मेरे लिए इस नेअमत का पाना मुम्किन न था अगर मैं अपने सय्यद-ओ-मौला फ़ख़रुल अंबिया और ख़ैरुल रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के राहों की पैरवी न करता। अतः मैंने जो कुछ पाया इस पैरवी से पाया और मैं अपने सच्चे और कामिल इलम से जानता हूँ कि कोई इन्सान बजुज़ पैरवी इस नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़ुदा तक नहीं पहुंच सकता और न मार्फ़त कामला

शेष पृष्ठ 19 पर

ख़ुत्बः जुमअः

"तुम्हारे लिए एक ज़रूरी तालीम यह है कि क़ुरआन शरीफ़ को महजूर की तरह न छोड़ दो कि
तुम्हारी इसी में ज़िंदगी है जो लोग क़ुरआन को इज़्ज़त देंगे वे आसमान पर इज़्ज़त पाएँगे" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

इस ज़माने में अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ को क़ुरआन-ए-करीम की इशाअत के लिए भेजा है, क़ुरआन-ए-करीम की हिफ़ाज़त के लिए भेजा है, आप अलैहिस्सलाम को वे गूढ़ रहस्य
सिखाए हैं जो लोगों से पोशीदा थे, आप अलैहिस्सलाम के द्वारा क़ुरआन-ए-करीम की फ़ैज़ का एक चशमा जारी फ़रमाया है, आप आए ही क़ुरआन-ए-करीम की हुकूमत को दुनिया में क़ायम करने लिए हैं

पाकिस्तान में समय समय पर इन उल्मा को उबाल उठता रहता है और उनके साथ फिर बाअज़ सस्ती शौहरत हासिल करने वाले सियास्तदान और सरकारी अधिकारी भी मिल जाते हैं और अहमदियों को
मुख़्तलिफ़ बहानों से ज़ुल्मों का निशाना बनाया जाता है। पिछले कुछ अर्से से फिर ये लोग अहमदियों पर तहरीफ़ और तौहीन-ए-क़ुरआन के मन घड़त मुक़द्दमे बनाने की कोशिश में लगे हुए हैं, अल्लाह तआला उनके उपद्रव से बचाए और जो अहमदी इस ग़लत और ज़ालिमाना इल्ज़ाम में उन्होंने पकड़े हुए हैं उनकी जल्द रिहाई के भी अल्लाह तआला सामान पैदा फ़रमाए

इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तालीम की रोशनी ही है
जिस से क़ुरआन-ए-करीम के उलूम-ओ-मआरिफ़ का पता चलता है और जमात अहमदिया ही है जो इस काम को दुनिया में सरअंजाम दे रही है

आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों को ... दुनिया को बताने की ज़रूरत है
हम पर कुफ़्र के फ़त्वे लगाने वालों को दिखाने की ज़रूरत है कि अहमदी केवल पुराने क़िस्सों ही को वर्णन नहीं करते बल्कि आज भी ज़िंदा किताब और ज़िंदा रसूल के मानने वालों पर अल्लाह तआला के फ़ज़्लों के उतरने पर यक़ीन रखते हैं, इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि अल्लाह तआला आज भी बोलता है

"यह सच्च है कि अक्सर मुस्लमानों ने क़ुरआन शरीफ़ को छोड़ दिया है लेकिन फिर भी क़ुरआन शरीफ़ के अनवार-ओ-बरकात और उसकी तासीरात हमेशा ज़िंदा और बताज़ा हैं
इसलिए मैं इस वक़्त इसी सबूत के लिए भेजा गया हूँ और अल्लाह तआला हमेशा अपने अपने वक़्त पर अपने बंदों को उसकी हिमायत और ताईद के लिए भेजता रहा है क्योंकि उसने वादा फ़रमाया था
إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ (अल् हुजरात : 10) अर्थात् निसन्देह हमने ही इस ज़िक्र (क़ुरआन शरीफ़) को नाज़िल किया है और हम ही उस के मुहाफ़िज़ हैं"

"मैं अपने अनुभव से कहता हूँ कि क़ुरआन शरीफ़ की कोई बात पेश करें, वह अपनी जगह पर एक निशान और मोजिज़ा है"

"क़ुरआन शरीफ़ का मद्द-ए-नज़र समस्त दुनिया की इस्लाह है और उसका सम्बोधन कोई ख़ास नहीं बल्कि
खुले खुले तौर पर वर्णन फ़रमाता है कि वह समस्त इन्सानों के लिए नाज़िल हुआ है और हर एक की इस्लाह इस का मक़सूद है"

"ख़ुदा ने तुम पर बहुत एहसान किया है जो क़ुरआन जैसी किताब तुम्हें इनायत की। मैं तुम्हें सच्च सच्च हूँ कि
वह किताब जो तुम पर पढ़ी गई अगर ईसाइयों पर पढ़ी जाती तो वह हलाक न होते और ये नेअमत और हिदायत जो तुम्हें दी गई अगर बजाय तौरेत के
यहूदियों को दी जाती तो बाअज़ फ़िरक़े उनके क़ियामत से मुनकिर न होते अतः इस नेअमत की क़दर करो जो तुम्हें दी गई, यह निहायत प्यारी नेअमत है, यह बड़ी दौलत है"

ख़ुदा तआला ने इस सिलसिला को इस लिए क़ायम किया है तावह इस्लाम की सच्चाई पर ज़िंदा गवाह हो और साबित करे कि
वो बरकात और आसार उस वक़्त भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कामिल इत्तिबा से ज़ाहिर होते हैं जो तेराह सौ बरस पहले होते थे
हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुर मारिफ़ इर्शादात की रोशनी में क़ुरआन-ए-करीम के फ़ज़ायल, मुक़ाम-ओ-मर्तबा और अज़मत के बारे में वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 3 फ़रवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुरआन-ए-करीम के फ़्यूज़ वर्णन फ़रमाते हुए एक जगह फ़रमाते हैं कि "इस के फ़्यूज़-ओ-बरकात का दर हमेशा जारी है। और वह हर ज़माना में इसी तरह नुमायां और दरख़शां है जैसा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के वक़्त मे था।"

(मल्फ़ूज़ात ,भाग 3 पृष्ठ 57 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "ये सच्च है कि अक्सर मुस्लमानों ने क़ुरआन शरीफ़ को छोड़ दिया है लेकिन फिर भी क़ुरआन शरीफ़ के अनवार-ओ-बरकात और उसकी तासीरात हमेशा ज़िंदा और ताज़ा बताज़ा हैं। इसलिए मैं इस वक़्त इसी सबूत के लिए भेजा गया हूँ। और अल्लाह तआला हमेशा अपने अपने वक़्त पर अपने बंदों को उसकी हिमायत और ताईद के लिए भेजता रहा है। क्योंकि उसने वादा फ़रमाया था اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَاِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (हुजरात : 10) अर्थात् निसन्देह हमने ही इस ज़िक्र (क़ुरआन शरीफ़) को नाज़िल किया है और हम ही उस के मुहाफ़िज़ हैं।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 8 पृष्ठ 116-117 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः उस ज़माने में अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ को क़ुरआन-ए-करीम की इशाअत के लिए भेजा है, क़ुरआन-ए-करीम की हिफ़ाज़त के लिए भेजा है। आप अलैहिस्सलाम को वे मआरिफ़ सिखाए हैं जो लोगों से पोशीदा थे। आप अलैहिस्सलाम के ज़रीये क़ुरआन-ए-करीम के फ़ैज़ का एक चशमा जारी फ़रमाया है। आप अलैहिस्सलाम आए ही क़ुरआन-ए-करीम की हुकूमत को दुनिया में क़ायम करने के लिए हैं।

लेकिन बदक़िस्मती से तथाकथित उल्मा ने आप अलैहिस्सलाम के दावे की इबतेदा से ही आप अलैहिस्सलाम की मुख़ालेफ़त अपना उद्देश्य बनाया हुआ है और कोई दलील और अक़ल की बात सुनना नहीं चाहते और लोगों को भी गुमराह कर रहे हैं। ख़ुद तो इलम-ओ-मार्फ़त से न-बलद हैं लेकिन जिसको ख़ुदा तआला ने इस काम के लिए भेजा है इसके रास्ते में रोकें खड़ी करने की कोशिश करते रहते हैं और उसे ये लोग क़ुरआन-ए-करीम की ख़िदमत समझते हैं।

पाकिस्तान में समय समय पर इन उल्मा को उबाल उठता रहता है और उनके साथ फिर बाअज़ सस्ती शौहरत हासिल करने वाले सियास्तदान और सरकारी अधिकारी भी मिल जाते हैं और अहमदियों को मुख़्तलिफ़ बहानों से ज़ुल्मों का निशाना बनाया जाता है। पिछले कुछ अर्से से फिर ये लोग अहमदियों पर तहरीफ़ और तौहीन-ए-क़ुरआन के मन घड़त मुक़द्दमे बनाने की कोशिश में लगे हुए हैं। अल्लाह तआला उनके उपद्रव से बचाए और जो अहमदी इस ग़लत और ज़ालिमाना इल्ज़ाम में उन्होंने पकड़े हुए हैं उनकी जल्द रिहाई के भी अल्लाह तआला सामान पैदा फ़रमाए

बहरहाल जैसा कि मैंने कहा कि इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तालीम की रोशनी ही है जिससे क़ुरआन-ए-करीम के उलूम-ओ-मआरिफ़ का पता चलता है और जमाअत अहमदिया ही है जो इस काम को दुनिया में सरअंजाम दे रही है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें क़ुरआन-ए-करीम की अज़मत-ओ-एहमीयत, मुक़ाम-ओ-मर्तबा के मुताल्लिक़ अपने इर्शादात और तसनीफ़ात में जो इर्फ़ान वर्णन फ़रमाया है और अता फ़रमाया है वह मैं आज वर्णन करूँगा

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह क़ुरआन-ए-करीम की तालीम कामिल और मुकम्मल होने के बारे में वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "यद्यपि मेरा मत यही है कि क़ुर्आन अपनी शिक्षा में पूर्ण है तथा कोई सच्चाई उस से बाहर नहीं, क्योंकि अल्लाह तआला का कथन है -

وَنَزَّلۡنَا عَلَیۡکَ الۡکِتٰبَ تِبۡیَانًا لِّکُلِّ شَیۡءٍ

(अल् नहल : 90)

अर्थात् हमने तुझ पर वह किताब उतारी जिस में प्रत्येक वस्तु का वर्णन है और पुनः कहता है - مَا فَرَّطۡنَا فِی الۡکِتٰبِ مِنۡ شَیۡءٍ (अल् ईनाम : 39)

अर्थात् हमने कोई वस्तु इस किताब से बाहर नहीं रखी परन्तु इसके साथ यह भी मेरी आस्था है कि पवित्र क़ुर्आन से समस्त धार्मिक समस्याओं का निकालना और परिणाम प्राप्त करना तथा उसके संक्षेपों के सही विवरणों पर सामर्थ्यवान ख़ुदा की इच्छानुसार प्रत्येक विवेचनकर्ता एवं मौलवी का कार्य नहीं अपितु यह विशेषतः उनका कार्य है जो ख़ुदा की वह्यी से बतौर नबुव्वत या बतौर महान विलायत की सहायता दिए गए हों। अतः ऐसे लोगों के लिए जो मुल्हम न होने के कारण क़ुर्आनी ज्ञानों से समस्याओं को छांटना और परिणाम निकालने पर समर्थ नहीं हो सकते। यह सीधा मार्ग है कि वह इरादे के बिना क़ुर्आन की समस्त शिक्षाओं से उन अध्यात्म ज्ञानों का चयन करना तथा परिणाम निकालना जो विरासत में मिली क्रियात्मक पद्धतियों के माध्यम से मिले हैं बिना विचार अविलम्ब स्वीकार कर लें तथा जो लोग महान विलायत की वह्यी के प्रकाश से प्रकाशित हैं और الا المطهرون के गिरोह में सम्मिलित हैं उनसे निःसन्देह ख़ुदा का नियम यही है कि वह समय-समय पर क़ुर्आन के गुप्त रहस्य उन पर खोलता रहता है तथा उन पर यह बात सिद्ध कर देता है कि आंहज़रतस.अ.व. ने कोई अतिरिक्त शिक्षा कदापि नहीं दी अपितु सही हदीसों में संक्षेप एवं संकेत पवित्र क़ुर्आन का विवरण है। अतः इस अध्यात्म ज्ञान के पाने से उन पर पवित्र क़ुर्आन का चमत्कार प्रकट हो जाता है तथा उन स्पष्ट आयतों की सच्चाई उन पर प्रकाशित हो जाती है जो अल्लाह तआला कहता है कि पवित्र क़ुर्आन से कोई वस्तु बाहर नहीं।

(उल-हक़ मुबाहिसा लुधियाना, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 4 पृष्ठ 80-81)

इस ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाहतआला ने क़ुरआन-ए-करीम के इलम-ओ-मार्फ़त को अता फ़रमाने के लिए भेजा है।

फिर इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि हिदायत का अव्वल ज़रीया क़ुरआन है हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

अपितु मेरा दृष्टिकोण यह है कि तीन चीज़ें हैं जिन्हें ख़ुदा ने तुम्हारे पथ-प्रदर्शन हेतु दिया है। सर्व प्रथम क़ुर्आन है जिसमें ख़ुदा का एकेश्वरवाद का सिद्धांत, प्रतिष्ठा और गरिमा का वर्णन है। जिसमें उन विवादों के सन्दर्भ में न्याय किया गया है जो यहूदी और ईसाइयों में थे। जैसा कि यह विवाद और दोष कि ईसा इब्ने मरयम के सलीब के द्वारा मारा गया और वह लानती हुआ और अन्य नबियों की भांति उसे मुक्तिनहीं मिली उसे आध्यात्मिक श्रेष्ठता प्राप्त नहीं हुई। इसी प्रकार क़ुर्आन आज्ञा नहीं देता कि ख़ुदा के अतिरिक्त अन्य किसी की उपासना की जाए, न मनुष्य की, न जानवर की, न सूर्य की न चन्द्रमा की न किसी नक्षत्र की न भौतिक साधनों की और न स्वयं की। अतः तुम सावधान रहो। ख़ुदा की शिक्षा और क़ुर्आन के पथ-प्रदर्शन के विपरीत एक पग भी न उठाओ। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि जो मनुष्य क़ुर्आन के सात सौ आदेशों में से एक छोटे से आदेश को भी टालता है वह मुक्ति द्वार को स्वयं अपने लिए बंद करता है। वास्तविक और पूर्ण मुक्ति के मार्ग क़ुर्आन ने प्रदर्शित किए, शेष सभी उसकी तुलना में छाया मात्र थे। अतः तुम क़ुर्आन का पूरी सतर्कता से अध्ययन करो और उससे अत्यधिक प्रेम करो, ऐसा प्रेम जो तुम ने किसी से न किया हो। क्योंकि जैसा ख़ुदा ने मुझे संबोधित करते हुए फ़रमाया-

اَلۡخَیۡرُ کُلُّہٗ فِی الۡقُرۡاٰنِ "अलख़ैरो कुल्लुहू फ़िलक़ुर्आन"

कि समस्त प्रकार की भलाइयां क़ुर्आन में हैं। यही बात सत्य है। खेद है उन लोगों पर जो किसी अन्य वस्तु को उस पर प्राथमिकता देते हैं। तुम्हारी सम्पूर्ण सफलता और मुक्ति का स्रोत क़ुर्आन में निहित है। तुम्हारी कोई भी धार्मिक आवश्यकता ऐसी नहीं जिसका समाधान क़ुर्आन में न हो। प्रलय के दिन तुम्हारे ईमान के सच्चे या झूठे होने की कसौटी क़ुर्आन है। आकाश के नीचे क़ुर्आन के अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं जो किसी अन्य पर निर्भर हुए बिना तुम्हारा पथ-प्रदर्शन कर सके। ख़ुदा ने तुम पर आपार कृपा की है जो क़ुर्आन जैसी पुस्तक तुम्हें प्रदान की। मैं तुम्हें सच-सच कहता हूं कि वह पुस्तक जो तुम्हारे सम्मुख पढ़ी गई यदि ईसाइयों के सम्मुख पढ़ी जाती तो वे तबाह न होते। यह उपकार और पथ-प्रदर्शन जो तुम्हें उपलब्ध किया गया यदि (तौरात) को छोड़ कर यहूदियों को उपलब्ध कराया जाता तो उनके कुछ समूह प्रलय का इन्कार न करते। अतः इस उपकार के महत्त्व को समझो जो तुम्हारे साथ किया गया। यह अति उत्तम उपकार है यह अपार संपत्ति है। यदि क़ुर्आन न आता तो समस्त संसार एक अपवित्र और तुच्छ लोथड़े की भांति था। क़ुर्आन वह पुस्तक है जिसके समक्ष सभी पथ-प्रदर्शन तुच्छ हैं। इंजील को लाने वाला रूहुलक़ुदुस (फरिश्ता) कबूतर के रूप में प्रकट हुआ था जो एक निर्बल और कमज़ोर पक्षी है जिसे बिल्ली भी दबोच सकती है। इसलिए दिन प्रतिदिन कमज़ोरी के गढ़े में गिरते गए और उनमें आध्यात्मिकता शेष न रही क्योंकि उनके ईमान का समस्त आधार कबूतर पर था। परन्तु क़ुर्आन का रूहुलक़ुदुस उस श्रेष्ठतम रूप में प्रकट हुआ था जिसने धरती से लेकर आकाश तक को अपने अस्तित्व से भर दिया था। कहां वह निर्बल कबूतर और कहां यह अद्भुत और अलौकिक प्रकाश जिस का विवरण क़ुर्आन में भी है। क़ुर्आन एक सप्ताह में मनुष्य को पवित्र कर सकता है अगर बाह्य अथवा आन्तरिक इच्छाएं नहीं, क़ुर्आन तुम को नाबियों के समान कर सकता है यदि तुम स्वयं उससे दूर न भागो। क़ुर्आन के अतिरिक्त किसी अन्य पुस्तक ने प्रारम्भ में ही अपने अध्ययन कर्ताओं को यह प्रार्थना नहीं सिखाई और न ही यह आशा दिलाई कि-

اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ

"इहदिनस्सिरातल मुस्तक़ीमा सिरातल्लज़ीना अनअमता अलैहिम"

(सूरह फ़ातिहा 6-7)

अर्थात् हमें अपनी उन नेमतों का मार्ग दिखा जो हमसे पूर्व लोगों को दिखाया गया, जो नबी, सिद्दीक़, शहीद और सालिह थे। अतः अपने साहस को दृढ़ करो और क़ुर्आन के निमन्त्रण की अवहेलना मत करो कि वह तुम्हें वे पुरस्कार देना चाहता है जो

तुम से पूर्व लोगों को दिए थे।

(कुश्ती-ए-नूह , रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 26-27)

इसी तरह क़ुरआन के बाद दूसरी हिदायत का ज़रीया आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया सुन्नते नबवी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है और तीसरा ज़रीया हदीस है क्योंकि वह बहुत अर्से के बाद, कई साल के बाद बल्कि सौ साल से ज़्यादा अर्से के बाद आएं। इस शर्त के साथ कि ये हदीसें क़ुरआन और सुन्नत के मुनाफ़ी न हूँ।

क़ुरआन-ए-करीम की इज़्ज़त-ओ-तकरीम करने की नसीहत करते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जो लोग क़ुरआन को इज़्ज़त देंगे वे आसमान पर इज़्ज़त पाएँगे।

इस की तफ़सील में आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "तुम्हारे लिए एक अनिवार्य शिक्षा यह है कि क़ुर्आन शरीफ़ को अलग-थलग न डाल दो कि उसी में तुम्हारा जीवन निहित है। जो लोग क़ुर्आन को सम्मान देंगे वे आकाश पर सम्मानित किए जाएंगे।

क़ुरआन-ए-करीम से बिल्कुल किनारा-कशी न कर लो। उस पर अमल करना बिल्कुल छोड़ न दो। यह न हो कि बिल्कुल अमल ही न करो। इस को पढ़ो, बाक़ायदगी से पढ़ो। उसकी नसाएह पर अमल करो। क्योंकि "जो लोग क़ुरआन को इज़्ज़त देंगे वे आसमान पर इज़्ज़त पाएँगे। जो लोग हर एक हदीस और हर एक क़ौल पर क़ुरआन को मुक़द्दम रखेंगे उन को आसमान पर मुक़द्दम रखा जाएगा। नौ इन्सान के लिए रोय ज़मीन पर अब कोई किताब नहीं परंतु क़ुरआन। और समस्त आदम जादों के लिए अब कोई रसूल और शफ़ी नहीं परंतु मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम। अतः तुम कोशिश करो कि सच्ची मुहब्बत इस जाह-ओ-जलाल के नबी के साथ रखो और उसके ग़ैर को इस पर किसी नौ की बड़ाई मत दो ता आसमान पर तुम निजात याफताह लिखे जाओ और याद रखो कि निजात वह चीज़ नहीं जो मरने के बाद ज़ाहिर होगी बल्कि हक़ीक़ी निजात वह है कि इसी दुनिया में अपनी रोशनी दिखलाती है।"

ईमान में ऐसी मज़बूती होती है कि इस दुनिया में इन्सान पर उसकी रोशनी ज़ाहिर हो जाती है। हर ज़ुल्मत का मुक़ाबला करने के लिए इन्सान तैयार हो जाता है। जिसकी ताज़ा मिसाल हमें पिछले दिनों हमारे बुर्कीना फासो के शहीद भाईयों में मिलती है।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "निजात याफताह कौन है? वह जो यक़ीन रखता है जो ख़ुदा सच्च है और मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इस में और समस्त मख़लूक़ में दरमयानी शफ़ी है और आसमान के नीचे न उस के हम मर्तबा कोई और रसूल है और न क़ुरआन के हमरुतबा कोई और किताब है। और किसी के लिए ख़ुदा ने न चाहा कि वह हमेशा ज़िंदा रहे मगर ये बर्गुज़ीदा नबी हमेशा के लिए ज़िंदा है।"

(कुश्ती-ए-नूह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 19 पृष्ठ 13-14)

एक और इल्ज़ाम जो है इस का भी इस में रद्द कर दिया कि हम नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तौहीन करते हैं

फिर क़ुरआन शरीफ़ के ख़ातमुल कुतुब होने के बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं और पवित्र क़ुर्आन ख़ातमुल कुतुब अब कोई और कलिम या कोई और नमाज़ नहीं हो सकती। जो कुछ आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया या करके दिखाया तथा जो कुछ पवित्र क़ुर्आन में है उसको छोड़ कर मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। जो इसको छोड़ेगा वह नर्क में जाएगा। यह हमारा मत और आस्था है, परन्तु इसके साथ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इस उम्मत के लिए वार्तालापों एवं सम्बोधनों का दरवाज़ा खुला है। और यह दरवाज़ा मानो पवित्र क़ुर्आन की सच्चाई और आहंज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई पर हर समय ताज़ा गवाही है और इसके लिए ख़ुदा तआला ने सूरह फ़ातिहा ही में यह दुआ सिखाई है-

اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ (अलफ़ातिहा 6-7)

اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ (अन्अम्ता अलैहिम) के मार्ग के लिए जो दुआ सिखाई तो उसमें अंबिया अलैहिमुस्सलाम की ख़ूबियों की प्राप्ति का संकेत है और यह स्पष्ट है कि नबियों को जो ख़ूबी दी गई वह ख़ुदा की मारिफ़त की ही ख़ूबी थी और उनको यह नेमत वार्तालापों एवं एवं सम्बोधनों से प्राप्त हुई थी इसी के तुम भी अभिलाषी हो। अतः इस नेमत के लिए यह विचार करो कि पवित्र क़ुर्आन इस दुआ का तो निर्देश करता है परन्तु उस हिदायत का प्रतिफल कुछ भी नहीं या इस उम्मत के किसी व्यक्ति को भी यह सम्मान नहीं मिल सकता तथा क़यामत तक यह दरवाज़ा बन्द हो गया है। बताओ इस से इस्लाम और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अपमान सिद्ध होगा या कोई ख़ूबी सिद्ध होगी। मैं सच-सच कहता हूं कि जो व्यक्ति यह विश्वास रखता है वह इस्लाम को बदनाम करता है और उसने शरीअत के सार को समझा ही नहीं। इस्लाम के उद्देदश्यों में से तो यह बात थी कि मनुष्य केवल जीभ ही से वहदहू ला शरीक न कहे अपितु वास्तव में समझ ले और स्वर्ग एवं नर्क पर काल्पनिक ईमान न हो अपितु वास्तव में वह इसी जीवन में स्वर्गीय अवस्थाओं पर सूचना पा ले और उन गुनाहों (पापों) से जिन में वहशी मनुष्य ग्रस्त हैं मुक्ति पा ले। यह महान उद्देश्य मनुष्य का था और है। और यह ऐसा पवित्र एवं शुद्ध उद्देश्य है कि कोई दूसरी क़ौम अपने धर्म में इसका उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकती। और न उसका नमूना दिखा सकती है। कहने को तो प्रत्येक कह सकता है परन्तु वह कौन है जो दिखा सकता हो?

(लैक्चर लुधियाना, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 285-286 ऐडीशन 2021 ई.)

अतः आज हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मानने वालों को इस मयार को हासिल करने की ज़रूरत है। दुनिया को बताने की ज़रूरत है, हम पर कुफ़्र के फ़त्वे लगाने वालों को दिखाने की ज़रूरत है कि अहमदी केवल पुराने क़िस्सों ही को वर्णन नहीं करते बल्कि आज भी ज़िंदा किताब और ज़िंदा रसूल के मानने वालों पर अल्लाह तआला के फ़ज़लों के उतरने पर यक़ीन रखते हैं। इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि अल्लाह तआला आज भी बोलता है।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "हमें अल्लाह तआला ने वे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दिया जो ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, ख़ातमुल आरेफ़ीन और ख़ातमुल अल् नबिय्यीन है और इसी तरह पर वे किताब उस पर नाज़िल की जो जामे उल कुतुब और ख़ातमुल कुतुब है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जो ख़ातमुल नबिय्यीन हैं और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर नबुव्वत ख़त्म हो गई। तो यह नबुव्वत इस तरह पर ख़त्म नहीं हुई जैसे कोई गला घोंट कर ख़त्म कर दे। ऐसा ख़त्म क़ाबल-ए-फ़ख़र नहीं होता। बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर नबुव्वत ख़त्म होने से यह मुराद है कि तिब्बी तौर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर कमालात-ए-नबुव्वत ख़त्म हो गई। अर्थात वे समस्त विभिन्न कमालात जो आदम से लेकर मसीह मरयम तक नबियों को दीए गए थे किसी को कोई और किसी को कोई वे सब के सब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में जमा कर दीए गए और इस तरह पर स्वाभाविक रूप मे आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ख़ातमन नबिय्यीन ठहरे। और ऐसा ही वे समस्त तालीमात, वसाया और मआरिफ़ जो मुख़्तलिफ़ किताबों में चले आते हैं वे क़ुरआन शरीफ़ पर आकर ख़त्म हो गए और क़ुरआन शरीफ़ ख़ातम ठहरा।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 341-342 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "ख़ातमन नबिय्यीन का शब्द जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर बोला गया है बजा-ए-ख़ुद चाहता है और बित्तबा इसी शब्द में यह रखा गया है कि वह किताब जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर नाज़िल हुई है वह भी ख़ातमुल कुतुब हो और सारे कमालात इस में मौजूद हूँ और हक़ीक़त में वे कमालात इस में हैं।

क्योंकि कलाम-ए-इलाही के नुज़ूल का आम क़ायदा और उसूल यह है कि जिस क़दर क़ुव्वत-ए-क़ुदसी और कमाल-ए-बातिनी उस शख़्स का होता है जिस पर कलाम इलाही नाज़िल होता है उसी क़दर क़ुव्वत और शौकत इस कलाम की होती है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क़ुव्वत क़ुदसी और कमाल बातिनी चूँकि आला से आला दर्जा का था जिससे बढ़कर किसी इन्सान का न कभी हुआ और न आइन्दा होगा।" ऐसा आला दर्जा का कमाल है कि न कभी हुआ न आइन्दा होगा। हम पर नऊज़ोबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) इल्ज़ाम कि हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से बड़ा समझते हैं और हम तौहीन-ए-रिसालत के मुर्तक़िब होते हैं। नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते है)। इन अलफ़ाज़ के बाद कोई अक़लमंद और इंसाफ़ पसंद यह नहीं कह सकता कि अहमदी किसी भी तरह तौहीन-ए-रसालत के मुर्तक़िब हैं। फ़रमाया "इस लिए क़ुरआन शरीफ़ भी समस्त पहली किताबों और पृष्ठों से इस आला मुक़ाम और मर्तबा पर वाक़्य हुआ है जहां तक कोई दूसरा कलाम नहीं पहुंचा क्योंकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस्तदाद और क़ुव्वत क़ुदसी सबसे बढ़ी हुई थी और समस्त मुक़ामात अकमाल आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ख़त्म हो चुके थे

और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इंतेहाई नुक़्ता पर पहुंचे हुए थे। इस मुक़ाम पर क़ुरआन शरीफ़ जो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमपर नाज़िल हुआ कमाल को पहुंचा हुआ है और जैसे नबुव्वत के कमालात आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ख़त्म हो गए इसी तरह पर एजाज़ कलाम के कमालात क़ुरआन शरीफ़ पर ख़त्म हो गए। आप ख़ातमन नबिय्यीन ठहरे और आपकी किताब ख़ातम ठहरी।"

फ़रमाया "जिस क़दर मुरातिब और वजूह एजाज़ कलाम के हो सकते हैं। इन सब के एतबार से आपकी किताब इंतेहाई नुक़्ता पर पहुंची हुई है। "जो भी मर्तबा हो, जो भी वजूहात किसी कलाम की बड़ाई के और एजाज़ के हो सकती हैं वे सब इस में मौजूद हैं

"यानी क्या बाएतबार फ़साहत-ओ-बलाग़त, क्या बाएतबार तर्तीब मज़ामीन, क्या बाएतबार तालीम, क्या बाएतबार कमालात तालीम, क्या बाएतबार समरात-ए-तालीम, ग़रज़ जिस पहलू से देखो इसी पहलू से क़ुरआन शरीफ़ का कमाल नज़र आता है और उसका एजाज़ साबित होता है और यही वजह है कि क़ुरआन शरीफ़ ने किसी ख़ास बात की नज़ीर नहीं मांगी। बल्कि आम तौर पर नज़ीर तलब की है। अर्थात जिस पहलू से चाहो मुक़ाबला करो। ख़ाह बलिहाज़ फ़साहत ओबलाग़त ।"ख़ास पहलू को नहीं मांगा। किसी तरह आओ क़ुरआन शरीफ़ से मुक़ाबला कर लो। क़ुरआन शरीफ़ में हर किस्म के मज़ामीन मौजूद हैं ।" ख़ाह बलिहाज़ फ़साहत-ओ-बलाग़त, ख़ाह बलिहाज़ मुतालिब-ओ-मक़ासिद, ख़ाह बलिहाज़ तालीम, ख़ाह बलिहाज़ पेशगोइयों और ग़ैब के जो क़ुरआन शरीफ़ में मौजूद हैं । ग़रज़ किसी रंग में देखो, ये है।" (मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 36-37 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर एक मज्लिस में आप फ़रमाया : "यह बात हरगिज़ हरगिज़ भूल जाने के काबिल नहीं है कि क़ुरआन शरीफ़ जो ख़ातमुल कुतुब है दरअसल क़िस्सों का मजमूआ नहीं है। जिन लोगों ने अपनी ग़लतफ़हमी और हक़ पोशी की बिना पर क़ुरआन शरीफ़ को क़िस्सों का मजमूआ कहा है उन्होंने हक़ायक़ शनास फ़ितरत से हिस्सा नहीं पाया। अन्यथा इस पाक किताब ने तो पहले क़िस्सों को भी एक फ़लसफ़ा बना दिया है "जो क़िस्से वर्णन हुए हैं वे भी इस तरह वर्णन किए हैं कि वह एक फ़लसफ़ा है। उनमें एक सबक़ है। एक गहराई है। फ़रमाया : "और यह उस का एहसान-ए-अज़ीम है सारी किताबों और नबियों पर कि इन क़िस्सों को भी उसने फ़लसफ़ा बना दिया "वर्ना आज इन बातों पर हंसी की जाती और यह भी अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि इस इलमी ज़माना में जबकि मौजूदात-ए-आलम के हक़ायक़ और ख़वायसुल अश्या के उलूम तरक़्क़ी कर रहे हैं उसने आसमानी उलूम और कश्फ़-ए-हक़ायक़ के लिए एक सिलसिला को क़ायम हैअलैहिस्सलाम

बड़े बड़े उलूम के माहेरीन पैदा हो रहे हैं, मुख़्तलिफ़ किस्म की साईंस के मज़ामीन हैं। दूसरे मज़ामीन हैं। दुनिया तरक़्क़ी कर रही है। मज़ीद तहक़ीक़ें हो रही हैं। इस के लिए सिलसिला क़ायम कर दिया और इस सिलसिला में फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस की तफ़सीर क़ुरआन-ए-करीम के इलम से ही इलम हासिल कर के, उसकी तालीम से ही इलम हासिल कर के वर्णन फ़रमाई है कि किस तरह साईंस और मज़हब में एक यकजाई है। फ़रमाया "जिसने इन समस्त बातों को जो फ़ैज-ए-आवज के ज़माना में एक मामूली क़िस्सों से बढ़कर स्थान न रखती थीं और इस साईंस के ज़माना में उन पर हंसी हो रही थी। "फ़रमाया कि" इलमी पैराया में एक फ़लसफ़ा की सूरत में पेश किया। "जो अंधेरा ज़माना था, एक जहालत का ज़माना था। इस्लाम में इक्का दुक्का उल्मा नज़र आते थे। उस वक़्त की ये बातें फैली हुई हैं। लोग हंसते थे, साईंसदान हंसते थे कि यह क्या है? लेकिन आप अलैहिस्सलाम को भेज कर और उसकी तफ़सीर जो आप अलैहिस्सलाम ने वर्णन की, जो तशरीह वर्णन फ़रमाई और जिस तरह उस का इर्फ़ान वर्णन फरमाया

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 153 ऐडीशन 1984 ई.)

मुस्लमानों को तो अल्लाह तआला का शुक्र अदा करना चाहिए कि उसने इस ज़माने में अपने वादे के मुताबिक़ क़ुरआन-ए-करीम की हक़ीक़ी तालीम को वर्णन करने के लिए अपने फ़िरिस्ता दे को भेजा जिसने इस्लाम की तालीम के ऊपर जो जहालत के इल्ज़ामात थे उन सबको दूर कर दिया।

फिर क़ुरआन-ए-करीम पर ईमान और इस की पैरवी को आप अलैहिस्सलाम किस क़दर ज़रूरी ख़्याल फ़रमाते थे और इस को ईमान का हिस्सा यक़ीन रखते थे उसकी तफ़सील वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "मैं क़ुरआन-ए-करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पैरवी से ज़रा इधर उधर होना बेईमानी समझता हूँ। मेरा अक़ीदा यही है कि जो इस को ज़रा भी छोड़ेगा वह जहन्नमी है।" फ़रमाया कि मैंने "फिर उस अक़ीदा को न केवल तक़रीरों में बल्कि साठ के क़रीब अपनी तसनीफ़ात में बड़ी वज़ाहत से वर्णन किया है और दिन रात मुझे यही फ़िक्र और ख़्याल रहता है।"

(लैक्चर लुधियाना, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 259)

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि हमारे मुख़ालेफ़ीन झट कुफ़्र का फ़तवा हम पर लगा देते हैं। अगर हमारी तरफ़ से कोई बात सुनते हैं तो इन्साफ़ का तक़ाज़ा तो यह था कि अल्लाह तआला का ख़ौफ़ रखते हुए हमसे पूछते कि यह बात तुमने की है या नहीं की और अगर की है तो यह तो इस्लाम के मुताबिक़ नहीं है उसकी वज़ाहत करो। लेकिन नहीं। फ़रमाया कि उनको ज़रा भी परवाह नहीं है। केवल कुफ़्र के फ़त्वे लगाने पर तुले हुए हैं।

(उद्धारित लैक्चर लुधियाना, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 259)

अतः हमने तो जो वर्णन किया इस्लाम की और क़ुरआन की तालीम की रोशनी में किया है और यही हमारा अक़ीदा है और इसी के मुताबिक़ हम अमल करते हैं।

क़ुरआन शरीफ़ और क़ानून-ए-क़ुदरत की हम-आहंगी को वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :"

पवित्र और पूर्ण शिक्षा पवित्र क़ुर्आन की है जो मानव रूपी वृक्ष की प्रत्येक शाखा का पालन-पोषण करती है और पवित्र क़ुर्आन केवल एक पहलू पर बल नहीं देता अपितु कभी क्षमा और शील की शिक्षा देता है परन्तु इस शर्त पर कि क्षमा करने में सुधार निहित हो और कभी समय और अवसर के अनुकूल अपराधी को दण्ड देने का आदेश देता है। अतः पवित्र क़ुर्आन वास्तव में ख़ुदा तआला के उस प्रकृति के नियम का चित्र है जो हमेशा हमारी आँखों के सामने है। यह बात अत्यंत बुद्धिसंगत है कि ख़ुदा तआला का कथन और कर्म दोनों अनुकूल होने चाहिएँ अर्थात जिस रंग और ढंग पर संसार में ख़ुदा तआला का कार्य दिखाई देता है आवश्यक है कि ख़ुदा तआला की सच्ची किताब उसी के अनुसार शिक्षा दे, न यह कि कर्म से कुछ और दिखाई दे और कथन से कुछ और। ख़ुदा तआला के कर्म में हम देखते हैं कि हमेशा नर्मी और क्षमा नहीं अपितु वह अपराधियों को तरह-तरह की यातनाओं से दण्डित भी करता है। ऐसी यातनाओं का वर्णन पहली किताबों में भी मिलता है। हमारा ख़ुदा केवल नर्मी करने वाला ख़ुदा नहीं अपितु वह नीतिवान भी है और उसका प्रकोप भी बड़ा कठोर है। सच्ची किताब वह किताब है जो उसकी प्रकृति के नियम के अनुकूल है और उसका सच्चा कथन वह है जो उसके कर्म का विरोधी नहीं। हमने कभी नहीं देखा कि ख़ुदा ने अपनी सृष्टि के साथ हमेशा नर्मी और क्षमा का बर्ताव किया हो और कोई प्रकोप न आया हो। अब भी अपवित्र स्वभाव रखने वाले लोगों के लिए ख़ुदा तआला ने मेरे द्वारा एक बहुत भयंकर और भीषण भूकम्प की सूचना दे रखी है जो उनका विनाश करेगी।

(चशमा मसीही, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 346-347)

यह उस वक़्त था जब ज़लज़ले की आप अलैहिस्सलाम ने भविष्यवाणी फ़रमाई थी

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "संसार में एक क़ुर्आन ही है जिसने ख़ुदा के अस्तित्व और उसकी विशेषताओं को ख़ुदा के उस प्रकृति के नियम के अनुकूल प्रकट किया है जो ख़ुदा तआला के कर्म से संसार में पाया जाता है और जो मानव स्वभाव उसकी अन्तरात्मा में विद्यमान है। ईसाई साहिबों का ख़ुदा केवल इंजील के पन्नों में क़ैद है और जिस तक इंजील नहीं पहुँची वह उस ख़ुदा से अपरिचित है परन्तु जिस ख़ुदा को क़ुर्आन प्रस्तुत करता है उससे कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति बेख़बर नहीं। अतः सच्चा ख़ुदा वही ख़ुदा है जिसे क़ुर्आन ने प्रस्तुत किया है, जिसकी गवाही मानव-स्वभाव और प्रकृति का नियम दे रहा है।" ईसाइयों की तरह नहीं है।

(चशमा मसीही, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 350 हाशिया)

फ़रमाते हैं : " सच्चा धर्म वही है जो इस युग में भी ख़ुदा का सुनना और बोलना दोनों सिद्ध करता है। अतः सच्चे धर्म में ख़ुदा तआला अपनी वाणी से अपने विद्यमान होने की स्वयं सूचना देता है। ख़ुदा को पहचानना एक अत्याधिक कठिन कार्य है। संसार के विद्वानों और दार्शनिकों का कार्य नहीं है कि ख़ुदा का पता लगाएँ क्योंकि धरती और आकाश को देखकर केवल यह सिद्ध होता है कि इस सुदृढ़ और मज़बूत व्यवस्था का कोई व्यवस्थापक होना चाहिए परन्तु यह सिद्ध नहीं होता कि वास्तव में वह व्यवस्थापक मौजूद भी है। और "होना चाहिए" तथा "है" में जो अन्तर है वह स्पष्ट है। अतः इस अस्तित्व का निश्चित तौर पर पता देने वाला केवल पवित्र क़ुर्आन है जो न केवल ख़ुदा को पहचानने का आदेश देता है अपितु स्वयं दिखा देता है। आकाश के नीचे कोई भी किताब ऐसी नहीं है जो इस गुप्त अस्तित्व का पता दे।"

(चशमा मसीही, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 पृष्ठ 352)

अल्लाह तआला के वजूद के बारे में क़ुरआन शरीफ़ में सबूत मौजूद हैं :

क़ुरआन-ए-करीम की इंजील और दूसरी मज़हबी कुतुब पर बरतरी साबित करते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "क़ुरआन शरीफ़ एक कामिल और ज़िंदा एजाज़ है और कलाम का मोजिज़ा ऐसा मोजिज़ा होता है कि कभी और किसी ज़माना में वह पुराना नहीं हो सकता और न फ़ना का हाथ इस पर चल सकता है। हज़रत-ए-मूसा अलैहिस्सलाम के मोजज़ात का अगर आज निशान देखना चाहें तो कहाँ है? क्या यहूदियों के पास वह सोटा है और इस में कोई क़ुदरत उस वक़्त भी साँप बनने की मौजूद है इत्यादि इत्यादि। उद्देश्य जिस क़दर मोजज़ात समस्त नबियों से सादर हुए उनके साथ ही इन मोजज़ात का भी ख़ातमा हो गया। मगर हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मोजज़ात ऐसे हैं कि वे हर ज़माना में और हर वक़त ताज़ा बताज़ा और ज़िंदा मौजूद हैं। इन मोजज़ात का ज़िंदा होना और उन पर मौत का हाथ न चलना साफ़ तौर पर इस अमर की शहादत दे रहा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ही ज़िंदा नबी हैं। और हक़ीक़ी ज़िंदगी यही है जो आप अलैहिस्सलाम को अता हुई है और किसी दूसरे को नहीं मिली। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तालीम इस लिए ज़िंदा तालीम है कि इस के समरात और बरकात उस वक़्त भी वैसे ही मौजूद हैं जो आज से तेराह सौ साल पेशतर मौजूद थे। दूसरी कोई तालीम हमारे सामने इस वक़्त ऐसी नहीं है जिस पर अमल करने वाला यह दावा कर सके कि उसके समरात और बरकात और फ़्यूज़ से मुझे दिया गया है और में एक अल्लाह का निशान हो गया हूँ। लेकिन हम ख़ुदा तआला के फ़ज़ल-ओ-करम से क़ुरआन शरीफ़ की तालीम के समरात और बरकात का नमूना अब भी मौजूद पाते हैं और उन समस्त आसार और फ़्यूज़ को जो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्ची इत्तेबा से मिलते हैं अब भी पाते हैं।

इसलिए ख़ुदा तआला ने इस सिलसिला को इस लिए क़ायम किया है ता वह इस्लाम की सच्चाई पर ज़िंदा गवाह हो और साबित करे कि वे बरकात और आसार उस वक़्त भी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के कामिल इत्तेबा से ज़ाहिर होते हैं जो तेराह सौ बरस पहले ज़ाहिर होते थे।

इसलिए सदहा निशान उस वक़्त तक ज़ाहिर हो चुके हैं और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी बाअज़ कुतुब में यह निशानात ज़ाहिर भी फ़रमाए हैं, लिख कर वर्णन फ़रमाए हैं और जमात पर चढ़ने वाला हर दिन भी इस बात की गवाही दे रहा है कि यह जो पीशगोईयां आप अलैहिस्सलाम ने फरमाईं वे किस तरह पूरी हो रही हैं।

बहरहाल हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम आगे फ़रमाते हैं : "हर क़ौम और हर मज़हब के सर गिरोहों को हमने दावत की है कि वह हमारे मुक़ाबला में आकर अपनी सदाक़त का निशान दिखाएंगे। परंतु एक भी ऐसा नहीं कि जिनसे अपने मज़हब की सच्चाई का कोई नमूना अमली तौर दिखाए।

हम ख़ुदा तआला के कलाम को कामिल एजाज़ मानते हैं और हमारा यक़ीन और दावा है कि कोई दूसरी किताब उसके मुक़ाबिल नहीं है

मैं अपने अनुभव से कहता हूँ कि क़ुरआन शरीफ़ का कोई अमर पेश करें। वह अपनी जगह पर एक निशान और मोजिज़ा है

मसलन तालीम ही को देखें तो वह अज़ीमुश्शान मोजिज़ा नज़र आती है और वास्तव मे मोजिज़ा है। ऐसे हकीमाना निज़ाम और फ़िल्ली तक़ाज़ों के मुवाफ़िक़ वाक़्य हुई है कि दूसरी तालीम उस के साथ हरगिज़ हरगिज़ मुक़ाबला नहीं कर सकती। क़ुरआन शरीफ़ की तालीम पहली सारी तालीमों की मुतम्मिम और मुकम्मल है। इस वक़्त केवल एक पहलू तालीम का दिखा कर मैं साबित करता हूँ कि क़ुरआन शरीफ़ की तालीम-ए-आला दर्जा पर वाक़्य हुई है और मोजिज़ा है। मसलन तौरेत कि तालीम "फ़रमाया कि"(हालात-ए-मौजूदा के लिहाज़ से कहो या ज़रूरीयात वक़्त के मुवाफ़िक़)" जो तौरेत की तालीम है इस "का सारा ज़ोर क़िसास और बदला पर है। जैसे आँख के बदले आँख और दाँत के बदला दाँत और इसके बिल्मुक़ाबिल इंजील की तालीम" है जिसका सारा ज़ोर क्षमा, सब्र और दरगुज़र पर था और यहां तक इस में ताकीद की कि अगर कोई एक गाल पर तमांचा मारे तो दूसरा भी उसकी तरफ़ फेर दो। कोई एक कोस व्यर्थ मे ले जाए तो दो कोस चले जाओ। कुर्ता मांगे तो चोगा भी दे दो। इसी तरह पर हर बाब में तौरेत और इंजील की तालीम में यह बात नज़र आएगी कि तौरेत इफ़रात का पहलू लेती है और इंजील तफ़रीत का। परंतु क़ुरआन शरीफ़ हर अवसर और महल पर हिक्मत और वस्त की तालीम देता है। जहां देखो, जिस बारे में क़ुरआन की तालीम पर निगाह करो तो मालूम होगा कि वह महल और अवसर का सबक़ देता है। जबकि हम तस्लीम करते हैं कि नफ़्स-ए-तालीम सब का एक ही है। लेकिन इस में किसी को इंकार की गुंजाइश नहीं है कि तौरेत और इंजील में से हर एक किताब ने एक एक पहलू पर-ज़ोर दिया है परंतु फ़ित्रत-ए-इन्सानी के तक़ाज़े के मुवाफ़िक़ केवल क़ुरआन शरीफ़ ने तालीम दी है। यह कहना कि तौरेत की तालीम इफ़रात के मुक़ाम पर है। इस लिए वह ख़ुदा की तरफ़ से नहीं यह सही है । "यह भी ग़लत है कि हम कहें कि यह तालीम ख़ुदा की तरफ़ से नहीं है। वह तालीम तौरेत की भी ख़ुदा की तरफ़ से है।"असल बात यह है कि इस वक़्त की जरूरतों के लिहाज़ से ऐसी तालीम बेकार थी और चूँकि तौरेत या इंजील का क़ानून सीमित समय की तरह थीं।' अर्थात जो balanced तालीम थी अब मिली है वह उस वक़्त बेकार थी। इस ज़माने में ज़रूरत थी इस तालीम की जो तौरेत में दी गई। और चूँकि तौरेत या इंजील क़ानून सीमित समय की तरह थीं। जो इंजील और तौरेत की तालीम है वह इस जगह के लिए थीं, वहीं के लिए मख़सूस थीं "इस लिए इन तालीमों में दूसरे पहलूओं को मलहूज़ नहीं रखा गया। लेकिन क़ुरआन शरीफ़ चूँकि समस्त दुनिया और समस्त नौ इन्सान के वास्ते था इस लिए इस तालीम को ऐसे मुक़ाम पर रखा जो फ़ित्रत-ए-इन्सानी के सही तक़ाज़ों के मुवाफ़िक़ थी और यही हिक्मत है क्योंकि हिक्मत के अर्थ हैं وَضْعُ الشَّیْءِ فِیْ مَحَلِّہٖ अर्थात किसी चीज़ को उसके अपने महल पर रखना। अतः यह हिक्मत क़ुरआन शरीफ़ ने ही सिखाई है।

तौरेत जैसा कि वर्णन किया है एक बेजा सख़्ती पर-ज़ोर दे रही थी और इंतेक़ामी क़ुव्वत को बढ़ाती थी और इंजील बिलमुक़ाबिल बेहूदा क्षमा पर-ज़ोर मारती थी। क़ुरआन शरीफ़ ने इन दोनों को छोड़कर हक़ीक़ी तालीम दी। جَزٰٓؤُا سَیِّئَۃٍ سَیِّئَۃٌ مِّثْلُھَا فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُہٗ عَلَی اللّٰہِ (अल् शूरा : 41) अर्थात बदी की जज़ा उसी क़दर बदी है लेकिन जो शख़्स माफ़ कर दे और इस माफ़ करने में इस्लाह मक़सूद हो। इस का अज्र उसके रब के पास है।"

(मल्फ़ूज़ात, भाग 3 पृष्ठ 37 से 40 ऐडीशन 1984 ई.)

यह जुर्रत और निशानात के साथ आप क़ुरआन-ए-करीम का समस्त अदयान पर बरतरी साबित करना उस वक़्त था जब इस मुल्क में अंग्रेज़ों की हुकूमत थी। चर्च का ज़ोर था। फिर भी आप क़ुरआन-ए-करीम की बरतरी का खुला खुला चैलेंज दिया और किसी ख़ौफ़ को क़रीब भी न आने दिया क्योंकि आप अलैहिस्सलाम खुदा तआला के वे फ़िरिस्ता दे थे जिसे अल्लाह तआला ने इस ज़माने में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ग़ुलामी में भेजा है और इस मक़सद के लिए भेजा था कि वह तालीम को फैलाएं।

और यही चीज़ हम आप अलैहिस्सलाम के लिटरेचर में और तालीम में देखते हैं और इसी चीज़ को आज हम जमाअत अहमदिया भी आगे फैला रही है और जमात अहमदिया पर इल्ज़ाम लगाने वाले ये कहते हैं कि अहमदी क़ुरआन-ए-करीम की तहरीफ़ और तौहीन के मुर्तक़िब हो रहे हैं ।

क़ुरआन-ए-करीम की ज़रूरत और एहमीयत वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम हैं : "क़ुरआन शरीफ़ के वजूद की ज़रूरत पर एक और बड़ी दलील यह है कि पहली समस्त किताबें मूसा की किताब तौरेत से इंजील तक एक ख़ास क़ौम अर्थात बनीइसराईल को अपना सम्बोधन ठहराती हैं और साफ़ और सरीह लफ़्ज़ों में कहती हैं कि उनकी हिदायतें आम फ़ायदा के लिए नहीं बल्कि सिर्फ़ बनीइसराईल के वजूद तक महिदूद हैं। मगर क़ुरआन शरीफ़ का मद्द-ए-नज़र समस्त दुनिया की इस्लाह है और इस का सम्बोधन कोई ख़ास क़ौम नहीं बल्कि खुले खुले तौर पर वर्णन फ़रमाता है कि वह समस्त इन्सानों के लिए नाज़िल हुआ है और हर एक की इस्लाह उस का मक़सूद है

सो बलिहाज़ मुख़ातेबीन के तौरेत की तालीम और क़ुरआन की तालीम में बड़ा फ़र्क़ है। मसलन तौरेत कहती है कि ख़ून मत कर और क़ुरआन भी कहता है कि ख़ून मत कर और बज़ाहिर क़ुरआन में इसी हुक्म का इआदा मालूम होता है जो तौरेत में आ चुका है। मगर दरअसल इआदा नहीं बल्कि तौरेत का ये हुक्म सिर्फ़ बनीइसराईल से ताल्लुक़ रखता है और केवल बनीइसराईल को ख़ून से मना फ़रमाता है दूसरे से तौरेत को कुछ ग़रज़ नहीं। लेकिन क़ुरआन शरीफ़ का यह हुक्म समस्त दुनिया से ताल्लुक़ रखता है और समस्त नौ इन्सान को नाहक़ की ख़ूँरेज़ी से मना फ़रमाता है। इसी तरह समस्त अहकाम में क़ुरआन शरीफ़ की असल ग़रज़ लोगों की इस्लाह है और तौरेत की ग़रज़ सिर्फ़ बनी इसराईल तक महिदूद है।"

(किताबुल ब्रियः, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 13 पृष्ठ 85)

फिर फ़रमाया : "ये दावा पादरियों का सरासर ग़लत है कि "क़ुरआन तौहीद और अहकाम में नई चीज़ कौन सी लाया जो तौरेत में नहीं थी।" बज़ाहिर एक नादान तौरेत को देखकर धोखा में पड़ेगा कि तौरेत में तौहीद भी मौजूद है और अहकाम इबादत और हुक़ूकुल इबाद का भी वर्णन है। फिर कौन सी नई चीज़ है जो क़ुरआन के ज़रीया से वर्णन की गई। परंतु यह धोखा उसी को लगेगा जिसने कलाम इलाही में कभी तदब्बुर नहीं किया। वाज़िह हो कि अल्लाह तआला का बहुत सा हिस्सा ऐसा है कि तौरेत में इस का नाम-ओ-निशान नहीं। इसलिए तौरेत में तौहीद के बारीक मुरातिब का कहीं ज़िक्र नहीं। क़ुरआन हम पर ज़ाहिर फ़रमाता है कि तौहीद केवल इस बात का नाम नहीं कि हम बुतों और इन्सानों और हैवानों और अनासिर और अजराम-ए-फल्की और शयातीन की प्रसतिश से बाज़ रहें बल्कि तौहीद तीन दर्जा पर मुनक़सिम है दर्जा अव्वल लोगों के लिए अर्थात उन के लिए जो ख़ुदा तआला के ग़ज़ब से नजात पाना चाहते हैं। दूसरा दर्जा ख़वास के लिए अर्थात उन के लिए जो अवाम की निसबत ज़्यादा-तर क़ुरब इलाही के साथ ख़ुसूसीयत पैदा करनी चाहते हैं । और तीसरा दर्जा ख़वासुल ख़वास के लिए जो क़ुरब के कमाल तक पहुंचना चाहते हैं। अव्वल मर्तबा तौहीद का तो यही है कि ग़ैर अल्लाह की प्रसतिश न की जाए और हर एक चीज़ जो महिदूद और मख़लूक़ मालूम होती है ख़ाह ज़मीन पर है ख़ाह आसमान पर उसकी प्रसतिश से किनारा किया जाए। दूसरा मर्तबा तौहीद का यह है कि अपने और दूसरों के समस्त कारोबार में मिस्र-ए-हक़ीक़ी ख़ुदा तआला को समझा जाए और अस्बाब पर इतना ज़ोर न दिया जाए जिससे वह ख़ुदा तआला के शरीक ठहर जाएं। उदाहरणतः यह कहना कि ज़ैद न होता तो मेरा यह नुक़्सान होता और बकर न होता तो मैं तबाह जाता।" लोगों पर यह इन्हिसार भी शिर्क है। यह तौहीद के ख़िलाफ़ है।" अगर यह कलिमात इस नीयत से कहे जाएं कि जिससे हक़ीक़ी तौर पर ज़ैद-ओ-बकर को कुछ चीज़ समझा जाए तो यह भी शिर्क है। तीसरी किसम तौहीद की यह है कि ख़ुदा तआला की मुहब्बत में अपने नफ़्स के अग़राज़ को भी दरमयान से उठाना और अपने वजूद को इस की अज़मत में महव करना। यह तौहीद तौरेत में कहाँ है। ऐसा ही तौरेत में बहिश्त और दोज़ख़ का कुछ वर्णन नहीं पाया जाता और शायद कहीं कहीं इशारात हों। ऐसा ही तौरेत में ख़ुदा तआला की सिफ़ात कामला का कहीं पूरे तौर पर वर्णन नहीं। अगर तौरेत में कोई ऐसी सूरत होती जैसा कि क़ुरआन शरीफ़ में قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۔ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۔ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ ۔ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۔ (अल् इखलास : 2 से 5) है तो शायद ईसाई उस मख़लूक़ परस्ती की बला से रुक जाते। ऐसा ही तौरेत ने हुक़ूक़ के मदारिज को पूरे तौर पर वर्णन नहीं किया। लेकिन क़ुरआन ने इस तालीम को भी कमाल तक पहुंचाया है। उदाहरणतः वह फ़रमाता है اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآئِ ذِي الْقُرْبٰى (अल् नहल : 91) अर्थात ख़ुदा हुक्म करता है कि तुम अदल करो और इस से बढ़कर यह कि तुम एहसान करो और इस से बढ़कर यह कि तुम लोगों की ऐसे तौर से ख़िदमत करो कि जैसे कोई क़राबत के जोश से ख़िदमत करता है। अर्थात बनीनौ से तुम्हारी हमदर्दी जोश तिब्बी से हो कोई इरादा एहसान रखने का न हो जैसा कि माँ अपने बच्चा से हमदर्दी रखती है। ऐसा ही तौरेत में ख़ुदा की हस्ती और इस की वाहिद अनियत और इस की सिफ़ात कामला को दलायल अक़लीया से साबित कर के नहीं दिखलाया। लेकिन क़ुरआन शरीफ़ ने इन समस्त अक़ायद और नीज़ ज़रूरत-ए-इलहाम और नबुव्वत को दलायल अक़लीया से साबित किया है और हर एक बेहस को फ़लसफ़ा के रंग में वर्णन करके हक़ के तालिबों पर इस का समझना आसान कर दिया है और यह समस्त दलायल ऐसे कमाल से क़ुरआन शरीफ़ में पाए जाते हैं कि किसी की मक़दूर में नहीं कि उदाहरणतः हस्ती बारी पर कोई ऐसी दलील पैदा कर सके कि जो क़ुरआन शरीफ़ में मौजूद न हो।

अतिरिक्त इसके क़ुरआन शरीफ़ के वजूद की ज़रूरत पर एक और बड़ी दलील यह है कि पहली समस्त किताबें मूसा की किताब तौरेत से इंजील तक एक ख़ास क़ौम अर्थात बनीइसराईल को अपना सम्बोधन ठहराती हैं और साफ़ और सरीह लफ़्ज़ों में कहती हैं कि उनकी हिदायतें आम फ़ायदा के लिए नहीं बल्कि सिर्फ़ बनीइसराईल के वजूद तक महिदूद हैं। मगर क़ुरआन शरीफ़ का मद्द-ए-नज़र समस्त दुनिया की इस्लाह है और उसकी सम्बोधन कोई ख़ास क़ौम नहीं बल्कि खुले खुले तौर पर वर्णन फ़रमाता है कि वह समस्त इन्सानों के लिए नाज़िल हुआ है और हर एक की इस्लाह उसका मक़सूद है।" (किताबुल बरिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 13 पृष्ठ 83-85)

क़ुरआन-ए-करीम के फ़ज़ायल , मुक़ाम-ओ-मर्तबा और बरतरी पर और भी मुख़्तलिफ़ हवाले हैं जो इन शा अल्लाह आइन्दा कभी वर्णन होंगे।

पृष्ठ 24 का शेष

आजिज़ रहेंगी।" फ़रमाया "इसलिए हम देखते हैं कि क़दीम से ख़ुदा तआला का यह वादा पूरा होता चला आता है और इस ज़माना में हम ख़ुद उस के शाहिद और देखने वाले हैं।"

काश कुछ मुस्लमान भी इस को समझें और हमें भी इस का सही इदराक हासिल हो कि इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को निशानात के साथ भेजा है और उन निशानात का सिलसिला आज तक जारी है। और जो भी अल्लाह तआला के कलाम की सही तरह पैरवी करे अल्लाह तआला उस को भी कुछ न कुछ उस का मज़ा चखाता रहता है।

फिर फ़रमाया "यह तो हमने क़ुरआन शरीफ़ की इस ज़बरदस्त ताक़त का वर्णन कि है जो अपने पैरवी करने वालों पर-असर डालती है लेकिन वे दूसरे मोजज़ात से भी भरा हुआ है। उसने इस्लाम की तरक़्क़ी और शौकत और फ़तह की उस वक़्त ख़बर दी थी जब कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का के जंगलों में अकेले फिरा करते थे और उनके साथ बजुज़ चंद ग़रीब और कमज़ोर मुस्लमानों के और कोई न था और जब केसर-ए-रुम ईरानियों की लड़ाई से मग़लूब हो गया और ईरान के किसरा ने इस के मुल्क का एक बड़ा हिस्सा दबा लिया तब भी क़ुरआन शरीफ़ ने बतौर पेशगोई के यह ख़बर दी कि नौ बरस के अंदर फिर क़ैसर रुम फ़तह-याब हो जाएगा और ईरान को शिकस्त देगा। इसलिए ऐसा ही ज़हूर में आया। ऐसा ही चंद्रमा और सूर्य ग्रहण का आलीशान मोजिज़ा जो ख़ुदाई हाथ को दिखला रहा है। क़ुरआन शरीफ़ में वर्णित है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उंगली के इशारा से चांद दो टुकड़े हो गया और कुफ़्फ़ार ने इस मोजिज़ा को देखा।"

(चशमा-ए-मार्फ़त, ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 409 से 411)

ये सब तफ़सील आप की किताब चशमा मार्फ़त में मौजूद है। मुख़्तसर मैंने वर्णन कि हैं

शेष आगे ..

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार

“अख़बार बदर” 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्याम्त्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी खुदा पर विश्वास और दुआ की स्वीकृत की दृष्टि से

(मुनीर अहमद ख़ादिम, नाज़िर इस्लाह व इरशाद दक्षिण भारत)

भाषण जलसा सालाना कादियान 2022 ई.

काबिल-ए-एहतराम सदर -ए-इजलास और सम्मानित श्रोतागण जैसा कि आप ने सुन लिया है विनीत की तक़रीर का विषय है "हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी खुदा पर विश्वास और दुआ की स्वीकृत की दृष्टि से" है। श्रोताओं अल्लाह पर भरोसा करना और उस पर तवक्कुल करना और उसके हुज़ूर दुआ के लिए झुकना दरअसल हर दो सिफ़ात लाज़िम-ओ-लज़ूम हैं। जो अल्लाह पर भरोसा करता है वह दुनिया के अन्य भरोसों और इलाक़ों से नाता तोड़ लेता है और मुतबत्तिल कहलाता है और केवल और केवल उसके हाथ ख़ुदा की तरफ़ उठते हैं। इसलिए क़ुरआन-ए--मजीद में ऐसे खुदा पर भरोसा करने वाले और उनकी दाओं का वर्णन करते हुए अल्लाह तआला फ़रमाता है कि वह दुश्मनों के फ़िल्रों से महफ़ूज़ रहने के लिए अल्लाह पर भरोसा करते हुए यह दुआ करते हैं कि

رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيرُ

(सूरः अल् मुंतहेना : 5) हे हमारे रब तुझ पर ही हम तवक्कुल करते हैं और तेरी तरफ़ ही हम झुकते हैं और तेरी तरफ़ ही लौट कर जाना है

وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا (सूरः आराफ़ : 90) हमारा रब इलम के लिहाज़ से हर चीज़ पर हावी है अल्लाह पर ही हम तवक्कुल करते हैं। हे हमारे रब हमारे और हमारी क़ौम के दरमयान हक़ के साथ फ़ैसला कर दे।

विनीत अपनी तक़रीर का आरंभ सरवर-ए-कायनात हज़रत मुहम्मद-ए-अरबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की एक दुआ से करता है जिस से मालूम होता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम किस क़दर दुआगो और मुतवक्किल थे। फ़रमाते हैं

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम दुआ मांगा करते थे कि

हे अल्लाह मैं तेरी फ़रमांबर्दारी करता हूँ, तुझ पर ईमान लाता हूँ, तुझ पर तवक्कुल करता हूँ, तेरी तरफ़ झुकता हूँ, तेरी मदद से दुश्मन का मुक़ाबला करता हूँ। हे मेरे अल्लाह मैं तेरी इज़्ज़त की पनाह चाहता हूँ तेरे सिवा और कोई माबूद नहीं तू मुझे गुमराही से बचा तू ज़िंदा है तेरे सिवा किसी को बक़ा नहीं जिन्न और इन्स सब के लिए फ़ना निश्चित है। (मुस्लिम, किताबुल ज़िकर, बहवाला ख़ुतबात-ए-मसरूर, भाग 3, पृष्ठ : 224)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तवक्कुल और दुआ के मज़मून को समझाते हुए फ़रमाते हैं :

"जो शख़्स मुतबत्तिल होगा मुतवक्किल भी वही होगा। गोया मुतवक्किल होने के वास्ते मुतबत्तिल होना शर्त है। क्योंकि जब तक औरों के साथ ताल्लुक़ात ऐसे हैं कि उन पर भरोसा और निर्भरता करता है। उस वक़्त तक विशेषता अल्लाह पर तवक्कुल कब हो सकता है जब ख़ुदा की तरफ़ झुकता है तो वह दुनिया की तरफ़ से तोड़ता है और ख़ुदा मे पैवंद करता है और यह तब होता है जबकि कामिल तवक्कुल हो जैसे हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम कामिल मुतबत्तिल थे। वैसे ही कामिल मुतवक्किल भी थे और यही वजह है कि इतने प्रभाव वाले और क़ौम-ओ--क़बायल वाले सरदारोँ की ज़रा भी परवाह नहीं की और उनकी मुख़ालेफ़त से कुछ भी प्रभावित न हुए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में एक असीमित यक़ीन ख़ुदा तआला की ज़ात पर था। इसी लिए इस क़दर अज़ीमुश्शान बोझ को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उठा लिया और सारी दुनिया की मुख़ालफ़त की और उनकी कुछ भी हस्ती न समझी यह बड़ा नमूना है तवक्कुल का जिसकी नज़ीर दुनिया में नहीं मिलती। इस लिए कि इस में ख़ुदा को पसंद करके दुनिया को मुख़ालिफ़ बना लिया जाता है। परंतु यह हालत पैदा नहीं होती जब तक गोया ख़ुदा को न देखे। जब तक यह उम्मीद न हो कि इसके बाद दूसरा दरवाज़ा ज़रूर खुलने वाला है। जब यह उम्मीद और यक़ीन हो जाता है तो वह अज़ीज़ों को ख़ुदा की राह में दुश्मन बना लेता है, इस लिए कि वह जानता है कि ख़ुदा और दोस्त बना देगा। जायदाद खो देता है कि इस से बेहतर मिलने का यक़ीन है।

ख़ुलासा कलाम यह है कि ख़ुदा ही की रज़ा को मुक़द्दम करना तो तबत्तुल है और फिर तबत्तुल और तवक्कुल तवाम हैं। तबत्तुल का राज़ है तवक्कुल और तवक्कुल की शर्त है तबत्तुल यही हमारा मज़हब इस अमर में है। (मल्फ़ूज़ात,भाग, पृष्ठ 554 से 555)

विनीत ज़ेल में सीरतुल महदी लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो से तवक्कुल और क़बूलियत-ए-दुआ के मुताल्लिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की चंद ईमान अफ़रोज़ रवायात पेश करता है :

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का क्या बेमिसाल तवक्कुल था और किस क़दर आप अल्लाह तआला की ज़ात पर भरोसा था हज़रत चौधरी हाकिम अली साहिब नंबरदार रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि एक दफ़ा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जब हम पर कोई तकलीफ़ आती है मसलन कोई दुश्मन कभी मुक़द्दमा खड़ा कर देता है या कोई और ऐसी ही बात पेश आ जाती है तो उस वक़्त ऐसा मालूम होता है कि गोया ख़ुदा तआला हमारे घर में है। (सीरतुल महदी लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, भाग 2 हिस्सा चहारुम, रिवायत नंबर 1169)

जब भी किसी मुख़ालिफ़ से मुबाहिसा होता तो आप केवल और केवल अल्लाह तआला की ज़ात पर भरोसा करते थे और उसी से मदद के तालिब होते थे और इसके इलावा किसी की मदद लेना मुनासिब नहीं समझते थे। इसलिए हज़रत मुंशी ज़फ़र साहिब कपूरथला रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया है कि आथम के मुबाहिसा में आथम ने एक दफ़ा ऐसे सवालात किए कि हमारे बाअज़ अहबाब घबरा गए कि उनका जवाब फ़ौरन नहीं दिया जा सकता और बाअज़ अहबाब ने एक कमेटी मुक़र्रर कर के और क़ुरआन शरीफ़ और इंजील के हवाला से चाहा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इमदाद दें। हज़रत मुंशी साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि मैं ने मौलवी अब्दुल करीम साहिब को उपहास मे कहा कि क्या नबुव्वतें भी मश्वरा से हुआ करती हैं इतने में हज़रत साहिब (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) तशरीफ़ ले आए और हुज़ूर कुछ बातें करके जाने लगे तो मौलवी अब्दुल--करीम साहिब मरहूम ने खड़े हो कर अर्ज़ की कि अगर कल के जवाब के लिए मश्वरा कर लिया जाए तो कोई हर्ज नहीं इस पर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हंसते हुए फ़रमाया कि "आपकी दुआ ही काफ़ी है" और फ़ौरन तशरीफ़ ले गए। यह रिवायत उन लोगों के जवाब के लिए भी काफ़ी है कि मिर्ज़ा साहिब ने उल्मा छुपाए हुए हैं जो उनको कुतुब लिखने में मदद देते हैं

(सीरतुल महदी, रिवायत नंबर 515)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अल्लाह तआला की ज़ात पर कैसा मिसाली तवक्कुल था कि आप इसके इलावा किसी पर ज़र्रा बराबर भी भरोसा करना कुफ़्र समझते थे उसके लिए हज़रत मुंशी ज़फ़र अहमद साहिब कपूरथला रज़ियल्लाहु अन्हो की एक और रिवायत पेश करता हूँ आप फ़रमाते हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को दर्द-ए-सर का रोग था एक चिकित्सक के मुताल्लिक़ सुना गया कि वह इस में ख़ास मलिका रखता है। उसे बुलवाया गया किराया भेज कर और कहीं दूर से उसने हुज़ूर अलैहिस्सलाम को देखा और कहा कि दो दिन में आपको आराम कर दूँगा। यह सुनकर हज़रत साहिब अंदर चले गए और हज़रत मौलवी नूरुद्दीन साहिब को रुक़ा लिखा कि इस शख़्स से मैं ईलाज हरगिज़ नहीं कराना चाहता यह क्या ख़ुदाई का दावा कर रहा है इस को वापस किराया का रुपया और मज़ीद बीस पच्चीस रुपय भेज दिए कि यह देकर उसे रुख़स्त कर दो इसलिए ऐसा ही हुआ।

(सीरतुल महदी, रिवायत नंबर 1038)

अब विनीत क़बूलीयत दुआ के मुताल्लिक़ सीरतुल महदी से हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बाअज़ ईमान अफ़रोज़ रिवायात पेश करता है

मुकर्रम मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब ने मुझसे वर्णन किया कि जब सर सय्यद अहमद ख़ान साहब ने इस अक़ीदा का इज़हार किया कि दुआ महज़ एक इबादत है वर्ना इसकी वजह से ख़ुदा अपनी क़ज़ा-ओ-क़द्र को बदलता नहीं। जो बहर-ए-हाल

अपने मुक़र्ररा रस्ता पर चलती है। तो इस पर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक रिसाला "बरकातुत दुआ" तसनीफ़ करके शाय फ़रमाया और इस में दलायल के साथ साबित किया कि दुआ महिज़ इबादत ही नहीं है बल्कि उसके नतीजा में ख़ुदा अपनी क़ज़ा व कदर को बदल भी देता है क्योंकि वह क़ादिर-ए-मुत-लक़ है और अपनी तक़दीर पर भी ग़ालिब है और इस्लामी तालीम के मातहत साबित किया कि इस बारे में सर सय्यद का अक़ीदा दरुस्त नहीं है। जब यह किताब छुप कर तैयार हो गई तो आपने उस का एक नुस्ख़ा सर सय्यद को भी भिजवाया। जिस पर सर सय्यद ने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को एक ख़त लिखा, और इस ख़त में माज़रत के तरीक़ पर लिखा कि मैं इस मैदान का आदमी नहीं हूँ इस लिए मुझसे ग़लती हुई और यह कि जो कुछ आपने तहरीर किया है वही होगा।

(सीरतुल महदी, रिवायत नंबर : 830)

अब विनीत हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के क़बूलीयत दुआ के बाअज़ अज़ीमुश्शान मोजज़ात पेश करता है

श्रोताओं! हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को ईसाइयों ने चंद ऐसे वाक़ियात की बिना पर ख़ुदा बना लिया है जिसमें वह वर्णन करते हैं कि वह बीमारों को अच्छा कर देते थे। माज़ूरों को तंदरुस्त कर देते थे। अँधों को बीना कर देते थे और मुर्दों को ज़िंदगी बख़्शते थे। जबकि इस से मुराद रुहानी अँधों को बीनाई बख़्शना है और रुहानी मुर्दों में रुहानी ज़िंदगी फूंकना है लेकिन इस में कोई शक नहीं कि आपने बाअज़ ऐसे मरीज़ों को भी शिफ़ा दी जिनकी ज़ाहिरी बीनाई में ख़लल वाक़्य हो चुका था और ये ऐसे मरीज़ थे जो मृत्यु के क़रीब हो चुके थे इसी से ईसाइयों ने उनको ख़ुदा बना दिया।

ऐसी शिफ़ा और ऐसी ज़िंदगी की मिसालें बल्कि इस से बढ़कर मिसालें मसीह मुहम्मदी हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम की मुबारक ज़िंदगी में भी हमें नज़र आती हैं कि अल्लाह तआला ने आपकी दुआओं के तुफ़ैल ऐसे मरीज़ों को शिफ़ा बख़शी। जिन्हें डाक्टर साहिब ने ला-इलाज क़रार दे दिया था और मृत्यु के क़रीब थे।

हज़रत मौलवी मुहम्मद इबराहीम साहिब बक़ा पूरी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं एक दफ़ा मैंने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मेरी आँखों से पानी बहता रहता है। मेरे लिए दुआ फ़रमाएं ।आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं दुआ करूँगा और फ़रमाया आप मौलवी-साहब (हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो) से इत्रीफ़ल ज़मानी (एक यूनानी अवलेह जिसमें हड़, बहेड़ा, आँवला होता है) भी लेकर खाए। अल्हमदोलि-ल्ला कि इसके बाद आज तक विनीत को फिर कभी यह आरिज़ा न हुआ। (सीरतुल महदी, रिवायत नंबर : 817)

हज़रत मुंशी अब्दुल अज़ीज़ साहिब औजलवी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि एक शख़्स मुसममी सानों साकिन सेखवां ने मेरे साथ ही हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की थी। अब वह मक़बरा बहिश्ती में दफ़न हैं उनको मोतिया बिन्द और आखों मे पानी आने की बीमारी थी। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो को आँखें दिखाएंगे। तो उन्हों ने फ़रमाया कि पहले पानी आकर बीनाई बिल्कुल जाती रहेगी। तो फिर उनका ईलाज किया जाएगा। उनको इस से बहुत सदमा हुआ। इसके बाद उन्होंने यह तरीक़ इख़तेयार किया कि जब कभी वह कादियान आते और हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पास बैठने का मौक़ा पाते तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम की पगड़ी अपनी आँखों से लगा लेते। कुछ अरसा में ही उनकी बीमारी आँखों से पानी उतरना जाती रही और जब तक वह ज़िंदा रहे उनकी आँखें दरुस्त रहीं। किसी ईलाज इत्यादि की ज़रूरत पेश न आई। (सीरतुल महदी, रिवायत नंबर 568)

अब एक और क़बूलीयत-ए-दुआ का ईमान अफ़रोज़ वाक़िया मुलाहिज़ा फ़रमाएं

हज़रत डाक्टर सय्यद अब्दुल सत्तार शाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा मुझे तीन महीना की रुख़स्त लेकर परिवार सहित कादियान में ठहरने का संयोग हुआ। उन दिनों में ऐसा संयोग हुआ कि वालिदा वलीउल्लाह शाह के दाँत में सख़्त शिद्दत का दर्द हो गया। जिससे उनको न रात को नींद आती थी और न दिन को। डाकटरी ईलाज भी किया मगर कोई फ़ायदा न हुआ। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी दवा की मगर आराम न आया। हज़रत उम्मुल मोमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर की ख़िदमत में अर्ज़ की कि डाक्टर सय्यद अब्दुल सत्तार शाह साहिब की बीवी के दाँत में सख़्त दर्द है और आराम नहीं आता। हज़रत ने फ़रमाया कि उनको यहां बुलाऐं कि वे मुझे आकर बताएं कि उन्हें कहाँ तकलीफ़ है। इसलिए उन्होंने हाज़िर हो कर अर्ज़ की कि मुझे इस दाँत में सख़्त तकलीफ़ है। डाक्टर की और मौलवी-साहब की बहुत दवाएं इस्तिमाल की हैं मगर कोई फ़ायदा नहीं हुआ। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि आप ज़रा ठहरें। इसलिए हुज़ूर ने वुज़ू किया और फ़रमाने लगे कि मैं आप के लिए दुआ करता हूँ। आपको अल्लाह तआला आराम देगा। घबराएँ नहीं। हुज़ूर ने दो नफ़ल पढ़े और वह ख़ामोश बैठी रहीं। इतने में उन्हें महसूस हुआ कि जिस दाँत में दर्द है इस दाँत के नीचे से एक शोला किसी कदर धुएं वाला दाँत की जड़ से निकल कर आसमान की तरफ़ जा रहा है और साथ ही दर्द कम होता जाता है। इसलिए जब वह शोला आसमान तक जाकर नज़र से ग़ायब हो गया तो थोड़ी देर बाद हुज़ूर ने सलाम फेरा और वह दर्द फ़ौरन दूर हो गया। हुज़ूर ने फ़रमाया। क्यों जी! अब आपका क्या हाल है? उन्होंने अर्ज़ की। हुज़ूर की दुआ से आराम हो गया है। और उनको बड़ी ख़ुशी हुई कि ख़ुदा तआला ने उनको इस अज़ाब से बचा लिया।

(सीरतुल महदी, रिवायत नंबर : 884)

मिराक़ (एक झिल्ली का नाम जो पेट की त्वचा के नीचे होती है) की बीमारी से मोजज़ाना शिफ़ा का वाक़िया मुलाहिज़ा फ़रमाएं

हज़रत डाक्टर सय्यद अब्दुल सत्तार शाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि मेरी लड़की ज़ैनब बेगम ने मुझ से वर्णन किया कि एक दफ़ा जब हुज़ूर अलै-हिस्सलाम स्यालकोट तशरीफ़ ले गए थे तो मैं रयये से उनकी ख़िदमत में हाज़िर हुई। उन अय्याम में मुझे मिराक़ का सख़्त दौरा था। मैं शर्म के मारे आप अलैहिस्सलाम से अर्ज़ न कर सकती थी। मगर मेरा दिल चाहता था कि मेरी बीमारी के मुताल्लिक़ किसी तरह हुज़ूर अलैहिस्सलाम को इलम हो जाए ताकि मेरे लिए हुज़ूर अलैहिस्स-लाम दुआ फ़रमाएं। मैं हुज़ूर की ख़िदमत कर रही थी कि हुज़ूर ने अपने इन्किशाफ़ और सफ़ाई क़लब से ख़ुद मालूम करके फ़रमाया ज़ैनब तुम को मिराक़ की बीमारी है। हम दुआ करेंगे। तुम कुछ वरज़िश किया करो और पैदल चला करो। मगर मैं एक क़दम भी पैदल न चल सकती थी। अगर दो-चार क़दम चलती भी तो दौरा मिराक़ तुरंत बहुत तेज़ हो जाता था। मैंने अपने मकान पर जाने के लिए जो हुज़ूर के मकान से क़रीबन एक मील दूर था। टांगे की तलाश की मगर न मिला। इस लिए मजबूरन मुझ को पैदल जाना पड़ा। मुझको यह पैदल चलना सख़्त मुसीबत और हलाकत मालूम होती थी मगर ख़ुदा की क़ुदरत, जूँ-जूँ मैं पैदल चलती थी आराम मालूम होता था। यहाँ तक कि दूसरे रोज़ फिर मैं पैदल हुज़ूर की ज़यारत को आई तो दौरा मिराक़ जाता रहा और बिल्कुल आराम आ गया। सुब्हानल्लाह क्या शान है! मसीह मुहम्म-दी की

(सीरतुल महदी लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत नंबर : 917)

हज़रत मियां फ़य्याज़ अली साहिब कपूर थलवी रज़ियल्लाहु अन्हो की एक रिवायत वर्णन करता हूँ जिससे यह मालूम होता है कि यह क़बूलीयत दुआ और मोजज़ात शिफ़ायाबी हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद ख़ि-लाफ़त-ए-अहमदीयत में भी जारी व सारी है। वर्णन करते हैं कि मेरी एक लड़के को मिर्गी कि बीमारी हो गई थी। बहुत कुछ ईलाज कराया मगर हर एक जगह से मायूसी हुई। कादियान में मौलाना हकीम नूरुद्दीन साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़िय-ल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में भी मास की वालिदा के लड़के को भेजा गया मगर फ़ायदा न हुआ। और इस की वालिदा मायूस हो कर घर वापस आने लगी उस वक़्त हज़रत उम्मुल मोमनीन के मकान में उनका क़ियाम था। हज़रत उम्मुल मोमनीन ने लड़के की वालिदा से फ़रमाया ठहरो हम दुआ करेंगे। इसलिए हुज़ूर अलैहिस्सलाम क़रीबन दो घंटा बच्चे की सेहत के वास्ते सर बसजूद रहीं। आँखों से आँसू रवां थे। रात को लड़के ने ख़ाब में देखा कि चाँदनी-रात है। और मैं मिर्गी के दौरा में मुबतला हूँ। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम बैतुत दुआ की खिड़की से तशरीफ़ लाए और मुझ को देखकर दरयाफ़त किया कि तेरा क्या हाल है। मैंने अर्ज़ किया कि हुज़ूर मुलाहिज़ा फ़र्मा लें। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मेरे सिर पर हाथ फेरा और फ़रमाया कि घबराओ नहीं, आराम हो जाएगा। इस के बाद उस की वालिदा लड़के को लेकर घर वापस चली आई। फिर मैं हर मशहूर डाक्टर और तबीब से लड़के का ईलाज करवाता रहा। आख़िर क़स्बा हापुड़ ज़िला मेरठ में एक तबीब के पास गया। उसने नुस्ख़ा तजवीज़ किया और रात को अपने सामने खिलाया। उस वक़्त लड़के को निहायत सख़्ती के साथ दौरा हो गया। तबीब अपने घर के अंदर जाकर सो गया। और हम दोनों बाहर मर्दाना में सौ गए। सुबह हुई नमाज़ पढ़ी। तबीब भी घर से बाहर आया। तबीब ने कहा कि रात को मैंने एक ख़ाब देखा है। मैंने देखा कि मेरे हाथ में एक किताब दी गई। जब मैंने उस को खोला तो उस के शुरू में लिखा हुआ था। इस मर्ज़ का ईलाज इमली है। छः सात सतर के

अंदर यही लिखा हुआ था कि इस मर्ज़ का ईलाज सिवाए इमली के दुनिया में और कोई नहीं। तबीब ने कहा कि न तो मैं मर्ज़ को समझा और न ईलाज को। मैंने तुम्हें अपना ख़ाब सुना दिया है। मैंने तबीब के इस ख़ाब को हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बशारत के मुताबिक़ ख़ुदा की तरफ़ से इलहाम समझा और लड़के को लेकर घर चला आया। इमली का प्रयोग शुरू कर दिया। रात को चार तौला भिगो देता था। सुबह को छानकर दो तौला मिस्री मिला कर लड़के को पिला देता था। दो हफ़्ता के अंदर इस मर्ज़ से लड़के ने नजात पा ली। और इस वक़्त ख़ुदा के फ़ज़ल से ग्रैजूएट है और एक अच्छे ओहदा पर है।

(सीरतुल महदी लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत नंबर : 981)

हज़रत डाक्टर सय्यद अब्दुल सत्तार शाह साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि जब मैं हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करके वापस मुलाज़मत पर गया तो कुछ रोज़ अपनी बैअत को ख़ुफ़ीया रखा क्योंकि मुख़ालिफ़त का ज़ोर था और लोग मेरे मोतक़िद बहुत थे। इस वजह से कुछ कमज़ोरी सी दिखाई यहां तक कि मैंने अपने घर के लोगों से भी वर्णन न किया। लेकिन रफ़्ता-रफ़्ता यह बात ज़ाहिर हो गई और बाअज़ आदमी मुख़ालिफ़त करने लगे लेकिन कुछ नुक़्सान न कर सके। घर के लोगों ने ज़िक्र किया कि बैअत तो आपने कर ली है लेकिन आपका पहला पीर है और वह ज़िंदा मौजूद है, वह नाराज़ हो कर बददुआ करेगा। उनकी आमद-ओ-रफ़त अक्सर हमारे पास रहती थी। मैंने कहा कि मैंने अल्लाह तआला की रज़ा के लिए बैअत की है। और जिनके हाथ पर बैअत की है वह मसीह और महदी का दर्जा रखते हैं। बाक़ी कोई ख़ाह कैसा ही नेक या वली क्यों न हो। वह इस दर्जा को नहीं पहुंच सकता। और उनकी बददुआ कोई बद असर नहीं करेगी क्योंकि الاعمال بالنیات। मैंने अपने ख़ुदा तआला को ख़ुश करने के लिए यह काम किया है। अपनी नफ़सानी ग़रज़ के लिए नहीं किया। अल्-ग़र्ज़ वह मेरे मुर्शिद कुछ अरसा बाद बदस्तूर साबिक़ मेरे पास आए और उन्होंने मेरी बैअत का मालूम करके मुझ को कहा कि आपने अच्छा नहीं किया। जब मुर्शिद आपका मौजूद है तो उसको छोड़कर आपने यह काम क्यों किया? आपने उनमें क्या करामत देखी? मैंने कहा कि मैंने उनकी यह करामत देखी है कि उनकी बैअत के बाद मेरी रुहानी बिमारीयां बफ़ज़्ल-ए-ख़ुदा दूर हो गई हैं और मेरे दिल को तसल्ली हासिल हो गई है। उन्होंने कहा कि मैं भी उनकी करामत देखना चाहता हूँ कि अगर तुम्हारा लड़का वली उल्लाह उनकी दुआ से अच्छा हो जाए तो मैं समझ लूंगा कि आपने मुर्शिद-ए-कामिल की बैअत की है और उसका दावा सच्चा है। इस वक़्त मेरे लड़के वली उल्लाह की टांग बसबब ज़रब के ख़ुशक हो कर चलने के काबिल नहीं रही थी। एक लाठी बग़ल में रखता था और उसके सहारे चलता था और अक्सर दफ़ा गिर पड़ता था। इस बात पर थोड़ा अरसा गुज़रा था कि बावजूद इसके कि पहले कई डाक्टरों और सिवल सर्जनों के ईलाज किए थे लेकिन कुछ फ़ायदा न हुआ था। संयोगवंश एक नया सिवल--सर्जन स्यालकोट में आ गया जिस का नाम मेजर हीयूगो था। वह रयया में शिफ़ाख़ाना का मुआइना करने के लिए भी आया। तो मैंने उसे वलीउल्लाह शाह को दिखाया। उसने कहा कि ईलाज से अच्छा हो सकता है। परंतु तीन दफ़ा ऑप्रेशन करना पड़ेगा। इसलिए उसने एक दफ़ा स्यालकोट में ऑप्रेशन किया और दो दफ़ा शिफा-ख़ाना रयया में जहां में मुतय्यन था ऑप्रेशन किया। उधर मैंने हज़रत साहिब की ख़िदमत में दुआ के लिए भी तहरीर किया। ख़ुदा के फ़ज़ल से वह बिल्कुल सेहत याब हो गया और लाठी की ज़रूरत न रही। तब मैंने इस बुज़ुर्ग को कहा कि देखिए ख़ुदा के फ़ज़ल से हज़रत साहिब की दुआ कैसी क़बूल हुई। उसने कहा कि यह तो ईलाज से हुआ है। मैंने कहा कि ईलाज तो पहले भी था। लेकिन इस ईलाज में शिफ़ा केवल दुआ के ज़रीया से हासिल हूई है।

(सीरतुल महदी, रिवायत नंबर : 926)

ताऊन से बीमार बच्चे की शिफ़ायाबी

पत्नी साहिबा बाबू फ़ख़्रउद्दीन साहिब ने वर्णन फ़रमाया एक दफ़ा का वर्णन है कि मैं अपने वतन मियानी में थी कि मेरे लड़के इसहाक़ को जिसकी उम्र उस वक़्त दो साल की थी, ताऊन की दो गिलटियाँ निकल आईं। उन दिनों यह बीमारी बहुत फैली हुई थी। हम बहुत घबराए और हज़रत मसीह मौऊद के हुज़ूर दुआ के लिए ख़त लिखा। लड़का अच्छा हो गया तो एक माह के बाद इस को लेकर कादियान आएं और इस को हुज़ूर अलैहिस्सलाम के सामने पेश किया कि यह वही बचा है जिसको ताऊन निकली थी हुज़ूर अलैहिस्सलाम उस वक़्त लेटे हुए थे। सुनते ही उठ बैठे और फ़रमाया "इस छोटे से बचा को वह गिलटियाँ निकली थीं? "अब ख़ुदा के फ़ज़ल से वह बच्चा जवान और तंदरुस्त है।

(सीरतुल महदी, रिवायत नंबर : 1348)

प्रिय श्रोताओं अब विनीत सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की क़बूलीयत-ए-दुआ के एक ऐसे मोजज़े का ज़िक्र करता है जिसकी मिसाल आज तक दुनिया में पाई नहीं जाती कभी दुनिया ने नहीं देखा कि कोई शख़्स जिसको पागल कुत्ते ने काट लिया हो और जिस पर पागलपन का दौरा पड़ जाए वह कभी आज तक सेहत याब हुआ हो लेकिन मसीह मुहम्मदी की दुआ का यह मोजिज़ा है कि आपकी दुआ से ऐसा मरीज़ भी शिफ़ायाब हो गया।

जबकि यह रिवायत सीरतुल महदी में रिवायत नंबर 1221 के तहत हज़रत मीर अब्दुल रहमान साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो रेंज अफ़्सर बारामुल्ला कश्मीर के हवाला से भी मनक़ूल है लेकिन विनीत मुनासिब समझता है कि क़बूलीयत-ए-दुआ के इस अज़ीमुश्शान और ला मिसाल वाक़िया को हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ज़बानी वर्णन किया जाए। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"पांचवां निशान जो इन दिनों में ज़ाहिर हुआ वह एक दुआ का क़बूल होना है जो दरहक़ीक़त पुनः जीवीत होने में दाख़िल है। तफ़सील इस इजमाल की यह है कि अब्दुल करीम नाम वलद अब्दुल रहमान साकिन हैदराबाद दक्कन हमारे मुदर्रिसा में एक लड़का तालिब-ए-इल्म है, क़ज़ा व कदर से इस को पागल कुत्ते ने काट लिया। (यानी हल्काए कुत्ते ने काट लिया) हमने उसको ईलाज के लिए कसौली भेज दिया। चंद रोज़ तक उसका कसौली में ईलाज होता रहा फिर वो कादियान में वापिस आया। थोड़े दिन गुज़रने के बाद इस में वह आसार दीवानगी के ज़ाहिर हुए जो दीवाना कुत्ते के काटने के बाद ज़ाहिर हुआ करते हैं और पानी से डरने लगा और ख़ौफ़नाक हालत पैदा हो गई। तब इस ग़रीबुल वतन आजिज़ के लिए मेरा दिल सख़्त बेक़रार हुआ और दुआ के लिए एक ख़ास तवज्जा पैदा हो गई। हर एक शख़्स समझता था कि वह ग़रीब चंद घंटा के बाद मर जाएगा। नाचार उस को बोर्डिंग से बाहर निकाल कर एक अलग मकान में दूसरों से अलैहदा हर एक एहतियात से रखा गया और कसौली के अंग्रेज़ डाक्टरों की तरफ़ तार भेज दी और पूछा गया कि इस हालत में इस का कोई ईलाज भी है। इस तरफ़ से बज़रीया तार जवाब आया कि अब इसका कोई ईलाज नहीं। मगर इस ग़रीब और बेवतन लड़के के लिए मेरे दिल में बहुत तवज्जा पैदा हो गई और मेरे दोस्तों ने भी इस के लिए दुआ करने के लिए बहुत ही इसरार किया क्योंकि इस ग़ुर्बत की हालत में वो लड़का काबिल-ए-रहम था और नीज़ दिल में यह ख़ौफ़ पैदा हुआ कि अगर वह मर गया तो एक बुरे रंग में इस की मौत होगी। तब मेरा दिल उस के लिए सख़्त दर्द और बेकरारी में मुबतला हुआ और ख़ारिक़ आदत तवज्जा पैदा हुई जो अपने इख़्तेयार से पैदा नहीं होती बल्कि महिज़ ख़ुदा तआला की तरफ़ से पैदा होती है और अगर पैदा हो जाए तो ख़ुदा तआला के इज़्न से वह असर दिखाती है कि क़रीब है कि इस से मुर्दा ज़िंदा हो जाएगी। ग़रज़ उसके लिए इक़बाल इलल्लाह की हालत मयस्सर आ गई और जब वह तवज्जा इंतिहा तक पहुंच गई और दर्द ने अपना पूरा तसल्लुत मेरे दिल पर कर लिया तब इस बीमार पर जो दरहक़ीक़त मुर्दा था इस तवज्जा के आसार ज़ाहिर होने शुरू हो गए और या तो वह पानी से डरता और रोशनी से भागता था और या यकदफ़ा तबीयत ने सेहत की तरफ़ रुख किया और उसने कहा कि अब मुझे पानी से डर नहीं आता। तब उस को पानी दिया गया तो उसने बग़ैर किसी ख़ौफ़ के पी लिया बल्कि पानी से वुज़ू करके नमाज़ भी पढ़ ली। और समस्त रात सोता रहा और ख़ौफ़नाक और वहशयाना हालत जाती रही। यहां तक कि चंद रोज़ तक पूर्णतः सेहत याब हो गया। (हक़ीक़तुल वहय्यी, रुहानी खजायन भाग 22 पृष्ठ 470 से 471)(बहवाला ख़ुतबात -ए-मसरूर,भाग प्रथम, पृष्ठ 124)

प्रिय सज्जनों यह बुज़ुर्ग जिन का नाम अब्दुल करीम पुत्र अबदुर्रहमान है कर्नाटक

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 3010 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web.www.alislam.org

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

के दिहात तीमापूर के रहने वाले थे जहां अल्हम्दुलिल्ला एक मुख़लिस जमात है। उनकी वफ़ात सन में हुई थी

प्रिय सज्जनों! सय्यदना हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की क़बूलीयत दुआ के वाक़ियात इस क़दर हैं कि इस मुख़्तसर वक़्त में उनका वर्णन करना मुम्किन नहीं है। आप अलैहिस्सलाम की दुआ से बीमारों को शिफ़ा हुई ला--इलाज मरीज़ शिफ़ायाब हुए। मौत के मुँह में पहुंचे हुए फिर ज़िंदा हो गए। बे औलादों को औलाद नसीब हुई। लेकिन हुज़ूर अलैहिस्सलाम औलाद के लिए दुआ की दरख़ास्त करने वालों को फ़रमाते थे कि हज़रत ज़करिया अलैहिस्सलाम वाली तौबा करो और बच्चे को इस्लाम की ख़िदमत के लिए वक़्फ़ करो इसलिए हज़रत मुंशी अता मुहम्मद साहिब पटवारी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि जब मैं ग़ैर अहमदी था और वंजवां ज़िला गुरदासपुर में पटवारी होता था तो क़ाज़ी नेअमतुल्लाह साहिब ख़तीब बटालवी जिनके साथ मेरा मिलना-जुलना था। मुझे हज़रत साहिब के मुताल्लिक़ बहुत तब्लीग़ किया करते थे। मगर मैं परवाह नहीं करता था। एक दिन उन्होंने मुझे बहुत तंग किया। मैंने कहा अच्छा मैं तुम्हारे मिर्ज़ा को ख़त लिख कर एक बात के मुताल्लिक़ दुआ कराता हूँ अगर वह काम हो गया तो मैं समझ लूँगा कि वह सच्चे हैं। इसलिए मैंने हज़रत साहिब को ख़त लिखा कि आप मसीह मौऊद और वलीउल्लाह होने का दावा रखते हैं और वलियों की दुआएं सुनी जाती हैं। आप मेरे लिए दुआ करें कि ख़ुदा मुझे ख़ूबसूरत साहिब-ए-इक़बाल लड़का जिस बीवी से मैं चाहता हूँ अता करे। और नीचे मैंने लिख दिया कि मेरी तीन बीवीयां हैं मगर कई साल हो गए आज तक किसी के औलाद नहीं हुई। मैं चाहता हूँ कि बड़ी बीवी के बतन से लड़का हो। हज़रत साहिब की तरफ़ से मुझे मौलवी अब्दुल करीम साहिब मरहूम का लिखा हुआ ख़त गया कि मौला के हुज़ूर दुआ की गई है। अल्लाह तआला आपको फ़र्ज़ंद इक़बाल ख़ूबसूरत लड़का जिस बीवी से आप चाहते हैं अता करेगा। परंतु शर्त यह है कि आप ज़करीया वाली तौबा करें। मुंशी अता मुहम्मद साहिब वर्णन करते हैं कि मैं इन दिनों सख़्त बेदीन और शराबी कबाबी रिश्वत लेने वाला था। इसलिए मैंने जब मस्जिद में जाकर मोलवी से पूछा कि ज़करीया वाली तौबा कैसी होती है? तो लोगों ने ताज्जुब किया कि यह शैतान मस्जिद मैं किस तरह आगया है। परंतु वह मोलवी मुझे जवाब न दे सका। फिर मैंने धर्मकोट के मौलवी फ़तह दीन साहिब मरहूम अहमदी से पूछा उन्होंने कहा कि ज़करीया वाली तौबा बस यही है कि बेदीनी छोड़ दो। हलाल खाओ। नमाज़ रोज़ा के पाबंद हो जाओ और मस्जिद में ज़्यादा आया जाया करो। यह सुनकर मैंने ऐसा करना शुरू कर दिया। शराब इत्यादि छोड़ दी और रिश्वत भी बिल्कुल तर्क कर दी और नमाज़ रोज़े का पाबंद हो गया। चार पाँच माह का अरसा गुज़रा होगा कि मैं एक दिन घर गया तो अपनी बड़ी बीवी को रोते हुए पाया। सबब पूछा तो उसने कहा पहले मुझ पर यह मुसीबत थी कि मेरे औलाद नहीं होती थी आपने मेरे ऊपर दो बीवीयां कीं। अब यह मुसीबत आई है कि मेरे हैज़ आना बंद हो गया है। (गोया औलाद की कोई उम्मीद ही नहीं रही) इन दिनों में उस का भाई अमृतसर में थानादार था इसलिए उसने मुझे कहा कि मुझे मेरे भाई के पास भेज दो कि मैं कुछ ईलाज करवाऊँ। मैंने कहा वहां क्या जाओगी यहीं दाई को बुला कर दिखलाओ और इस का ईलाज करवाओ। इसलिए उसने दाई को बुलाई और कहा कि मुझे कुछ दवा इत्यादि दो। दाई ने सरसरी देखकर कहा मैं तो दवा नहीं देती न हाथ लगाती हूँ। क्यों कि मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि ख़ुदा तेरे अंदर भूल गया है (यानी तू तो बाँझ थी मगर अब तेरे पेट में बच्चा मालूम होता है। अतः ख़ुदा ने तुझे (नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं))भूल कर हमल करवा दिया है।) और उसने घर से बाहर आकर भी यही कहना शुरू किया कि ख़ुदा भूल गया है मगर मैंने उसे कहा कि ऐसा न कहो बल्कि मैंने मिर्ज़ा साहिब से दुआ करवाई थी। फिर मुंशी साहिब वर्णन करते हैं कि कुछ अरसा में हमल के पूरे आसार ज़ाहिर हो गए और मैंने इर्द-गिर्द सबको कहना शुरू किया अब देख लेना कि मेरे लड़का पैदा होगा और होगा भी ख़ूबसूरत मगर लोग बड़ा ताज्जुब करते थे और कहते थे कि अगर ऐसा हो गया तो वाक़ई बड़ी करामत है। आख़िर एक दिन रात के वक़्त लड़का पैदा हुआ और ख़ूबसूरत हुआ में उसी वक़्त धर्मकोट भागा गया। जहां मेरे कई रिश्तेदार थे और लोगों को उसकी पैदाइश की सूचना दी इसलिए कई लोग उसी वक़्त बैअत के लिए कादियान रवाना हो गए मगर बाअज़ नहीं गए और फिर उस वाक़िया पर वंजवान के भी बहुत से लोगों ने बैअत की और मैंने भी बैअत कर ली और लड़के का नाम अब्दुल हक़ रखा। मुंशी साहिब वर्णन करते हैं कि मेरी शादी को बारह साल से ज़ायद हो गए थे और कोई औलाद नहीं हुई थी। तथा मुंशी साहिब ने वर्णन किया कि मैं फिर जब कादियान आया तो इन दिनों में मस्जिद का रास्ता दीवार खींचने से बंद हुआ था। मैंने बाग़ में हज़रत साहिब को अपनी एक ख़ाब सुनाई कि मैंने देखा कि मेरे हाथ में एक ख़रबूज़ा है जिसे मैंने काट कर खाया है और वह बड़ा मीठा है। लेकिन जब मैंने इसकी एक फाड़ी अब्दुल हक़ को दी तो वह ख़ुशक हो गई। हज़रत साहिब ने ताबीर वर्णन फ़रमाई कि अब्दुल हक़ की माँ से आपके हाँ एक और लड़का होगा मगर वह फ़ौत हो जाएगा। इसलिए मुंशी साहिब कहते हैं कि एक और लड़का हुआ परंतु वह फ़ौत हो गया। विनीत अर्ज़ करता है कि मैंने अब्दुल हक़ को देखा है ख़ुश शक्ल और शरीफ़ मिज़ाज लड़का है वक़्त 1922 मे इस की उम्र कोई 20 साल की होगी।

(सीरतुल महदी , रिवायत नंबर 241)

प्रिय श्रोताओं हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की दुआओं से दीन को मज़बूती हासिल हुई और ख़ौफ़ अमन से तबदील हुआ है। कुछ गावं के गावं आपकी दुआ से अहमदी हुए हैं इस मुबारक जलसा सालाना में नासिरा बाद कश्मीर के बहुत से अहमदी बैठे हैं उनके लिए भी और हम सबके लिए भी यह रिवायत निहायत ईमानअफ़रोज है।

हज़रत ख़्वाजा अबदुर्राहमन साहिब साकिन कश्मीर वर्णन फ़रमाते हैं कि मौलवी क़ुतुबुउद्दीन साहिब साकिन शूरत कश्मीर वर्णन करते थे कि जब मैं अहमदी हुआ तो चूँकि इबटेदा में शूरत में कोई और अहमदी न था। इसलिए मेरी मुख़ालिफ़त शुरू हुई। मैंने हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में मुख़ालेफ़त की निसबत एक ख़त अरसाल किया और दुआ के लिए दरख़ास्त की। जिसका जवाब हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने यह रक़म फ़रमाया कि सब्र करो। वहां भी बहुत लोग ईमान लाएँगे। ख़्वाजा अबदुर्राहमन साहिब वर्णन करते हैं कि बाद में अगरचे शर्त वाले लोग तो अभी तक ईमान नहीं लाए लेकिन इस के बिल्कुल जुड़े गावं मौसूमा कन्नीपूरा (उस गावं का नाम अब नासिराबाद है) सारे का सारा अहमदी हो गया। और इलाक़ा में कई और जगह अहमदीयत फैल गई है। विनीत अर्ज़ करता है कि ख़्वाजा साहिब जल्दी करते हैं। अगर हज़रत साहिब ने ऐसा फ़रमाया है तो तसल्ली रखें शूरत भी बच नहीं सकता। (सीरतुल महदी ,रिवायत नंबर 825) अल्हम्दुलिल्ला कि इस वक़्त शुर्त में भी काफ़ी घर अहमदी हैं।

हज़रत मियां फ़ज़्ल मुहम्मद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो दुकानदार मुहल्ला दारुल फ़ज़्ल वर्णन फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा दुआ के मुताल्लिक़ कुछ सवाल हुआ। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "दुआ ही मोमिन का हथियार है। दुआ को हरगिज़ छोड़ना नहीं चाहीए बल्कि दुआ से थकना नहीं चाहीए। लोगों की आदत है कि कुछ दिन दुआ करते हैं और फिर छोड़ देते हैं। दुआ की मिसाल हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने कुवें की दी कि इन्सान कुँआं खोदता है जब पानी क़रीब पहुंचता है तो थक कर ना-उम्मीद हो कर छोड़ देता है। अगर वह एक बालिशत और खोदता तो नीचे से पानी निकल आता और इस का मक़सूद हासिल हो जाता और कामयाब हो जाता। इसी तरह दुआ का काम है कि इन्सान कुछ दिन दुआ करता है और फिर छोड़ देता हैऔर नाकाम रहता है। (सीरतुल महदी ,रिवायत नंबर 1249)

प्रिय श्रोताओं हम ख़ुश-क़िस्मत है कि अल्लाह तआला ने सय्यदना हज़रत-ए--अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बाद हमारी दीनी व दुनियावी बक़ा और प्रगति के लिए हमें ख़िलाफ़त-ए-अहमदिया जैसी अज़ीमुश्शान नेअमत अता फ़रमाई है और यह बात चमकते सूरज कि तरह है कि ख़िलाफ़त अहमदिया सय्यदना हज़-रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अक्स कामिल है। आज भी इस रुहानी ख़िलाफ़त के ज़रीया अल्लाह तआला क़बूलीयत-ए-दुआ के निशान दिखाता है और अहमदी इत्यादि अहमदी सब ख़लीफ़ा वक़्त की दुआओं से फ़ैज़याब हो रहे हैं। बिलख़सूस ख़िलाफ़त ख़ामसा का यह दौर दाओं का ही दौर है हज़रत अक़्दस अमीर-ऊल-मोमनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्नद ख़िलाफ़त पर मुतमक्किन होते ही जो पहला इरशाद फ़रमाया वह यही था कि जो आज भी हर अहमदी के कानों में गूंज रहा है और इस के दिल की है धड़कन है कि

"अहबाब जमात से केवल एक ही दरख़ास्त है कि आजकल दुआओं पर बहुत ज़ोर दें। दुआओं पर-ज़ोर दें। दुआओं पर-ज़ोर दें। बहुत दुआएं करें। बहुत दुआएं करें। अल्लाह तआला ताईद व नुसरत फ़रमाए और अहमदीयत का यह क़ाफ़िला अपनी प्रगति की तरफ़ रवाँ-दवाँ रहे। आमीन"

(बदर 29 अप्रैल 2003 पृष्ठ 15)

और ख़ुदा-गवाह है कि अल्लाह तआला ने किस तरह हज़रत अमीरुल-मोमनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ और जमात के मुख्लेसीन की दुआओं को क़बूल फ़रमाया और ख़िलाफ़त ख़ामसा के इस मुबारक दौर में अपनी बरकात की बारिशें बरसाई हैं हज़रत अमीरुल मोमनीन क़बूलीयत-ए-दुआ के ऐसे वाक़ियात अपने खिताबात में वर्णन फ़रमाते हैं :

अल्लाह तआला हम सबको सय्यदना हज़रत-ए-अक़्दस मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम की तवक्कुल अल्लाह और दुआ के हवाला पेश की गई मुबारक सीरत को जान बनाने की तौफ़ीक़ बख़्शे और हम ख़िलाफ़त अहमदिया के मुबारक झंडे तले अल्लाहु-अकबर के नारे लगाते रहें। आमीन। अल्लाहुम्मा आमीन। اللھم آمین ۔

وآخردعوانا ان الحمدللہ رب العالمین

★ ★ ★

जमात अहमदिया की प्रगति के विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हामात

(जमाल शरीयत, मुरब्बी सिलसिला, विभाग नूरुल इस्लाम कादियान)

जमाअती प्रगति के बारे में भविष्यवाणी

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की एक महान भविष्यवाणी इस मिशन की पूर्ती और इस तालीम की इशाअत के विषय में है जिसके साथ आप अवतरित किए गए थे और यह भविष्यवाणी उस वक़्त की गई थी जबकि उसके पूरा होने के सामान मौजूद नहीं थे बल्कि इसके विपरीत मुख़ालेफ़ीन इस तालीम की इशाअत में रोड़े अटका रहे थे और इस को पृष्ठ हस्ती से नाबूद करना चाहते थे। इसलिए वे भविष्य-वाणी यह है "मैं तेरी तब्लीग़ को ज़मीन के किनारों तक पहुंचाऊंगा" (तज़करः, पृष्ठ 312 ऐडीशन 4) "मैं तेरे ख़ालिस और दिल की महत्वों का गिरोह भी बढ़ाऊँगा और उनके नफ़ूस-ओ-अम्वाल में बरकत दूँगा और उनमें कसरत बख़शुंगा।"

(तज़करः, पृष्ठ 141 ऐडीशन 4)

(अल्लाह-तआला) एस गिरोह अहमदयान को नशो नुमा देगा यहां तक कि उनकी कसरत और बरकत नज़रों में अजीब हो जाएगी। "यातूना मिन कुल्ले फ़जजीन अमीक़" (तज़करः पृष्ठ 297 ऐडीशन 4) अर्थात दुनिया के हर मुल्क से लोग तेरी जमात में दाख़िल होने के लिए आएँगे। اِنَّآ اَعۡطَيۡنٰكَ الۡكَوۡثَرَ (पृष्ठ 476 ऐडीशन चहारुम) हम तुझे हर चीज़ में कसरत देंगे जिनमें जमाअत भी शामिल है। अंग्रेज़ी में भी आप को इसके विषय मे इल्हाम हुआ I shall give you a large party of Islam (तज़करः पृष्ठ 103 ऐडीशन 4) मैं तुमको मुस्लमानों की एक बड़ी जमात दूँगा ثُلَّةٌ مِّنَ الۡاَوَّلِيۡنَ وَثُلَّةٌ مِّنَ الۡاٰخِرِيۡنَ पहलों से भी एक बड़ी जमात तुमको दी जाएगी और पिछलों में से भी जिसके अर्थ ये भी हैं कि पहले अंबिया की उम्मतों में से भी। एक गिरोह कसीर तुम पर ईमान लाएगा और मुस्लमानों में से भी एक बड़ी जमात तुम पर ईमान लाएगी। " اَنَّا نَاۡتِى الۡاَرۡضَ نَنۡقُصُهَا مِنۡ اَطۡرَافِهَا (तज़करः पृष्ठ 466 ऐडीशन 4) हम ज़मीन के वारिस होंगे उसे उसके किनारों की तरफ़ से खाते आवेंगे।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम की इन भविष्यवाणियों का वर्णन करने के बाद उनके अज़ीमुश्शान रंग में पूरा होने के ताल्लुक़ से फ़रमाते हैं

इन इल्हामयत में से बहुत से तो ऐसे वक़्त में हुए और उसी वक़्त शाय भी करा दिए गए जबकि आप पर एक शख़्स भी ईमान नहीं लाया था और बाअज़ बाद को हुए जब सिलसिला क़ायम हो चुका था परंतु वे भी ऐसे वक़्त में हुए हैं जबकि सिलसिला अपनी इबतेदाई हालत में था उस वक़्त आप का यह इल्हाम शाय कर देना कि एक वक़्त ऐसा आएगा कि आपके साथ एक बड़ी जमाअत हो जाएगी और केवल भारत ही में नहीं बल्कि समस्त देशों में आप अलैहिस्सलाम के मुरीद फैल जाऐंगे और हर मज़हब के लोगों में से निकल कर लोग आपके मज़हब में दाख़िल होंगे। और उनको अल्लाह-तआला बहुत बढ़ाएगा और किसी मुल्क के लोग भी आपकी तब्लीग़ से बाहर नहीं रहेंगे। क्या यह एक मामूली बात है? क्या इन्सानी दिमाग़ क्या संभा-वनाओं के आधार पर ऐसी बात कह सकता है? ... आख़िर वही हुआ जो अल्लाह--तआला ने कहा था। वह शख़्स जो तन-ए-तन्हा एक तंग सेहन में टहल टहल कर अपने इल्हामात लिख रहा था और समस्त दुनिया में अपनी क़बूलीयत की ख़बर दे रहा था, हालाँकि उस वक़्त उसे उसके इलाक़े के लोग भी नहीं जानते थे बावजूद सब रोकों के अल्लाह-तआला की नुसरत और ताईद से उठा और एक बादल की तरह गरजा और लोगों के देखते देखते हासिदों और दुश्मनों के कलेजों को छलनी करता हुआ समस्त आसमान पर छा गया भारत में वह बरसा अफ़ग़ानिस्तान में वह बरसा, अरब में वह बरसा मिस्र में वह बरसा, सैलून में वह बरसा, बुख़ारा में वह बरसा, मशरिक़ी अफ़्रीक़ा में वह बरसा, जज़ीरा मारीशस में वह बरसा, जुनूबी अफ़्रीक़ा में वह बरसा, मग़रिबी अफ़्रीक़ा के देशों में वह बरसा, नाईजेरिया, गोल्ड कोस्ट सेरालि-योन में वह बरसा, आस्ट्रेलिया में वह बरसा, इंग्लिस्तान और जर्मन और रूस के इलाक़ों को उसने सेराब किया और अमरीका में जा कर उसने आबपाशी की

आज दुनिया का कोई बर्र-ए-आज़म नहीं जिसमें मसीह मौऊद की जमात नहीं और कोई मज़हब नहीं जिसमें से उसने अपना हिस्सा वसूल नहीं किया, मसीही, हिंदू , बुध, पार्सी, सिख, यहूदी सब क़ौमों में से उसके मानने वाले मौजूद हैं और यूरोपी-यन, अमरीकन, अफ़्रीकन और एशिया के बाशिंदे इस पर ईमान लाए हैं अगर जो कुछ उसने क़बल अज़ वक़्त बता दिया था अल्लाह-तआला का कलाम नहीं था तो वह किस तरह पूरा हो गया? क्या यह अजीब बात नहीं कि वह यूरोप और अमरीका जो इस से पहले इस्लाम को खा रहे थे मसीह मौऊद के ज़रीये से अब इस्लाम उनको खा रहा है। कई सौ आदमी उस वक़्त तक इंग्लिस्तान में और इसी तरह अमरीका में इस्लाम ला चुका है और रूस और जर्मन और इटली के बाअज़ अफ़राद ने भी इस सिलसिले को क़बूल किया है। वही इस्लाम जो दूसरे फ़िर्क़ों के हाथ से शिकस्त पर शिकस्त खा रहा था अब मसीह मौऊद की दुआओं से दुश्मन को हर मैदान में नीचा दिखा रहा है और इस्लाम की जमात को बढ़ा रहा है। فالحمدللہ رب العالمین।

(दावतुल अमीर, पृष्ठ 348 से 350मुद्रित जनवरी 2017 कादियान)

कादियान की प्रगति के बारे में भविष्यवाणी

कादियान की तरक़्क़ी के बारे में हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को बताया गया कि कादियान का गांव तरक़्क़ी करते करते एक बहुत बड़ा शहर हो जाएगा जैसे कि बंबई और कलकत्ता के शहर हैं। गोया कि नौ दस लाख की आबादी तक पहुंच जाएगा और इस की आबादी उत्तर और पूर्व में फैलते हुए ब्यास तक पहुंच जाएगी।

(तज़करः, पृष्ठ 782 ऐडीशन चहारुम)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो कादियान की इबतेदाई हालत का नक़्शा खिंचते हुए फ़रमाते हैं :

यह भविष्यवाणी जब शाय हुई है इस वक़्त कादियान की हालत यह थी कि उसकी आबादी दो हज़ार के क़रीब थी सिवाए चंद एक पुख़्ता मकान के बाक़ी सब मकानात कच्चे थे मकानों का किराया इतना गिरा हुआ था कि चार पाँच आने माहवार पर मकान किराया पर मिल जाता था। मकानों की ज़मीन इस क़दर अर्ज़ां थी कि दस बारह रुपय को रहने के योग्य मकान बनाने के लिए ज़मीन मिल जाती थी बाज़ार का यह हाल था कि दो तीन रुपय का आटा एक वक़्त में नहीं मिल सकता था क्योंकि लोग ज़मींदार वर्ग के थे और ख़ुद दाने पीस कर रोटी पकाते थे तालीम के लिए एक मुदर्रिसा सरकारी था जो प्राइमरी तक था और इस का मुदर्रिस कुछ आलाऊस लेकर डाकखाने का काम भी कर दिया करता था। डाक हफ़्ते में दो दफ़ा आती थी समस्त इमारतें फ़सील क़स्बा के अंदर थीं और इस भविष्यवाणी के पूरा होने के ज़ाहिरी कोई सामान न थे क्योंकि कादियान रेल से ग्यारह मील की दूरी पर वाक़्य है और उसकी सड़क बिल्कुल कच्ची है और जिन मुल्कों में रेल हो उनमें इसके किनारों पर जो शहर वाक़्य हों उन्ही की आबादी बढ़ती है। कोई कारख़ाना कादियान में न था कि उसकी वजह से कादियान की तरक़्क़ी हो। न ज़िला का मुक़ाम था न तहसील का, यहाँ तक कि पुलिस की चौकी भी न थी। कादियान में कोई मंडी भी न थी जिसकी वजह से यहां की आबादी तरक़्क़ी करती जिस वक़्त यह भविष्यवाणी की गई है उस वक़्त हज़रत--ए-अक़दस अलैहिस्सलाम के मुरीद भी चंद सौ से ज़्यादा न थे कि उनको आदेश दे कर ला कर यहां बसा दिया जाता तो शहर बढ़ जाता।

(दावततुल अमीर, पृष्ठ 335 मुद्रित जनवरी 2017 कादियान)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के मुताबिक़ आज कादियान ने बावजूद मुख़ालिफ़ हालात के किस कदर प्रगति की है उसका मुशाहिदा प्रत्येक साहिब बसीरत और इंसाफ़ पसंद ख़ुद कर सकता है।

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी कादियान की तरक़्क़ी के बारे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणियों के अज़ीमुश्शान रंग में पूरा होने का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"उद्देश्य बिल्कुल मुख़ालिफ़ हालात में और बिना किसी ज़ाहिरी सामान की मौजूदगी के हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भविष्यवाणी की कि कादियान बहुत तरक़्क़ी कर जाएगा। इस भविष्यवाणी के शाय होने के बाद अल्लाह--तआला ने आपकी जमात को भी तरक़्क़ी देनी शुरू कर दी और साथ ही उनके दिलों में यह ख़ाहिश भी पैदा करनी शुरू कर दी कि वह कादियान आकर बसें और लोगों ने बिना किसी तहरीक के शहरों और कस्बों को छोड़कर कादियान आकर बसना शुरू कर दिया और उनके साथ साथ दूसरे लोगों ने भी यहां आकर बसना शुरू कर दिया।

अभी इस भविष्यवाणी के पूरी तरह पूरे होने में तो वक़्त है मगर जिस हद तक यह भविष्यवाणी पूरी हो चुकी है वह भी हैरत-अंगेज़ है निहायत मुख़ालिफ़ हालात में कादियान ने वो तरक़्क़ी की है जिसकी मिसाल दुनिया के पर्दे पर किसी जगह भी नहीं मिल सकती। इक़तेसादी तौर पर शहरों की प्रगति के लिए जो उसूल मुक़र्रर हैं इन सब के बावजूद उसने तरक़्क़ी हासिल कर के अल्लाह तआला के कलाम की सदाक़त ज़ाहिर की है जिससे वे लोग जो कादियान की पहली हालत और इस के मुक़ाम को जानते हैं ख़ाह वे ग़ैर मज़ाहिब के ही क्यों न हूँ इस बात का इक़रार करने पर मजबूर हो जाते हैं कि बे-शक, यह ग़ैरमामूली संयोग है, मगर अफ़सोस लोग यह नहीं देखते कि क्या सब ग़ैरमामूली संयोग मिर्ज़ा साहिब ही के हाथ पर जमा हो जाते थे। (दावतुल अमीर, पृष्ठ 337 से 338 प्रकाशन जनवरी 2017 कादियान)

माली नुसरत के बारे में इल्हामात

माली नुसरत के बारे में आप अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला ने यह ख़बर भी दी कि ينصرك رجال نوحي اليهم من السماء ख़ुदा अपनी जनाब से तेरी मदद करेगा और वे लोग तेरी मदद करेंगे। जिनको हम आसमान से वह्यी करेंगे। इसी तरह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अल्लाह-तआला ने इल्हामन ख़बर दी थी मैं तेरे ख़ालिस और दिल से प्रेम करने वालों का गिरोह भी बढ़ाऊँगा और उनके नफ़ूस और अम्वाल में बरकत दूँगा और उनमें बढ़ोतरी करूंगा। (तब्लीग़-ए-रसालत, भाग प्रथम पृष्ठ 60 से 62 अज़ इश्तिहार 20 फ़रवरी 1886 ई.)

प्रिय सज्जनों एक वह ज़माना था कि हज़रत मसीह मौऊद की भावज साहिबा दस्तर ख़वान का बच्चा हुआ खाना आप के लिए भिजवाया करती थीं लेकिन इन ख़ुदाई बशारात के मुताबिक़ आज हज़ार-हा ख़ानदान आपके दुस्तर ख़वान पर पल रहे हैं। आप ख़ुद इन दोनों हालतों का नक़्शा खींचते हुए अपने एक अरबी शेअर में फ़रमाते हैं :

لَفَاظَاتُ الْمَوَائِدِ كَانَ اُكْلِي فَصِرْتُ الْيَوْمَ مِطْعَامُ الْاَهَالِي अर्थात एक ज़माना था कि दूसरों के दस्तर ख़वान के बच्चे हुए टुकड़े मेरी ख़ुराक हुआ करते थे लेकिन आज यह हालत है कि बहुत से ख़ानदान मेरे दस्तर ख़वान पर खाना खा रहे हैं। फिर एक ज़माना वह था कि जलसा सालाना के मेहमानों को खाना खिलाने के लिए आपके पास पैसे नहीं थे। हुज़ूर ने अपने सुसर मुहतरम मीर नासिर नवाब साहिब को फ़रमाया मेरी बीवी साहिबा का कोई ज़ेवर फ़रोख़त करके मेहमानों के खाने का इंतेज़ाम कर लिया जाए लेकिन अल्लाह-तआला की दी हुई बशारत के मुताबिक़ आज जबकि कादियान की तर्ज़ पर दुनिया के कई देशों में जलसा सालाना का आयोजन और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के जारी फ़र्मूदा लंगर की शाख़ें क़ायम हैं और एक एक जलसा पर करोड़ों के अख़राजात होते हैं और फिर एक वह ज़माना था कि बराहीन-ए-अहमदिया की छपाई के लिए आप ख़ुद अमृतसर जाते थे और इस की छपाई के अख़राजात के लिए बेहद फ़िक्रमंद रहते थे लेकिन आज माली संख्या और नुसरत-ए-इलाही का यह आलम है कि आपके मिशन की तकमील के लिए जमात अरबों रुपय सालाना ख़र्च कर रही है। दुनिया के कई देशों में जमात के अपने प्रैस क़ायम हैं। लाखों की तादाद में कुतुब और लिटरेचर हर साल प्रकाशित होते है (MTA) इंटरनैशनल की सूरत में जमात का अपना टीवी चैनल और कई रेडीयो स्टेशन क़ायम हैं जिनके ज़रीया से जमात का पैग़ाम दुनिया के कोने कोने तक पहुंच रहा है।

क़ारईन किराम जमात अहमदिया की रोज़-अफ़्ज़ूँ तरक़्क़ी पर मुख़ालिफ़ीन के करब का अंदाज़ा लगाना मुश्किल नहीं । जमात अहमदिया का सालाना बजट अब लाखों से निकल कर करोड़ों में और करोड़ों से निकल कर अरबों में दाख़िल हो चुका है । आज अल्लाह-तआला की माली नुसरत का ये आलम है कि आपके मिशन तकमील के लिए जमात अहमद ये अरबों रुपय सालाना ख़र्च कर रही है।दुनिया हैरान और अंगुश्त बदंदाँ हैकि एक छोटी सी ग़रीब जमात के पास इतना रुपया कहाँ से आता है । दुनियादारी की सोच रखने वालों को जब कुछ सझ नहीं आता तो वो कह देते हैं कि उनको इसराईल से पैसा आता है फ़ुलां मुल्क उनकी मद करता है । एक ऐसे ही अवसर पर हज़रत ख़लीफ़ा उल-मसीह एलिसा लत रहिमा अल्लाह--तआला ने था : ''हमारी दौलत अमरीकन या कैनेडीयन डालर नहीं या पूरपीन करंसी या ब्रिटिश पाओंड नहीं । हमारी दौलत-ओ-ह मुख़लिस दिल है जो एक मु-नव्वर सेना के अंदर धड़क रहा है। जब तक यह दिल हमारे हैं और जब तक इन सीनों की तादाद बढ़ती जा रही है पैसा की किसे परवाह है। वह तो ज़रूरत पड़ी तो अल्लाह--तआला आसमान से फेंकेगा।" (ख़ुतबा जुमा फ़र्मूदा 21 नवंबर 1975 ई.)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो माली नुसरत के विषय मे भविष्यवाणी के अज़ीमुश्शान रंग में पूरा होने का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं :

"हमारी जमात गरीबों की जमात है क्यों कि अल्लाह-तआला की सुन्नत है कि आरंभ में ग़रीब लोग ही उसके सिलसिला में दाख़िल होते हैं जिनको देखकर लोग कह दिया करते हैं وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّاْيِ (सूरः हूद : 28) और इस में उसकी हिक्मत यह होती है ता कोई शख़्स यह न कहे कि यह सिलसिला मेरी मदद से फैला और ता नादान मुख़ालिफ़ भी इस किस्म का एतराज़ न कर सकें। अतः ऐसी जमात से इस क़दर बोझ उठवाना बिना खुदा की साहायता के नहीं हो सकता। यह ग़रीब जमात इसी तरह सरकारी टैक्स अदा करती है जिस तरह और लोग अदा करते हैं ज़मीनों के लगान देती है। सड़कों शिफ़ा ख़ानों इत्यादि के अख़-राजात में हिस्सा लेती है। उद्देश्य सब ख़र्च जो दूसरे लोगों पर हैं वह भी अदा करती है और फिर दीन की इशाअत और इस के क़ियाम के लिए भी रुपया देती है और बराबर पैंतीस 35 साल से इस बोझ को बर्दाश्त करती चली आ रही है। इस ज़माने में बे शक निसबतन ज़्यादा आसूदा हाल और मुअज़्ज़िज़ लोग इस जमात में शामिल हो गए हैं मगर उसी क़दर अख़राजात में भी इज़ाफ़ा हो गया है अतः क्या यह बात हैरत-अंगेज़ नहीं कि जबकि बाक़ी दुनिया बा वजूद उन से ज़्यादा मालदार होने के अपने ज़ाती अख़राजात की तंगी पर ही शिकवा करती रहती है, इस जमात के लोग लाखों रुपया सालाना बिना एक साल का वक़फ़ा डालने के अल्लाह की राह में ख़र्च कर रहे हैं और महिज़ अल्लाह-तआला के फ़ज़ल से इस अमर के लिए भी तैयार हैं कि अगर उनसे कहा जाए कि अपने सब माल अल्लाह-तआला की राह में दे दो तो वे उसी वक़्त दे दें। यह बात कहाँ से पैदा हो गई? यक़ीनन اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ का इल्हाम नाज़िल करने वाले ने लोगों के दिलों में तग़य्युर पैदा किया है अन्यथा कौन सी ताक़त थी जो उस वक़्त जबकि हज़रत मसीह मौऊद को मामूली अख़राजात की फ़िक्र थी, इस क़दर बढ़ जाने वाले अख़राजात के पूरा करने का वादा करती और इस वादा को पूरा कर के दिखा देती।"

(दावतुल अमीर, पृष्ठ 345 मुद्रित जनवरी 2017 कादियान)

प्रिय सज्जनों बशरी तक़ाज़ों के तहत चूँकि अल्लाह के भेजे हुए की ज़िंदगी भी महिदूद होती है। इसलिए अल्लाह-तआला की क़दीम से यह सुन्नत जारी है कि उसके मामूर-ओ-मुर्सलीन के आने के उद्देश्य की पूर्ति हमेशा उनके खलिफ़ा और उन पर ईमान लाने वालों के ज़रीया हुआ करती है और हुज़ूर अलैहिस्सलाम की आमद के मक़ासिद को पाया-ए-तकमील तक पहुंचाने का हमागीर प्रोग्राम भी चूँकि विश्वव्यापी होने के साथ साथ ज़माने के एतबार से सदियों पर मुहीत था इस लिए उस की तकमील आपके खलिफ़ा ही के ज़रीया होनी मुक़द्दर थी। यही वजह है कि जब अल्लाह-तआला की तरफ़ से नियमिता के साथ हुज़ूर अलैहिस्सलाम को आपके ज़माना की वफ़ात के क़रीब-तर होने की ख़बर दी गई तो आपने अपने रसाला अल् वसीयत में जमात को तसल्ली देते हुए तहरीर फ़रमाया

"तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना ज़रूरी है और इस का आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह दाइमी है जिसका सिलसिला क़ियामत तक मुनक़ते नहीं होगा और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊं लेकिन मैं जब जाऊंगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी। जैसा कि ख़ुदा का बराहीन-ए-अहमदिया मैं है .. मैं इस जमात को जो तेरे पैरौ हैं क़ियामत तक दूसरों पर ग़लबा दूँगा। अतः ज़रूर है कि तुम पर मेरी जुदाई का दिन आवे ता बाद उसके वह दिन आवे जो दाइमी वादा का दिन है।" (अल् वसीयत, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 305)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम की इस भविष्यवाणी के मुताबिक़ आपकी वफ़ात के बाद 27 मई 1908 को हज़रत मौलाना हकीम नूरुद्दीन रज़ियल्लाहु अन्हु जमात के पहले ख़लीफ़ा मुंतख़ब हुए और ख़ुदाई वादों के मुताबिक़ वह अज़ीमुश्शान निज़ाम ख़िलाफ़त जारी हुआ जिसका क़ुरआन-ए-मजीद और अहादीस नबवी में वादा था आज अल्लाह-तआला के फ़ज़ल से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पांचवें ख़लीफ़ा की क़ियादत में जमात अहमदिया प्रगति की अज़ीमुश्शान मनाज़िल तै करती चली जा रही الحمدللہ।

ख़िलाफ़त ख़ामसा के बाबरकत दौर में होने वाले अज़ीमुश्शान तब्लीग़ी मसाई का मुख़्तसर वर्णन भी यहां अज़-हद ज़रूरी है

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ख़लीफ़तुल मसीह मुंतख़ब होने के बाद दुनिया में अमन के बारे में इस्लाम का पैग़ाम पहुंचाने के लिए प्रिंट मीडीया और डीजीटल इलैक्ट्रॉनिक मीडीया के ज़रीया एक मुहिम शुरू की। आपकी रहनुमाई में जमात अहमदिया मुस्लिमा के नैशनल चैप्टरज़ ने ऐसी कोशिशें जारी रखी हुई हैं जिनसे इस्लाम की सच्ची और अम्न पसंद तालीम का परचार हो रहा है। अहमदी मुस्लमान, मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम दुनिया में

अमन के लाखों बल्कि करोड़ों इश्तिहार तक़सीम करने में व्यस्त हैं।

अंतर्धर्म प्रेम और अमन की मजालिस आयोजित कर रहे हैं और क़ुरआन क्रीम की नुमाइशें लगाई जा रही हैं ताकि क़ुरआन-ए-करीम का मुक़द्दस पैग़ाम दुनिया तक पहुंच सके इन मुबारक कोशिशों को दुनिया-भर के मीडीया में पज़ीराई हासिल हो रही है और यह साबित हो रहा है कि इस्लाम अमन, वतन से प्रेम और ख़िदमत इन्सानियत का अलम है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 2004 में जलसा सालाना क़ौमी अमन कान्फ्रैंस का आग़ाज़ किया जिसमें अमन और हम-आहंगी के ख़्यालात और जज़बात के फ़रोग़ देने के लिए समस्त वर्गों के अफ़राद शामिल होते हैं। इस कान्फ्रैंस में हर साल वुज़रा मैंबरान पार्लीमैंट, सियास्तदान मज़हबी रहनुमा और दीगर मोअज़्ज़िज़ीन शामिल होते हैं।

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इस्लाम की हक़ीक़ी तालीम से दुनिया को रोशनास कराने के लिए मुख़्तलिफ़ देशों की पार्लीमैंटस और अमन कान्फ्रैंसज़ से ख़िताब करते हैं। आपके भाषण इतने प्रभावी होते हैं कि ग़ैर मुस्लिम सियास्तदान और हज़हबी रहनुमा उनकी ख़ूबी और बरतरी का इक़रार किए बग़ैर नहीं रह पाते। इस सिलसिला में आपने बर्तानवी पार्लीमैंट, मिल्ट्री हैड क्वार्टर्ज़ कोबलनज़ जर्मनी, कैपिटल हिल वाशिंगटन अमरीका, यूरोपियन पार्लीमैंट बरसल्ज़ बेलजीएम, हिमबर्ग जर्मनी, न्यूज़ीलैंड पार्लीमैंट विलिंगटन इत्यादि में ख़िताब फ़रमाए।

इसी तरह सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दुनिया के बड़े बड़े सयासी-ओ-मज़हबी रहनुमाओं को इस्लाम की शांति प्रिय तालीम वर्णन करते हुए उन्हें दुनिया में फैली हुई बदअमनी को दूर करने और हक़ीक़ी अदल के क़ियाम की तरफ़ तवज्जा दिलाई है। इस सिलसिला में आपने पोप बैनेटिक XVI इसराईल के वज़ीर-ए-आज़म, सदर इस्लामी जमहूरीया ईरान, सदर रियासतहाय मुत्तहदा अमरीका, वज़ीर-ए-आज़म कैनेडा, ख़ादिम हरमैन शरीफ़ैन सऊदी अरब बादशाह, अवामी जमहूरिया चीन के वज़ीर-ए-आज़म, वज़ीर-ए-आज़म बर्तानिया, जर्मनी की चांसलर, सदर जमहूरिया फ़्रांस, मलिका बर्तानिया, इस्लामी जमहूरिया ईरान के रहनुमा और रूसी फ़ैडरेशन के सदर के नाम ख़ुतूत लिखे।

इसके इलावा हुज़ूर अनवर ने जलसा सालाना वालों को 2022 ई. के अवसर पर केवल एक साल में जमात की जो प्रगति का हैरत-अंगेज़ नक़्शा खींचा है वह सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सदाक़त का और ख़िलाफ़त अहमदिया की सदाक़त का मुँह बोलता सबूत है। वह इस बात का भी सबूत ही कि सय्यदना-ओ--मौलाना हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत इमाम मह्दी व मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आमद और उसके ग़लबा के विषय मे जो पीशगोईयां फ़रमाई थीं वह भी सच्ची थीं।

हुज़ूर अक़्दस ने केवल एक साल की प्रगति का नक़्शा खींचते हुए फ़रमाया है कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इमसाल दुनिया-भर में पाकिस्तान के इलावा 355 नई जमातें क़ायम हुईं, उनके इलावा 855 नए मुक़ामात पर पहली बार अहमदीयत का पौधा लगा है, 40 नए जमातों के क़ियाम के साथ कांगो किंशासा सर-ए-फ़हरिस्त, तनज़ानिया दूसरे और सेरालियोन तीसरे नंबर पर है। जमाअत को ईस वर्ष अल्लाह तआला के हुज़ूर जो मसाजिद पेश करने की तौफ़ीक़ मिली उनकी मजमूई संख्या 209 है, जिनमें से 147 नई मसाजिद तामीर हुई हैं और 62 बनी बनाई मसाजिद अता हुई हैं। दौरान साल अफ़्रीक़ा घाना में 20 मसाजिद तामीर हुईं और इस तरह मसाजिद की कुल संख्या 762 हो चुकी है, सेरालियोन में मसाजिद की संख्या 1556 है जबकि नाईजेरिया में 1400 तथा बेलीज़ में इम साल पहली तामीर शूदा अहमदिया मस्जिद नूर का इफ़्तिताह हुआ। अलल्ले तआला के फ़ज़ल से दौरान-ए-साल मिशन हाऊसज़ में 123 का इज़ाफ़ा हुआ है, मिशन हाऊसज़ और तब्लीग़ी सैंटर्ज़ के क़ियाम के हवाले से पहले नंबर पर सेरालियोन और तनज़ानिया रहे जबकि दूसरे पर बेनिन और तीसरे पर घाना रहा। इमसाल क़ुरआन-ए-क्रीम का स्पैनिश अनुवाद प्रिंट करवाया गया, ईसी तरह नए ख़त मंज़ूर फाउंट के साथ अंग्रेज़ी अनुवाद अज़ हज़रत मौलवी शेर अली साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो की तबाअत की गई है, पाँच तसानीफ़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अंग्रेज़ी अनुवाद किया गया है, उन के इलावा मल्फ़ूज़ात भाग 10 और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो की तसनीफ़ रद्द-ए-तनासुख़ का अंग्रेज़ी अनुवाद किया गया। अरबी डैसक को ईस वर्ष हज़रत मसीह मौऊद की 12 कुतुब का अरबी अनुवाद फाईनल कर के प्रिंटिंग के लिए छपवाने की तौफ़ीक़ मिली, अलल्ले तआला के फ़ज़ल से रुहानी ख़ज़ायन की 88 कुतुब में से 78 का हिन्दी अनुवाद शाय हो चुका है। ईसी तरह हज़रत मसीह मौऊद की 72 कुतुब जर्मन ज़बान में शाय हो चुकी हैं। दौरान साल 505 मुख़्तलिफ़ कुतुब, पमफ़लेट और फोल्डरज़ इत्यादि 46 ज़बानों तथा 67 लाख 19 हज़ार 372 की तादाद में प्रकाशित हुए। वह दस देशों में, जिनमें ज़्यादा तादाद में लिटरेचर शाय किया गया, उन में नंबर एक जर्मनी, हॉलैंड दूसरे और यू के तीसरे नंबर पर रहा। 22 देशों को 47 ज़बानों में एक लाख 25 हज़ार 110 से ज़ायद संख्या में कुतुब छपवाई गईं, जिनकी कुल मालियत 4 लाख 30 हज़ार पाऊंड है। जमात के ज़रीया फ़्री लिटरेचर 5071 मुख़्तलिफ़ विषयों की कुतुब-ओ-फोल्डरज़ 47 लाख 51 हज़ार की तादाद में मुफ़्त तक़सीम किए गए, जिसके ज़रीया दुनिया-भर में 82 लाख 92 हज़ार से ज़्यादा अफ़राद तक पैग़ाम पहुंचा। दुनिया के 101 देशों में अब तक 106 से ज़ायद मर्कज़ी और रीजनल लाइब्रेरियों का क़ियाम हो चुका है। अलल्ले तआला के फ़ज़ल से इमसाल रकीम प्रैस को बड़ी तादाद में जमाती कुतुब और लिटरेचर प्रकाशित करने की तौफ़ीक़ मिली, छपने वाली कुतुब की तादाद 2 लाख 29 हज़ार से ऊपर है, इसके इलावा रिसाला अंसारुद्दीन, अल्नुसरत, वक़्फ़ नौ रिसालाजात मर्यम और इस्माईल, छोटे पमफ़लेट, लीफ़ लेट्स और जमाती दफ़ातिर की स्टेशनरी इत्यादि छापने की तौफ़ीक़ मिली। अफ्रीकन सात देशों में क़ायम अहमदिया प्रिंटिंग प्रैसज़ ने 5 लाख 71 हज़ार से ऊपर लिटरेचर और कुतुब शाय कीं। ईस वर्ष 102 ममालिक में मजमूई तौर पर 76 लाख 11 हज़ार से ऊपर लीफ़ लेट्स तक़सीम हुए और उसके ज़रीया एक करोड़ 16 लाख 90 हज़ार से ज़ायद अफ़राद तक पैग़ाम पहुंचा। इन में जर्मनी नंबर एक, फिर यू.के और ऑस्ट्रिया है 6 हज़ार 41 नुमाइशों के ज़रीया 9 लाख 29 हज़ार से ज़ाइद अफ़राद तक इस्लाम अहमदियत का पैग़ाम पहुंचाने की तौफ़ीक़ मिली, 1234 क़ुरआन-ए-करीम के अनुवाद भेंट के रूप में मेहमानों को दिए गए, 4820 बुक स्टालज़ और बुक फेयरज़ के ज़रीया 11 लाख 34 हज़ार से ज़ायद अफ़राद तक पैग़ाम पहुंचा। इस वक़्त दुनिया-भर में जमात और ज़ेली तन्ज़ीमों के तहत 24 ज़बानों में 120 तालीमी, तर्बीयती और मालूमाती मज़ामीन पर मुश्तमिल अख़बारात-ओ-रसायल शाय हो रहे हैं। 27 मई 2019 से हफ़्ता में दो रोज़ बाक़ायदगी से शाय होने वाले अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल को दौरान साल पाँच ख़ुसूसी नंबरों समेत 101 शुमारे शाय करने की तौफ़ीक़ मिली, इमसाल उसकी वेबसाइट, ट्वीटर और फेसबुक के ज़रीया से 3 करोड़ 71 लाख से ज़ायद लोगों तक पैग़ाम-ए-हक़ पहुंचा। अँग्रेज़ी जानने वाले लोगों के लिए शाय होने वाला हफ़्तरोज़ा अलहकम के पढ़ने वालों की तादाद भी बढ़ रही है। मीडीया आर्गेनाईज़ेशन की हैसियत इख़तेयार करने वाला रिव्यू आफ़ रीलीजिंज़ जिसका इजरा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने 1902 ई. में फ़रमाया था इस को 120 साल हो चुके हैं, यह रिसाला अंग्रेज़ी में माहवार, जर्मन में हर दूसरे माह जबकि फ्रेंच और स्पैंशन में तीन माह में एक बार प्रकाशित हो रहा है। दौरान साल यह रिसाला अंग्रेज़ी, फ्रेंच, स्पैंशन और जर्मन ज़बानों में 2 लाख से ज़ायद तादाद में प्रिंट हुआ। लंदन से शाय होने वाला रोज़नामा अल्फ़ज़ल ऑनलाइन की इंस्टाग्राम, ट्वीटर, फेसबुक इस्टेट्स और पी डी एफ़ के ज़रीया चार लाख से ज़ाइद तक पाठकों की तादाद पहुंच चुकी है। साल 291 ख़बरें और मज़ामीन शाय करने की तौफ़ीक़ मिली जिसके ज़रीया एक

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT

AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और यदि खड़े होकर संभव न हो तो बैठ कर और यदि बैठ कर भी संभव न हो तो पीठ के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

मुहतात अंदाज़ा के मुताबिक़ 3 करोड़ से ज़ायद अफ़राद तक जमात का पैग़ाम पहुंचा। क़ुरआन-ए-करीम सर्च की नई वेबसाइट OpenQuran.com को मज़ीद बेहतर बनाया गया है, अल्-इस्लाम पर क़ुरआन-ए-करीम पढ़ने और सुनने के लिए नई सुंदर ReadQuran.app के पहले मोबाइल वर्ज़न का इजरा हुआ है। अंग्रेज़ी ज़बान में 330 और उर्दू ज़बान में एक हज़ार कुतुब वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। अंग्रेज़ी ज़बान में 6 नई कुतुब ऐपल, गूगल और Amazon पर शाय की गई हैं, अब तक 91 कुतुब इस प्लेटफार्म पर शाय हो चुकी हैं। उर्दू और अंग्रेज़ी में 17 नई आडियो कुतुब तैयार की गई हैं, इस तरह अब उर्दू में 82 और अंग्रेज़ी में 51 कुतुब की आडीयो फाईलज़ तैयार हो चुकी हैं। ख़ुतबात-ए-जुमा हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ 20 ज़बानों में आडीयो और वीडीयो में दस्तयाब हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस वक़्त दुनिया-भर में वाकफ़ीन की तादाद 78 हज़ार है, जिस में 45 हज़ार 832 लड़के और 32 हज़ार 168 लड़कियां हैं। इस वर्ष नई दरख़ास्तें जिन पर वालदैन को इबरतेदाई मंज़ूरी भिजवाई गई उन की तादाद 3519 है, अल्लाह तआला के फ़ज़ल से यह तादाद हर साल बढ़ रही है। एम. टी. ए इंटरनेशनल के 16 डिपार्टमैंट, 503 कारकुनान, 269 मर्द और 144 महिलाएं जबकि 80 ऐसे हैं जिनको तनख़्वाह का अलाउंस मिलता है, एम.टी. ए अफ़्रीक़ा के ज़रीया मुख़्तलिफ़ अफ़्रीक़ी देशों में 12 स्टूडीयोज़ और ब्यूरोज़ क़ायम हैं, 150 कारकुनान यहां काम कर रहे हैं। अल्लाह के फ़ज़ल से दुनिया के मुख़्तलिफ़ देशों के लिए एम.टी. ए के 8 चैनल 24 घंटे नशरियात तथा 23 मुख़्तलिफ़ ज़बानों में रवां अनुवाद पेश कर रहे हैं। कीनीया, रवांडा और मायोट द्वीप में 3 नए स्टूडीयोज़ बने हैं, कैमरोन में एम.टी. ए केबल सिस्टम पर भी देखा जा सकता है। इस वक़्त अल्लाह तआला के फ़ज़ल से 25 जमाती रेडीयो स्टेशन्ज़ में से माली में 15 बुर्कीना फासो में 4 सीरालियोन में 3 और तनज़ानिया, गेम्बया, कांगो किंशासा में एक, एक है।

वायस आफ़ इस्लाम रेडीयो की लंदन के इलावा भी तौसीअ हो गई है। 24 घंटे की नशरियात के इलावा दीगर टीवी पर प्रोग्राम 74 देशों में टीवी, रेडीयो चैनल जमात का पैग़ाम दे रहे हैं, इस वर्ष 2686 टीवी प्रोग्रामज़ के ज़रीया 2519 घंटे वक़्त मिला जबकि रेडीयो स्टेशन्ज़ के ज़रीया 24762 घंटे पर मुश्तमिल 17204 प्रोग्रामज़ नशर हुए, एक मुहतात अंदाज़ा के मुताबिक़ उन के ज़रीया 34 करोड़ लोगों से ज़ायद अफ़राद तक पैग़ाम पहुंचा।

अफ़्रीक़ा के 12 देशों में 37 हस्पताल-ओ-क्लीनिक काम कर रहे हैं 48 मर्कज़ी और 34 मुक़ामी डाक्टरज़ ख़िदमात सरअंजाम दे रहे हैं तथा एक डेंटल क्लीनिक का लाइबेरिया में इजरा हुआ है। अफ़्रीक़ा के 11 देशों में 615 प्राइमरी और मिडल स्कूल हैं, जबकि 10 देशों में 80 सेकंडरी स्कूल काम कर रहे हैं, नाईजेरिया में पहले अहमदिया क्लीनिक का इजरा हुआ है।

हज़रत-ए-अक़दस अमीरुल मोमनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की तरफ़ से पेश करदा जमात अहमदिया की प्रगति की एक झलक जो पेश की गई है इस बात पर गवाह है कि अल्लाह-तआला हर मैदान में जमात को प्रगति से नवाज़ रहा है। जमात के नफ़ूस में बरकत अता हो रही है जमात के अम्वाल में बरकत नाज़िल हो रही है। आख़िर पर विनीत सय्यदना हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का ईमान अफ़रोज़ एक इक़तेबास पेश करके इस मज़मून को ख़त्म करता है। हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

" ख़ुदा तआला ने मुझे बार बारख़बर दी है कि वह मुझे बहुत अज़मत देगा और मेरी मुहब्बत दिलों में बिठाएगा और मेरे सिलसिले को समस्त ज़मीन में फैलाएगा और सब फ़िर्क़ों पर मेरे फ़िर्क़ा को ग़ालिब करेगा और मेरे फ़िर्क़ा के लोग इस क़दर इलम और मार्फ़त में कमाल हासिल करेंगे कि अपनी सच्चाई के नूर और अपने दलायल और निशानों कि दृष्टि से सब का मुँह-बंद कर देंगे। और हर एक क़ौम इस स्रोत से पानी पिएगी और यह सिलसिला ज़ोर से बढ़ेगा और फूलेगा यहां तक कि ज़मीन पर मुहीत हो जावेगा। बहुत सी रोकें पैदा हुई और इबतेला आएँगे परंतु ख़ुदा सबको दरमयान से उठादे गा और अपने वादा को पूरा करेगा। और ख़ुदा ने मुझे सम्बोधित करके फ़रमाया कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूंगा यहां तक कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे। सिवाए सुनने वालो इन बातों को याद रखो और उन पेश ख़बरियों को अपने संदूक़ों में महफ़ूज़ रख लो कि यह ख़ुदा का कलाम है जो एक दिन पूरा होगा।"

(रुहानी ख़ज़ायन, भाग 20 तजल्लियात-ए-इलाही, पृष्ठ 409)

★ ★ ★

पृष्ठ 18 का शेष

मशरिक़ और मग़रिब में आबाद हो! मैं पूरे ज़ोर के साथ आपको इस तरफ़ दावत करता हूँ कि अब ज़मीन पर सच्चा मज़हब सिर्फ़ इस्लाम है और सच्चा ख़ुदा भी वही ख़ुदा है जो क़ुरआन ने वर्णन किया है और हमेशा की रुहानी ज़िंदगी वाला नबी और जलाल और तक़द्दुस के तख़्त पर बैठने वाला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है।"

(तिरयाक़कुल क़ुलूब, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 15 पृष्ठ 141)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"जो लोग नाहक़ ख़ुदा से बे-ख़ौफ़ हो कर हमारे बुज़ुर्ग नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बुरे अलफ़ाज़ से याद करते और आँजनाब पर नापाक तोहमतें लगाते और बदज़बानी से बाज़ नहीं आते हैं इन से हम क्योंकर सुलह करें। मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि हम समस्त ज़मीन के साँपों और बयाबानों के भेडियों से सुलह कर सकते हैं, लेकिन उन लोगों से हम सुलह नहीं कर सकते जो हमारे प्यारे नबी पर जो हमें अपनी जान और माँ बाप से भी प्यारा है नापाक हमले करते हैं। ख़ुदा हमें इस्लाम पर मौत दे हम ऐसा काम करना नहीं चाहते जिसमें ईमान जाता रहे।"

(पैग़ाम-ए-सुलह, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 23 पृष्ठ 459)

एक दफ़ा का वाक़िया है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मकान के साथ वाले घर में जो अल् बैत-मुबारक कहलाता है। अकेले टहल रहे थे और आहिस्ता-आहिस्ता कुछ गुनगुनाते जाते थे और उसके साथ ही आपकी आँखों से आँसूओं की तार बेहती चली जा रही थी। इस वक़्त एक मुख़लिस दोस्त ने बाहर से आकर सुना तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के सहाबी हज़रत हस्सान बिन साबित का एक शेअर पढ़ रहे थे जो हज़रत हस्सान ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वफ़ात पर कहा था और वह शेअर यह है

كُنْتَ السَّوَادَ لِنَاظِرِیْ فَعَمِیَ عَلَیْكَ النَّاظِرُ
مَنْ شَآءَ بَعْدَكَ فَلْیَمُتْ فَعَلَیْكَ كُنْتُ أُحَاذِرُ

(दीवान हस्सान बिन साबित)

"अर्थात हे ख़ुदा के प्यारे रसूल तू मेरी आँख की पुतली था जो आज तेरी वफ़ात की वजह से अंधी हो गई है। अब तेरे बाद जो चाहे मरे मुझे तो केवल तेरी मौत का डर था जो वाक़्य हो गई"

रावी का वर्णन है कि जब मैंने हज़रत मसीह मौऊद को इस तरह रोते देखा और उस वक़्त आप अल् बैत में बिल्कुल अकेले टहल रहे थे तो मैंने घबरा कर अर्ज़ किया कि हज़रत यह क्या बात है और हुज़ूर को कौन सा सदमा पहुंचा है? आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया मैं इस वक़्त हस्सान बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो का यह शेअर पढ़ रहा था और मेरे दिल में यह आरज़ू पैदा हो रही थी कि "काश यह शेअर मेरी ज़बान से निकलता।"

(सीरत-ए-तय्यबा, पृष्ठ 27 से 28 अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए, अप्रैल 1960 ई.)

जमात अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादयानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"एक रात इस आजिज़ ने इस कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा कि दिलो जान इस से मुअत्तर हो गया। इसी रात ख़ाब में देखा कि फ़रिश्ते आब-ए-ज़ुलाल की शक्ल पर-नूर की मशकें इस आजिज़ के मकान में लिए आते हैं और एक ने उनमें से कहा यह वही बरकात हैं जो तू ने मुहम्मद की तरफ़ भेजी थीं सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम।" (बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग अव्वल, पृष्ठ 598)

यह इशक़-ओ-मुहब्बत थी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से जिसका अंदाज़ा लगाना एक आम इन्सान के बस की बात नहीं। यह इशक़ मुहब्बत की दास्ताँ कोई आरिज़ी वक़्ती और महिज़ जज़बाती कैफ़ीयत न थी बल्कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अंश अंश आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के इशक़ से मामूर था। अल्लाह तआला हमें भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के नक़श-ए-क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। (आमीन)

★ ★ ★

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इशक़

(बशीरुद्दीन क़ादिर, मुरब्बी सिल्सिला, दफ़्तर सप्ताहिक अख़बार बदर कादियान)

किसी भी इन्सान की सीरत का वर्णन एक मुश्किल और कठिन काम है क्योंकि उसके द्वारा आप उसकी मुकम्मल शख़्सियत की तस्वीरकशी कर रहे होते हैं। और यह वर्णन उस वक़्त और मुश्किल हो जाता है जब यह किसी ऐसी आला-ओ--अकरम शख़्सियत के विषय में हो जो समस्त दुनिया के लिए रहमत है, जो फ़ख़र--ए-इन्सानियत है, जिस के लिए रब-ए-करीम ने इस कायनात को रचना की है अर्थात हमारे आक़ा-ओ-मौला हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जिस मुहब्बत और ख़ूबसूरती से अपनी तहरीरात में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत वर्णन की है इस की मिसाल हमें कहीं और नहीं मिलती क्योंकि एक सच्चा आशिक़ ही अपने महबूब की ख़ूबियों को इस ख़ूबसूरती से वर्णन करता है कि उसके एक एक लफ़्ज़ में अपने माशूक़ की मुहब्बत अयाँ हो रही होती है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम से बढ़कर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का कोई सच्चा नहीं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने मंजूम कलाम में फ़रमाते हैं :

بعد از خدا بعشق محمدؐ مخمرم
گر کفر ایں بود بخدا سخت کافرم

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 3 पृष्ठ 185)

आप अलैहिस्सलाम की मुहब्बत और अक़ीदत का अंदाज़ा निम्नलिखित इक़ते-बासात से कर सकते हैं। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"जो लोग नाहक़ ख़ुदा से बे-ख़ौफ़ हो कर हमारे बुज़ुर्ग नबी हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को बुरे अलफ़ाज़ से याद करते और आँजनाब पर नापाक तोहमतें लगाते और बदज़बानी से बाज़ नहीं आते हैं उनसे हम क्योंकर सुलह करें। मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि हम शोरा ज़मीन के साँपों और बयाबानों के भेडियों से सुलह कर सकते हैं लेकिन उन लोगों से हम सुलह नहीं कर सकते जो हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर जो हमें अपनी जान और माँ बाप से भी प्यारा है नापाक हमले करते हैं। ख़ुदा हमें इस्लाम पर मौत दे हम ऐसा काम करना नहीं चाहते जिसमें ईमान जाता रहे।"

(चश्मा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़यन, भाग 23 पृष्ठ 459)

निसन्देह हर मुस्लमान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत करता है और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सीरत तय्यबा को वर्णन करके इज़-हार-ए-मोहब्बत करने को अपनी ख़ुशक़िसमती और बायस-ए-सवाब समझता है। इस ज़माना में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आशिक़ सादिक़ हज़रत--ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सबसे ज़्यादा बढ़कर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत की जिसकी नज़ीर नहीं मिलती। आप हमेशा यही फ़रमाया कि मुझे जो कुछ भी मिला है वह नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सच्ची मुहब्बत और कामिल मुताबअत के फ़ैज़ से ही मिला है। आप अलैहिस्स-लाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ऐसे सच्चे आशिक़ थे कि अल्लाह तआला की तरफ़ से आप बज़रिया स्वप्न "هٰذَا رَجُلٌ يُّحِبُّ رَسُوْلَ اللّٰهِ" की सनद प्राप्त हुई।

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 1 पृष्ठ 598 हाशिया दर हाशिया नंबर : 3)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

क्या चीज़ है कि सच्ची और कामिल पैरवी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद सब बातों से पहले दिल में पैदा होती है। अतः याद रहे कि वह क्लब--ए-सलीम है अर्थात दिल से दुनिया की मुहब्बत निकल जाती है और दिल एक अबदी और लाज़वाल लज़्ज़त का तालिब हो जाता है। फिर बाद उसके एक मुसफ़्फ़ा और कामिल मुहब्बत इलाही बबायस इस क्लब-ए-सलीम के हासिल होती है और ये सब नेअमतें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पैरवी से बतौर विरासत मिलती हैं। जैसा कि अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाता है : قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ (आल-ए-इमरान : 32) अर्थात उन को कह दे कि अगर तुम ख़ुदा से मुहब्बत करते हो तो आओ मेरी पैरवी करो ताकि ख़ुदा भी तुम से मुहब्बत करे बल्कि एक तरफ़ा मुहब्बत का दावा बिल्कुल एक झूठ और उपाहस है। जब इन्सान सच्चे तौर पर ख़ुदा तआला से मुहब्बत करता है तो ख़ुदा भी उस से मुहब्बत करता है। तब ज़मीन पर इसके लिए एक क़बूलीयत फैलाई जाती है और हज़ारों इन्सानों के दिलों में एक सच्ची मुहब्बत उस की डाल दी जाती है और एक ताकत और भावना उस को इनायत होती है और एक नूर उस को दिया जाता है जो हमेशा उस के साथ रहता है।

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 64)

हुज़ूर अक़्दस अलैहिस्सलाम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आला अख़लाक़ की तारीफ़ वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं

"हाँ जो अख़लाक़ फाज़िला हज़रत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का क़ुरआन शरीफ़ में वर्णन है वह हज़रत मूसा से हज़ारहा दर्जा बढ़ कर है क्योंकि अल्लाह तआला ने फ़र्मा दिया है कि हज़रत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम समस्त उन अख़लाक़ फाज़िला का जामा है जो नबियों में अलग अलग तौर पर पाए जाते थे और तथा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हक़ में फरमाया है إِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ तू उच्च अखलाक पर है और अज़ीम के लफ़्ज़ के साथ जिस चीज़ की तारीफ़ की जाए वह अरब के मुहावरा में उस चीज़ के इंतेहाए कमाल की तरफ शारा होता है। उदाहरणतः अगर यह कहा जाए कि यह दरख़्त अज़ीम है तो इस से यह मतलब होगा कि जहां तक दरख़्तों के लिए तूलो अर्ज़ और तनावरी मुम्किन है वे सब इस दरख़्त में हासिल है। ऐसा ही इस आयत का मफ़हूम है कि जहां तक अख़लाक़ फाज़िला-ओ-शमायल हसना नफ़से इंसानी को हासिल हो सकते हैं वे समस्त अख़लाक़ कामिला पूर्ण रूप से मुहम्मदी में मोजूद हैं। अतः ये तारीफ़ ऐसी आला दरजा की है जिस से बढ़ कर मुम्किन नहीं।"

(बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा चहारुम, रूहानी ख़ज़यन, भाग 1 पृष्ठ 606 बक़ीया हाशिया दर हाशिया नंबर : 3)

جان و دلم فدائے جمال محمدؐ است
خاکم نثار کوچہ آل محمدؐ است

(अख़बार रियाज़-ए-हिंद अमृतसर 1 मार्च 1884 ई.)

मेरी जान और दिल मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जमाल पर फ़िदा है और मेरी ख़ाक नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की ऑल के कूचा पर क़ुर्बान है

जब हम सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की हयात-ए-मुबारका पर नज़र डालते हैं तो यह बात हमारे सामने आती है कि आप अलैहिस्सलाम की सारी ज़िंदगी इताअत-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम में गुज़री है।

हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो जो हज़रत मसीह मौऊद की पहली बीवी से सबसे बड़े बेटे थे। आप की ज़िंदगी में जमात अहमदिया में दाख़िल नहीं हुए थे बल्कि आपने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में बैअत की। आपके क़बूल-ए-अहमदीयत से पहले ज़माना की बात है कि इन से एक दफ़ा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के अख़लाक़-ओ-आदात के विषय मे पूछा तो उन्होंने इस पर फ़रमाया कि :

"एक बात मैंने वालिद साहिब (अर्थात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम) में खासतौर पर देखी है वह यह है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ वालिद साहिब ज़रा सी बात भी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। अगर कोई शख़्स आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शान के ख़िलाफ़ ज़रा सी बात भी कहता था तो वालिद साहिब का चेहरा सुरख़ हो जाता था और ग़ुस्से से आँखें मुतग़य्यर होने लगती थीं और फ़ौरन ऐसी मजलिस से उठ कर चले जाते थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से तो वालिद साहिब को इशक़ था। ऐसा इशक़ मैंने किसी शख़्स में नहीं देखा और मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब ने इस बात को बार-बार दोहराया।"

(सीरत तय्यबा अज़ मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो, पृष्ठ 28 से 29)

हज़रत बानी जमात अहमदिया के फ़र्ज़ंद क़मरुल अंबिया हज़रत साहिबज़ादा

मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं

"एक दफ़ा बिल्कुल घरेलू माहौल की बात है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की कुछ तबीयत न-साज़ थी और आप में चारपाई पर लेटे हुए थे और हज़रत अम्मां जान नूरुल्लाह मर्क़दहा और हमारे नाना-जान अर्थात हज़रत मीर नासिर नवाब साहब रज़ियल्लाहु अन्हो मरहूम भी पास बैठे थे कि हज का वर्णन शुरू हो गया। हज़रत नाना-जान ने कोई ऐसी बात कही कि अब तो हज के लिए सफ़र और रस्ते इत्यादि की सहूलत पैदा हो रही है हज को चलना चाहीए उस वक़्त ज़यारत हरमैन शरीफ़ैन के ख्याल में हज़रत मसीह मौऊद की आँखें आँसूओं से भरी हुई थीं और आप हाथ की उंगली से अपने आँसू पोंछते जाते थे हज़रत नानाजान की बात सुन कर फ़रमाया:

"यह तो ठीक है और हमारी भी दिल की ख़्वाहिश है परंतु मैं सोचा करता हूँ कि क्या मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के मज़ार को देख भी सकूँगा?"

यह एक ख़ालिस्तन घरेलू माहौल की बज़ाहिर छोटी सी बात है लेकिन अगर ग़ौर किया जाए तो इस में इस असीमित समुंद्र की जलप्लावन लहरें खेलती हुई नज़र आती हैं जो इश्क़-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के विषय मे हज़रत मसीह मौऊद के क़लब साफ़ी में मोजज़न थीं। हज की किस सच्चे मुस्लमान को ख़ाहिश नहीं परंतु ज़रा उस शख़्स की बेपायां मुहब्बत का अंदाज़ा लगाओ जिसकी रूह हज के तसव्वुर में पर्वानावार रसूल-ए-पाक सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम (मेरी जान आप पर कुर्बान हो) के मज़ार पर पहुंच जाती है और उस की आँखें उस नज़ारा की ताब न लाकर बंद होनी शुरू हो जाती हैं।"

(सीरत तय्यबा, अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो, पृष्ठ 30 से 31)

हज़रत मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि "एक बात जो मैंने खासतौर पर देखी कि हज़रत साहिब (अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के विषय मे वालिद साहिब ज़रा सी बात भी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे अगर कोई शख़्स आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शान में ज़रा सी भी बात कहता था तो वालिद साहिब का चेहरा लाल हो जाता था और आँखें मुतग़य्यर हो जाती थीं और फ़ौरन ऐसी मजलिस से उठकर चले जातेथे। मौलवी-साहब ने वर्णन किया कि मिर्ज़ा साहिब ने इस मज़मून को बार-बार दोहराया और कहा कि हज़रत साहिब से तो वालिद साहिब को इशक़ था। ऐसा इशक़ मैंने कभी किसी शख़्स में नहीं देखा। विनीत अर्ज़ करता है कि हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते थे जब दिसम्बर 1907 ई. में आर्यों ने वछो वाली लाहौर में जलसा किया दूसरों को भी दावत दी तो हज़रत साहिब ने भी उनकी दरख़ास्त पर एक मज़मून लिख कर हज़रत मौलवी-साहब ख़लीफ़ा अव्वल की इमारत में अपनी जमात के चंद आदमियों को लाहौर शिरकत के लिए भेजा। परंतु आर्यों ने खिलाफ-ए--वाअदा अपने मज़मून में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के विषय मे सख़्त बद-कलामी से काम लिया। उसकी रिपोर्ट जब हज़रत साहिब को पहुंची तो हज़रत साहिब अपनी जमात पर सख़्त नाराज़ हुए कि हमारी जमात के लोग इस मजलिस से क्यों न उठकर आए और फ़रमाया कि यह छोटे दर्जा की बेग़ैरती है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को एक मजलिस में बुरा कहा जाए और एक मुस्लमान वहां बैठा रहे और ग़ुस्सा से आपका चेहरा सुर्ख़ हो गया और आप सख़्त नाराज़ हुए कि क्यों हमारे आदमियों ने ग़ैरत-ए-दीनी से काम न लिया। जब उन्होंने बदज़ुबानी शुरू की थी तो फ़ौरन उस मजलिस से उठकर आना चाहिए था।" (सीरतुल महदी हिस्सा अव्वल, भाग 1 पृष्ठ 201 रिवायत नंबर : 196)

आप अलैहिस्सलाम अपने मुक़ाम-ओ-मर्तबा के बारे में फ़रमाते हैं : "मेरे लिए इस नेअमत का पाना मुम्किन न था अगर मैं अपने सय्यद-ओ-मौला फ़ख़रुल अंबिया और ख़ैरुल अंबिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के राहों की पैरवी न करता।" (हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 64)

एक और जगह आपने फ़रमाया ;

"हक़ीक़ी तौर पर मिस्दाक़ इन सब इनायात का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं .. और इस बात को हर जगह याद रखना चाहीए कि हर एक प्रशंसा और सम्मान जो किसी मोमिन के इल्हामात में की जाए वह हक़ीक़ी तौर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की प्रशंसा होती है और वह मोमिन किसी कदर अपने अनुसरण के इस प्रशंसा से हिस्सा हासिल करता है।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग प्रथम, पृष्ठ 580 से 581 हाशिया दर हाशिया नंबर: 3)

परंतु हक़ीक़ी अनुसरण में इशक़ के अर्थ शामिल होते हैं। अगर कोई मज़दूर का अपने काम से इशक़ न हो, इस में जज़बा न हो, तो इस का काम भी उतना आला नहीं होगा। हाँ अगर कोई शख़्स अपने काम से इशक़ रखे तो मालूम होता है कि उस का इशक़ उसके काम को आला कर देता है। मामूल के मुताबिक़, अगर किसी शख़्स को अपने काम से मुहब्बत हो या किसी शोबा से मुहब्बत हो, तो देखा गया है कि उसी के सपुर्द इस काम को कर दिया जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से इशक़ इंतेहा के दर्जा तक पहुंचा तो अल्लाह तआला ने आप ही को हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दीन की तजदीद के लिए चुना

अल्लाह तआला ने क़ुरआन में फ़र्मा दिया है कि इश्क़-ए-रसूल के नतीजा में मैं तुमसे प्यार करूँगा। अब सोचने की बात है कि मुहब्बत इलाही-ए-की क्या अलामात हैं? जो शख़्स अल्लाह से मुहब्बत करता होगा, उसे बिला-शुबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ज़माने में होने की ख़ाहिश महसूस होती होगी कि काश मैं इस ज़माने में होता जब अल्लाह तआला ने अपने प्यारे पर वह्यी नाज़िल की और दुनिया पर एक इन्क़लाब बरपा कर दिया। कितने ख़ुश-क़िस्मत वे सहाबी हैं जिन्हों ने इस वक़्त को देखा और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को माना और उनसे सीखा और इस कामिल रसूल की और उसके ख़ुदा की रज़ा को पाया।

हर सलीम अक़ल यह मानने पर मजबूर रहेगी कि इस शख़्स ने अल्लाह तआला के प्यार को पाया है। इस बात का सरीह सबूत हमें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इस ख़ाब से मिलता है जो आपने 1886 में देखी।

"ख़ाब में देखा कि लोग एक जीवित करने वाले को तलाश करते फिरते हैं और एक शख़्स इस आजिज़ के सामने आया और इशारा से उसने कहा هٰذا رجل یحب رسول اللّٰہیعن। यह वह आदमी है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत रखता है और इस क़ौल से यह मतलब था कि शर्त-ए-आज़म इस ओहदा की मुहब्बत-ए-रसूल है सो वह इस शख़्स में मुतहक़्क़िक़ है।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन, भाग अव्वल, पृष्ठ 598 हाशियादर हाशिया नंबर 3 तज़करः, पृष्ठ 34)

हज़रत-ए-शैख़ याक़ूब अली साहिब इर्फ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हो लिखते हैं कि :

उसने हाथ जोड़ कर आर्यों के तरीक़ पर हज़रत-ए-अक़दस को सलाम किया परंतु हज़रत ने यूंही सिर उठा कर सरसरी तौर पर देखा और वुज़ू करने में व्यस्त रहे। उसने समझा शायद सुना नहीं। उसने फिर (सलाम) किया। हज़रत बदस्तूर इस्तग़राक़ में रहे। वह कुछ देर ठहर कर चला गया। किसी ने कहा कि लेखराम सलाम करता था। फ़रमाया। उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बड़ी तौहीन की है। मेरे ईमान के ख़िलाफ़ है कि मैं इस का सलाम लूं। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पाक ज़ात पर तो हमले करता है और मुझको सलाम करने आया है। (हयात-ए-तय्यबा, पृष्ठ 211)

यह आपकी ग़ैरत का एक नमूना है जो आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मुहब्बत की वजह से जागी। अगर जागी तो इस लिए नहीं कि किसी ने आपको बुरा-भला कहा। नहीं। जागी तो केवल इस लिए कि किसी ने आपके महबूब की गुस्ताख़ी की। आपने किताबें भर दें और इश्तिहारात शाय किए और नज़्में लिखें और खोल खोल कर दुनिया के लिए साबित कर दिया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की गुस्ताख़ी करना नामुमकिन है। आपकी पाक ज़िंदगी पर कोई माक़ूल शख़्स मलामत नहीं कर सकता। आप अलैहिस्सलाम ने समस्त मुख़ालेफ़ीन-ए--इस्लाम के हाथ हर किस्म के हथियार से ख़ाली कर दिए।

आपकी इस ताज्जुबअंगेज़ मुहब्बत ने आसमानों से क़बूलियत पाई और अल्लाह तआला ने आपको और दुनिया को इत्तिला दी कि हम उसके इशक़ को क़बूल करते हैं। इसलिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"मैं हमेशा ताज्जुब की निगाह से देखता हूँ कि यह अरबी नबी जिसका नाम मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम है (हज़ार हज़ार दुरूद और सलाम उस) पर यह किस आली मर्तबा का नबी है इसके आली मक़ाम का इंतेहा मालूम नहीं हो सकता और इस की तासीर-ए-क़ुदसी का अंदाज़ा करना इन्सान का काम नहीं। अफ़सोस कि जैसा हक़ शनाख़्त का है इसके मर्तबा को शनाख़्त नहीं किया गया। वह तौहीद जो दुनिया से गुम हो चुकी थी वही एक पहलवान है जो दुबारा उसको दुनिया में लाया। उसने ख़ुदा से इंतेहाई दर्जा पर मुहब्बत की और इंतेहाई दर्जा पर बनीनौ की हमदर्दी में उसकी जान गुदाज़ हुई। इस लिए ख़ुदा ने जो उसके दिल के राज़ का वाक़िफ़ था उसको समस्त अंबिया और समस्त अव्वलीन और आखरीन पर फ़ज़ीलत बख़शी और उसकी मुरादें उसकी ज़िंदगी में इस को दें।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन, भाग 22 पृष्ठ 118 से 119)

तथा फ़रमाया :

"हे समस्त वे लोगो जो ज़मीन पर रहते हो और ए समस्त वे इन्सानी रूहो, जो

शेष पृष्ठ 16 पर

पृष्ठ 2 का शेष

का हिस्सा पा सकता है।" (हकीकतुल वह्यी रूहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ : 64)

फ़रमाया "यह शरफ़ मुझे केवल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी से हासिल हुआ। अगर मैं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत न होता और आपकी पैरवी न करता तो अगर दुनिया के तमाम पहाड़ों के बराबर मेरे आमाल होते तो फिर भी मैं कभी यह शरफ़ मुकालमा मुख़ातबा हरगिज़ न पाता।"

(तजल्लियात-ए-इलाही। रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 411)

उस नूर पर फ़िदा हूँ उसका ही मैं हुआ हूँ * वह है, मैं चीज़ क्या हूँ, बस फ़ैसला यही है

सब हमने उस से पाया शाहिद है तू ख़ुदाया * वह जिसने हक़ दिखाया वह मा लिक़ा यही है

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कैसा शदीद इशक़ था उसके विषय मे सहाबा किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम की बाअज़ रिवायात पेश हैं

अहमदीयत कि तारीख लिखने वाले लेख मौलाना दोस्त मुहम्मद शाहिद साहिब फ़रमाते हैं

"हज़रत मसीह मौऊद में दो ख़ुलक खासतौर पर नुमायां नज़र आते थे। अव्वल अपने ख़ुदादाद मिशन पर कामिल यक़ीन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के साथ बेनज़ीर इशक़-ओ-मुहब्बत। ये दो विशेषताएं आपके अंदर इस कमाल को पहुंचे हुए थे कि आपके प्रत्येक क़ौल-ओ-फ़ेअल और प्रत्येक हरकत-ओ-सुकून में उनका पुर ज़ोर जलवा नज़र आता था।" (तारीख़ अहमदीयत भाग 2 पृष्ठ 576)

मौलवी रहीम बख़श साहिब एम. ए. की रिवायत है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के बेटे मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब ने एक मर्तबा वर्णन किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से तो पिता साहिब को इशक़ था। ऐसा इशक़ मैं ने कभी किसी शख़्स में नहीं देखा।

(सीरतुल महदी रिवायत नंबर 196 प्रकाशन कादियान 2008)

डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी किसी तक़रीर या मजलिस में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन फ़रमाते तो बसा-औक़ात इन मुहब्बत भरे अलफ़ाज़ में वर्णन फ़रमाते कि "हमारे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम" ने यूं फ़रमाया है। ईसी तरह तहरीर में नाम के बाद पूरा दुरूद यानी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम" लिखा करते थे।

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद एम.ए. रज़ियल्लाहु अन्हो इस रिवायत पर तबसरा करते हुए लिखते हैं :

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हज़रत मसीह मौऊद अलैहि-स्सलाम की मुहब्बत इस कमाल के मुक़ाम पर थी जिस पर किसी दूसरे शख़्स की मुहब्बत नहीं पहुँचती।"

(सीरतुल महदी रिवायत नंबर 548, प्रकाशन कादियान 2008)

हज़रत डाक्टर मीर मुहम्मद इस्माईल साहब रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं मैं ख़ुदा की क़सम खाकर बयान करता हूँ कि मैं ने आपसे बेहतर ,आपसे ज़्यादा ख़लीक़,आपसे ज़्यादा नेक, आपसे ज़्यादा बुज़ुर्ग, आपसे ज़्यादा अल्लाह और रसूल की मुहब्बत में ग़र्क़ कोई शख़्स नहीं देखा,आप एक नूर थे जो इन्सानों के लिए दुनिया पर ज़ाहिर हुआ। और एक रहमत की बारिश थे जो ईमान की लंबी ख़ुशकसाली के बाद इस ज़मीन पर बरसी और उसे शादाब कर गई। अगर हज़रत आयशा रज़िय-ल्लाहु अन्हा ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निसबत यह बात सच्ची कही थी कि "كَانَ خُلُقُهُ الْقُرْاٰنُ" तो हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की निसबत ईसी तरह यह कह सकते हैं कि "كَانَ خُلُقُهُ حُبَّ مُحَمَّدٍ وَاتِّبَاعِهٖ عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ" (सीरतुल महदी रिवायत नंबर 975, प्रकाशन कादियान 2008)

मौलाना ग़ुलाम रसूल साहिब राजीकी रज़ियल्लाहु अन्हो ने बैअत से क़बल आपकी चंद नज़्में पढ़ीं तो आपके दिल ने यह गवाही दी कि

"दुनिया भर में इस शख़्स के बराबर कोई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आशिक़ नहीं हुआ होगा।"

(हयात-ए-क़ुदसी पृष्ठ : 18)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम. ए. रज़ियल्लाहु अन्हो बयान करते हैं :

"अगर हज़रत मसीह-ए-मौऊद अलैहिस्सलाम के अख़लाक़-ए-ज़ाती का अध्य-यन किया जाए तो ख़ुदा और उस के रसूल की मुहब्बत एक निहायत नुमायां हिस्सा लिए हुए नज़र आती है। आपकी प्रत्येक तक़रीर और तहरीर प्रत्येक क़ौल और फ़ेअल प्रत्येक हरकत-ओ-सुकून ईसी इशक़ और प्रेम कि भावना के जज़बा से लबरेज़ पाए जाते हैं और यह इशक़ इस दर्जा कमाल को पहुंचा हुआ था कि तारीख़-ए-आलम में इस की नज़ीर नहीं मिलती, दुश्मन की प्रत्येक सख़्ती को आप इस तरह बर्दाश्त कर जाते थे कि गोया कुछ हुआ ही नहीं और इस की तरफ़ से किसी किस्म की ईज़ा रसानी और तकलीफ़देही और बदज़बानी आपके अंदर जोश-ओ-ग़ैज़-ओ-ग़ज़ब की हरकत न पैदा कर सकती थी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के वजूद बा वजूद के ख़िलाफ़ ज़रासी बात भी आपके ख़ून में वह जोश और उबाल पैदा कर देती थी कि इस वक़्त आपके चेहरा पुर जलाल की वजह से नज़र न जम सकती थी। दुश्मन और दोस्त, अपने और बेगाने सब इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि जो इशक़ और महबत आपको सर्वरे कायनात की ज़ात वाला सिफ़ात से था उसकी नज़ीर किसी ज़माना में किसी मुस्लमान में नहीं पाई गई। ऐसा मालूम होता था कि आपकी ज़िंदगी का सतून और आपकी रूह की ग़िज़ा बस यही मुहब्बत है। जिस तरह एक उम्दा किस्म के स्पंज का टुकड़ा जब पानी में डाल कर निकाला जाए तो इस का प्रत्येक रग और रेशा और प्रत्येक ख़ाना और गोशा पानी से भरपूर निकलता है और इस का कोई हिस्सा ऐसा नहीं रहता कि जिसमें पानी के सिवा कोई और चीज़ हो, ईसी तरह प्रत्येक देखने वाले को नज़र आता था कि आपके जिस्म और रूह मुबारक का प्रत्येक ज़रा इश्क़-ए-इलाही और इश्क़-ए-रसूल से ऐसा भरपूर है कि इस में किसी और चीज़ की गुंजाइश नहीं"

(सीरतुल महदी रिवायत नंबर 324, प्रकाशन कादियान 2008)

तेरी उल्फ़त से है मामूर मेरा हर एक ज़र्रा
अपने सीने में यह एक शहर बसाया हमने
नक़्श-ए-हस्ती तेरी उलफ़त से मिटाया हमने
अपना प्रत्येक ज़र्रा तेरी राह में उड़ाया हमने
दिलबरा मुझको क़सम है तरी यकताई की
आपको तेरी मुहब्बत में भुलाया हम ने

प्रिय पाठकों इशक़ का तक़ाज़ा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद-ओ-सलाम भेजा जाए। सय्यदना हज़रत मसीहमौऊद अलैहिस्सलाम कसरत से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर दुरूद भेजते। शरायत बैअत की तीसरी शर्त में आपने अपनी जमाअत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर बाक़ाय-दगी से दुरूद भेजने की तालीम दी है :

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"एक रात उस आजिज़ ने इस कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ा कि दिल-ओ-जान इस से मुअत्तर हो गया। उसी रात ख़ाब में देखा कि आब-ए-ज़ुलाल की शक्ल पर-नूर की मुशक इस आजिज़ के मकान में लिए आते हैं और एक ने इन में से कहा कि यह वही बरकात हैं जो तू ने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ़ भेजी थीं सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम। और ऐसा ही अजीब एक और क़िस्सा याद आया है कि एक मर्तबा इलहाम हुआ जिसके माने ये थे कि फरिश्तों कि जमाअत के लोग झगडे में हैं यानी इरादा इलाही दीन को जीवित करने के लिए जोश में है लेकिन अभी तक फरिश्तों कि जमाअत पर शख़्स मुह्यी का स्थान निर्धारित नहीं था इस लिए वे इख़ते-लाफ़ में है। इसी समय में ख़ाब में देखा कि लोग एक ज़िंदा करने वाले को तलाश करते फिरते हैं और एक शख़्स इस आजिज़ के सामने आया और इशारा से उसने कहा هٰذَا رَجُلٌ يُّحِبُّ رَسُوْلَ اللّٰهِ यानी यह वह आदमी है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से मुहब्बत है।"

(बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा चहारुम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 598 हाशिया दर हाशिया नंबर : 3)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपने एक अरबी मंजूम कलाम में फ़रमाते हैं :

حَمَامَتُنَا تَطِيْرُ بِرِيْشِ شَوْقٍ
وَفِيْ مِنْقَارِهَا تُحَفُ السَّلَامِ
اِلٰى وَطَنِ النَّبِيِّ حَبِيْبِ رَبِّيْ
وَسَيِّدِ رُسُلِهٖ خَيْرُ الْاَنَامِ

हमारे दिल का कबूतर शौक़ के परों पर सवार हो कर मेरे रब के हबीब सय्यदुल रसूल ख़ैरुल ईनाम के वतन की तरफ़ दुरूद-ओ-सलाम के तहायफ़ लेकर उड़ा जाता है। (हमामतुल बुशरा)

मुअज़्ज़िज़ सामईन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अपने आक़ा-ओ-मसील इशक़ का यह आलम था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के ख़िलाफ़ एक अदना सी बात भी बर्दाश्त नहीं करते।

एक दफ़ा का वर्णन है कि एक अरब ग़ालिबन उस का नाम मोहम्मद सईद था,

कादियान में देर तक रहा। एक रोज़ हुज़ूर अलैहिस्सलाम बाद नमाज़, मस्जिद मुबारक में हाज़रीन-ए-मस्जिद में बैठे हुए रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का वर्णन मुबारक फ़र्मा रहे थे कि इस अरब के मुँह से यह फ़िक़रा निकल गया कि "रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वालही वसल्लम ग़रीब थे" अतः अरब का यह कहना ही था कि हुज़ूर अलैहिस्सलाम को इस क़दर रंज हुआ कि चेहरा मुबारक सुर्ख़ हो गया और मुहम्मद सईद अरब पर वह झाड़ डाली कि वह मुतहय्यर और मबहूत हो कर ख़ामोश हो गया और उस के मुंह का रंग पीला पड़ गया। फ़रमाया "क्या मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ग़रीब था जिसने एक रूमी शाही एलची को उहद पहाड़ पर सारा का सारा माल मवेशी अता कर दिया था इत्यादि। इस को माल-ए-दुनिया से लगाओ और मुहब्बत न थी'" (सीरतुल महदी रिवायत नंबर 1446 मतबूआ कादियान 2008)

हज़रत शैख़ याक़ूब अली साहिब इर्फ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं :

आप कभी किसी शख़्स पर अपने ज़ाती काम और ज़ाती नुक़्सान की वजह से नाराज़ नहीं हुए और कोई ऐसी मिसाल पाई नहीं जाती लेकिन जब कोई मुक़ाबला देन का पेश आ जाए तो आप इस मौक़ा पर कभी उस को नज़रअंदाज नहीं करते थे और इस मामले में वह कभी किसी की पर्वा नहीं करते थे ख़ाह वह कितना ही अज़ीज़ और रिश्तेदारी के ताल्लुक़ात रखने वाला क्यों न हो। यह नामुमकिन था कि आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ या क़ुरआन-ए-मजीद के ख़िलाफ़ कोई बात सुन सकें .. आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ आपको जो मुहब्बत और इशक़ था उसकी नज़ीर नहीं मिलती इसलिए फ़रमाते हैं :

بعد از خدا بعشق محمد ﷺ مخمرم ... گر کفر ایں بود بخدا سخت کافرم

आपके कलाम से पढ़ने से मालूम होता है कि हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कहीं नाम और ज़िक्र आता है, इस वक़्त आपकी हालत बिल्कुल और हो जाती है मुहब्बत और फ़दाईत का एक समुंद्र है जो मौजें मार रहा है। अरबी, फ़ारसी, उर्दू में जो मदह आप अलैहिस्सलाम ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की की है इस की शान ही निराली है। उद्देश्य की तमाम महबूब तरीन चीज़ों में से आपको नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का वजूद बहुत प्यारा था और वे इस मुहब्बत और प्यार को उस वक़्त से रखते जबकि दूध पीते बच्चे थे। ख़ुद फ़रमाते हैं

عشق تُو دارم ازاں روزے کہ بودم شیر خوار

और इस मुहब्बत और इशक़ का नतीजा था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के लिए इस क़दर ग़ैरत और जोश पैदा हो गया था कि इसके लिए सब कुछ क़ुर्बान कर देने को हमेशा तय्यार रहते थे। यह मुहब्बत यह इशक़ एक मार्फ़त का मुक़ाम था। इस का सबूत यह है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के हुस्न और अहसान को जिस रंग में आपने ज़ाहिर किया है तेराह सौ साल के अंदर उसकी नज़ीर नहीं मिलती। उद्देश्य इस ग़ैरत-ए-दीनी ने हमेशा अपने वक़्त पर अपना जलवा दिखाया और यह ज़हूर आपकी बाद बिअसत और क़बल बेअसत एक था जैसा कि मैं वाक़ियात से बताता हूँ।

अभी हज़रत मसीह मौऊद का दुनिया में कोई दावा न था बल्कि दुनिया आपको नहीं जानती थी, बराहीन-ए-अहमदिया भी अभी लिखी जानी शुरू न हुई थी, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक चचा मिर्ज़ा ग़ुलाम हैदर मरहूम थे उनकी पत्नी बी-बी साहिब जान थीं। एक मर्तबा उनके मुँह से हज़रत नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शान में कोई बे-अदबी का कलिमा निकल गया, बावजूद इस एहतेराम के जो आप बुज़ुर्गों का करते थे, इस बात का असर आप की तबीयत पर इस क़दर हुआ और इस क़दर बे-ताबी आपके क़लब में पैदा हुई कि इस का असर आप चेहरा मुबारक से नुमायां था। वह ग़ुस्सा से तमतमा रहा था । इस हालत में आप अलैहिस्सलाम का खाना भी छूट गया केवल इस लिए कि हज़रत करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की शान में क्यूँ-बे अदबी हुई। इस क़दर रंज आपको हुआ कि शब्दों में वर्णन नहीं हो सकता। मख़दूमी ख़ान बहादुर मिर्ज़ा सुलतान अहमद साहिब पैंशनर जो इस रिवायत के रावी हैं वर्णन करते हैंकि हज़रत साहिब को बहुत ही ग़ुस्सा था और उन्होंने इस वाक़िया से प्रभावित हो कर उनके हाँ का खाना पीना तर्क कर दिया। (सीरत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम भाग 2 पृष्ठ 259 अज़ हज़रत याक़ूब अली साहिब इर्फ़ानी रज़ियल्लाहु अन्हो)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी किताब सीरतुल महदी में फ़रमाते हैं कि :

"मुंशी ज़फ़र अहमद कपूरथलवी रज़ियल्लाहु अन्हो ने बज़रीया तहरीर मुझ से वर्णन किया कि लुधियाना का वाक़िया है कि एक दफ़ा सिर दर्द का दौरा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इस क़दर सख़्त हुआ कि हाथ पैर बर्फ़ की मानिंद सर्द हो गए। मैंने हाथ लगा कर देखा तो नब्ज़ बहुत कमज़ोर हो गई थी। आपने मुझे इरशाद फ़रमाया कि इस्लाम पर कोई एतराज़ याद हो तो इस का जवाब देने से मेरे बदन में गरमाई आ जाएगी और दौरा खत्म हो जाएगा। मैंने अर्ज़ की कि हुज़ूर इस वक़्त तो मुझे कोई एतराज़ याद नहीं आता। फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की नाअत में कुछ अशआर आप को याद हूँ तो पढ़ें। मैंने बराहीन-ए--अहमदिया की नज़्म "हे ख़ुदा हे चार-ए-आज़रे मा' ख़ुश-अल्हानी से पढ़नी शुरू कर दी और आपके बदन में गरमाई आनी शुरू हो गई। फिर आप लेटे रहे और सुनते रहे। फिर मुझे एक एतराज़ आ गया .. जब मैंने एतराज़ात सुनाए तो हुज़ूर को जोश आ गया और फ़ौरन आप गए और बड़े ज़ोर की तक़रीर जवाब मे की। और बहुत से लोग भी आ गए और दौरा हट गया।"

(सीरतुल महदी भाग दोम हिस्सा चहारुम रिवायत नंबर : 1039)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए. रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि

"मुंशी ज़फ़र अहमद कपूरथलवी रज़ियल्लाहु अन्हो ने बज़रीया तहरीर मुझसे बयान किया कि एक दफ़ा जब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम लुधियाना में क़ियाम पज़ीर थे मैं और मुहम्मद ख़ान मरहूम, डाक्टर सादिक़ अली साहिब को लेकर लुधियाना गए। (डाक्टर साहिब कपूरथला के रईस और उल्मा में से शुमार होते थे) कुछ अरसा के बाद हुज़ूर मेहंदी लगवाने लगे। उस वक़्त एक आर्या आगया जो एम. ए. था। उसने कोई एतराज़ इस्लाम पर किया। हज़रत साहिब ने डाक्टर साहिब से फ़रमाया आप उनसे ज़रा गुफ़्तगु करें तो मैं मेहंदी लगवा लूँ। डाक्टर साहिब जवाब देने लगे परंत उस आर्या ने जो जवाबी तक़रीर की तो डाक्टर साहिब ख़ामोश हो गए। हज़रत साहिब ने यह देखकर फ़ौरन मेहंदी लगवानी छोड़ दी और उसे जवाब देना शुरू किया और वही तक़रीर की जो डाक्टर साहिब ने की थी परंतु उस तक़रीर को ऐसे रंग में बयान फ़रमाया कि वह आर्या हुज़ूर के आगे सजदा में गिर पड़ा। हुज़ूर ने हाथ से उसे उठाया। फिरवा दोनों हाथों से सलाम कर के पिछले पैरों हटता हुआ वापस चला गया।" (सीरतुल महदी भाग दोम हिस्सा चहारुम रिवायत नंबर : 1032)

पाठकों ! आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ बदज़बानी से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को इतनी शदीद तकलीफ़ होती कि इसके मुक़ाबला पर जान-ओ-माल की तकलीफ़ को आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम बिल्कुल छोटी सी बात समझते। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"अगर ये लोग हमारे बच्चों को हमारी आँखों के सामने क़तल करते और हमारे जानी और दिल के अज़ीज़ों को जो दुनिया के अज़ीज़ हैं टुकड़े टुकड़े कर डालते और हमें बड़ी ज़िल्लत से जान से मारते और हमारे तमाम अम्वाल पर क़बज़ा कर लेते तो واللہ ثم واللہ हमें रंज न होता और इस क़दर कभी दिल न दुखता जो इन गालियों और इस तौहीन से जो हमारे रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की की गई दिखा।" (आईना कमालात-ए-इस्लाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग नंबर 5 पृष्ठ 56)

"मैं ख़ुदा की कसम खा कर कहता हूँ कि मेरे दिल में असली और हक़ीक़ी जोश यही है कि समस्त प्रशंसा और पद्वी और समस्त सिफ़ात जलीला आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ लोटाया करूँ। मेरी तमाम-तर ख़ुशी इसी में है और मेरीआने की असल ग़रज़ यही है कि ख़ुदा तआला की तौहीद और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त दुनिया में क़ायम हो। मैं यक़ीनन जानता हूँ कि मेरी निसबत जिस क़दर तारीफ़ी कलिमात और तमजीदी बातें अल्लाह तालाने बयान फ़रमाई हैं यह भी दरहक़ीक़त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही की तरफ़ लौटने वाली हैं इस लिए कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमका ही का ग़ुलाम हूँ और आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लमही के मिशकात नबुव्वत से नूर हासिल करने वाला हूँ और मुस्तक़िल तौर पर हमारा कुछ नहीं।" (मल्-फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 215 प्रकाशन कादियान 2003)

"नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की फ़ज़ीलत समस्त अंबिया पर मेरे ईमान का बड़ा भाग है और मेरे रग-ओ-रेशा में मिली हुई बात है। यह मेरे इख़्तेयार में नहीं कि इस को निकाल दूं। बदनसीब और आँख न रखने वाला मुख़ालिफ़ जो चाहे सौ कहे। हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वह काम किया है जो न अलग अलग और न मिल मिलकर किसी से हो सकता था और यह अल्लाह तआला का फ़ज़ल है।" (मल्-फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 420 प्रकाशन कादियान : 2003)

अल्लाह तआला हमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्ची मुताबअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए आमीन।

(मंसूर मसरूर)

★ ★ ★

ख़ुतबा जुमा सय्यदना अमीररुल मोमनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामस् एयदा अल्लाह तआला बंसरा उल-अज़ीज़ फ़र्मूदा 10 फरवरी 2023 ई.

"आसमान के नीचे सिर्फ एक ही किताब है जो इस महबूब हक़ीक़ी का चेहरा दिखलाती है अर्थात क़ुरआन शरीफ़।" (हज़रत मसीह मौऊद)

अगर मुस्लमान ज़माने के इमाम को मान लें और कुरान-ए-करीम की तालीम को समझते हुए इस पर अमल करें तो ग़ैर मुस्लिमों को कभी इस तरह क़ुरआन-ए-करीम की तौहीन का साहस न हो

लोग सवाल करते हैं कि ख़ुदा को अगले जहान में देखना है तो किस तरह देखेंगे? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं क़ुरआन-ए--करीम की तालीम पर अमल करो तो उसी जहान में ख़ुदा को देख लोगे

"वह ख़ुदा जो समस्त दुनिया पर गुप्त है वह महज़ क़ुरआन शरीफ़ के ज़रीया से दिखाई देता है।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

क़ुरआन शरीफ़ एक ऐसी हिदायत है कि इस पर अमल करने वाला आला दर्जा के कमालात हासिल कर लेता है और ख़ुदा तआला से इस का एक सच्चा ताल्लुक़ पैदा होने लगता है

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया में ऐसी मिसालें हैं कि ग़ैर मज़हब बल्कि ला मज़हब और ख़ुदा को न मानने वालों को भी ख़ुदा के वजूद का यक़ीन दिलाया गया। अकली दलायल दिए गए और फिर जब निशान दिखाए गए और वाक़ियात बयान किए गए तो उन्होंने मज़हब को भी माना और इस्लाम को भी माना। यहां मग़रिब में भी ऐसे लोग हैं

"इस में एक ज़बरदस्त ताक़त है जो अपने पैरवी करने वालों को ज़न्नी मार्फ़त से यक़ीनी मार्फ़त तक पहुंचा देती है।" (हज़रत मसीह मौऊद अलै-हिस्सलाम)

"ग़रज़ क़ुरआन शरीफ़ की ज़बरदस्त ताक़तों में से एक यह ताक़त है कि इस की पैरवी करने वाले को मोजज़ात और ख़वारिक़ दिए जाते हैं और वह इस कसरत से होते हैं कि दुनिया उनका मुक़ाबला नहीं कर सकती।" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुर मआरिफ़ इर्शादात की रोशनी में क़ुरआन-ए-करीम के फ़ज़ायल, मुक़ाम-ओ-मर्तबा और अज़मत के बारे में ईमान अफ़रोज़ वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक10 फ़रवरी 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुतबे में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इर्शादात क़ुरआन-ए--करीम की अज़मत और एहमीयत के बारे में

वर्णन कर रहा था। आज इस सिलसिले में मज़ीद कुछ पेश करूँगा क़ुरआन-ए--करीम के फ़ज़ाएल और महत्व को वर्णन फ़रमाते हुए अपनी तसनीफ़ तोफ़ा केसरिया में जो मलिका विक्टोरिया की डाइमंड जुबली के अवसर पर आप ने तसनीफ़ फ़रमाई थी जिसमें मलिका को इस्लाम का पैग़ाम दिया था और इस्लाम की तब्लीग़ की थी इस में तहरीर करते हुए आप फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन गूढ़ रहस्यों से परिपूर्ण है और प्रत्येक तालीम में इंजील की निस्बत हक़ीक़ी नेकी के सिखलाने के लिए आगे क़दम रखता है। विशेषता सच्चे और ग़ैर मुतग़य्यर ख़ुदा के देखने का चिराग़ तो क़ुरआन ही के हाथ में है। अगर वह दुनिया में न आया होता तो ख़ुदा जाने दुनिया में मख़लूक़ परस्ती का अदद किस नंबर तक पहुंच जाता। सो शुक्र का मुक़ाम है कि ख़ुदा की वहदानीयत जो ज़मीन से गुम हो गई थी। दुबारा क़ायम हो गई।"

(तोफ़ा केसरिया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 12 पृष्ठ 282)

अब कौन था इस ज़माने में जिसने इतनी जुर्रत से हिंद की महारानी को इस तरह का यह संदेश भेजा हो, इस्लाम की तब्लीग़ की हो

आज यही लोग जिनमें इतनी जुर्रत न थी कि इस्लाम और कुरान-ए-करीम की अज़मत वर्णन करते, हमें यह कहते हैं कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम या जमाअत-ए-अहमदिया क़ुरआन--ए-करीम की तौहीन कर रही है और जो ग़ैर मुस्लिम हैं वह उनकी हरकतें देखकर इस्लाम की मुख़ालिफ़त में इस क़दर अंधे हो गए हैं कि कुरान-ए-करीम की अज़मत का रद्द तो कर नहीं सकते इसलिए दिल की तसकीन के लिए कुरान-ए-करीम के नुस्ख़ों को जला कर अपने दिल की भड़ास निकालते हैं जिस तरह स्वीडन में ये वाक़ियात हो रहे हैं। सकेनडे नियूवेन मुल्कों में होते रहे हैं। पिछले दिनों भी हुआ

अगर मुस्लमान ज़माने के इमाम को मान लें और कुरान-ए-करीम की तालीम को समझते हुए इस पर अमल करें तो ग़ैर मुस्लिमों को कभी इस तरह क़ुरआन-ए-करीम की तौहीन की जुर्रत न हो।

अल्लाह तआला ही उन लोगों को अक़ल दे फिर इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि कुरान-ए-करीम ही सिर्फ अब हिदायत का माध्यम है

आप फ़रमाते हैं : "इस्लाम एक ऐसा बाबरकत और ख़ुदा नुमा मज़हब है कि अगर कोई शख़्स सच्चे तौर पर इस की पाबंदी इख़तेयार करे और उन तालीमों और हिदायतों और वसीयतों पर कारबन्द हो जाए जो ख़ुदाए तआला के पाक कलाम क़ुरआन शरीफ़ में वर्णित हैं तो वे इसी जहान में ख़ुदा को देख लेगा।"

लोग सवाल करते हैं कि ख़ुदा को अगले जहान में देखना है तो किस तरह देखेंगे फ़रमाते हैं क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर अमल करो तो इसी जहान में ख़ुदा को देख लोगे।

"वह ख़ुदा जो दुनिया की नज़र से हज़ारों पर्दों में है उस की शनाख़्त के लिए बजुज़ क़ुरआन तालीम के और कोई भी ज़रीया नहीं क़ुरआन शरीफ़ माक़ूली रंग में और आसमानी निशानों के रंग में निहायत सहल और आसान तरीक़ से ख़ुदाए तआला की तरफ़ रहनुमाई करता है।"

इस की तालीम पर अमल करोगे तो निशानात ऐसे ज़ाहिर होंगे कि ख़ुदा के वजूद का पता लग जाएगा। फ़रमाया "और इस में एक बरकत और क़ुव्वत-ए-जाज़िबा है जो ख़ुदा के तालिब को दम-ब-दम ख़ुदा की तरफ़ खींचती और रोशनी और सकेंत और इतमेनान बख़शती है और क़ुरआन शरीफ़ पर सच्चा ईमान लाने वाला सिर्फ़ फ़लसफ़ियों की तरह यह ज़न नहीं रखता कि इस पर हिक्मत-ए-आलम का बनाने

वाला कोई होना चाहिए बल्कि वह एक ज़ाती बसीरत हासिल करके और एक पाक रोयात से मुशर्रफ़ हो कर यक़ीन की आँख से देख लेता है कि वास्तव में वह सीने मौजूद है और इस पाक कलाम की रोशनी हासिल करने वाला महिज़ ख़ुशक माक़ूलियों की तरह यह गुमान नहीं रखता कि ख़ुदा वाहिद-ए-लाशरीक है बल्कि सदहा चमकते हुए निशानों के साथ जो इसका हाथ पकड़ कर ज़ुल्मत से निकालते हैं वाक़ई तौर पर मुशाहिदा कर लेता है कि दरहक़ीक़त ज़ात और सिफ़ात में ख़ुदा का कोई भी शरीक नहीं और न सिर्फ इस क़दर बल्कि वह अमली तौर पर दुनिया को दिखा देता है कि वह ऐसा ही ख़ुदा को समझता है और वहदत-ए-इलाही की अज़मत ऐसी उसके दिल में समा जाती है कि वह इलाही इरादा के आगे समस्त दुनिया को एक मरे हुए कीड़े की तरह बल्कि मतलक़ लाशे और पूर्णतः खत्म समझता है।"

(बराहीन-ए-अहमदिया हिस्सा पंजुम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 25-26)

फिर क़ुरआन-ए-करीम में इलमी और अमली तकमील की का वर्णन फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं : "यह भी याद रखना चाहिए कि कुरान-ए-करीम में इलमी और अमली तकमील की हिदायत है।" मुकम्मल तौर पर इलम से नवाज़ा गया है और अमली हिदायात दी गई हैं। इसलिए फ़रमाया कि "इसलिए اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ (अल् फ़ातिहा : 6) मैं तकमील-ए-इलमी की तरफ़ इशारा है।" अर्थात क़ुरआन-ए-करीम ही वह मुकम्मल किताब है जिसकी तालीम सही रास्ते पर राहनुमाई करती है।" और तकमील-ए-अमली का वर्णन صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ (अल् फ़ातिहा : 7) मैं फ़रमाया कि जो नतायज अकमल और अतम हैं वह हासिल हो जाएं।" अमली तरक़्क़ी के लिए उन लोगों के रास्ते पर चलने की दुआ है जो ईनाम याफ़्ता हैं। जिनका पिछले जुमा में मैं ने वर्णन किया था कि कौन लोग ईनाम-ए-याफ़्ता हैं। नबी हैं, सिद्दीक़ हैं, शहीद हैं, सालेहीन हैं। और फिर उनकी मिसालें भी मौजूद हैं और इस ज़माने में भी ऐसे लोग हैं जो हिदायत याफताह हैं जिनको इनामात से अल्लाह तआला नवाज़ता है। फ़रमाया "जैसे एक पौधा जो लगाया गया है जब तक पूरा नशव-ओ-नुमा हासिल न करे उसको फल फूल नहीं लग सकते इसी तरह अगर किसी हिदायत के आला और अकमल नतायज मौजूद नहीं हैं वह हिदायत मुर्दा हिदायत है जिसके अंदर कोई नशव-ओ-नुमा की क़ुव्वत और ताक़त नहीं है। जैसे अगर किसी को वेद की हिदायत पर पूरा अमल करने से कभी यह उम्मीद नहीं हो सकती कि वह हमेशा की मुक्ती या निजात हासिल कर लेगा और कीड़े मकोड़े बनने की हालत से निकल कर दाइमी आनंद पा लेगा तो इस हिदायत से किया हासिल। मगर क़ुरआन शरीफ़ एक ऐसी हिदायत है कि इस पर अमल करने वाला आला दर्जा के कमालात हासिल कर लेता है और ख़ुदा तआला से इस का एक सच्चा ताल्लुक़ पैदा होने लगता है।

यहां तक कि इस के आमाल-ए-सालहा जो क़ुरआन हिदायतों के मुवाफ़िक़ किए जाते हैं वह एक शजर-ए-तय्यब की मिसाल जो क़ुरआन शरीफ़ में दी गई है बढ़ते हैं और फल फूल लाते हैं। एक ख़ास किस्म की हलावत और ज़ायक़ा उनमें पैदा होता है।"

(मल्-फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 188-189 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन-ए-मजीद एक ऐसी पाक किताब है जो उस वक़्त दुनिया में आई थी जबकि बड़े बड़े फ़साद फैले हुए थे और बहुत सी एतेक़ादी और अमली गलतियां रायज हो गई थीं और तक़रीबन सब के सब लोग बदआमालियों और बद अकीदगियों में गिरफ़्तार थे। इसी की तरफ़ अल्लाह जल्ला शानहू क़ु-रआन-ए-मजीद में इशारा फ़रमाता है। ظَهَرَ الۡفَسَادُ فِى الۡبَرِّ وَالۡبَحۡرِ (अल् रौम : 42) अर्थात समस्त लोग क्या अहल-ए-किताब और क्या दूसरे सब के सब बुरी आस्थाओं में मुबतला थे और दुनिया में फ़साद-ए-अज़ीम बरपा था। उद्देश्य ऐसे ज़माना में ख़ुदा तआला ने समस्त अक़ायद-ए-बातिला की तरदीद के लिए कुरान--ए-मजीद जैसी कामिल किताब हमारी हिदायत के लिए भेजी जिस में समस्त मज़ा-हिब-ए-बातिला का रद् मौजूद है और विशेषता सूरः फ़ातिहा में जो पंज वक़्त प्रत्येक नमाज़ की प्रत्येक रकात में पढ़ी जाती है इशारा के तौर पर समस्त अक़ायद का वर्णन है जैसे फ़रमाया। اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعَالَمِيۡنَ (फ़ातिहा : 2) अर्थात सारी खूबियां उस ख़ुदा के लिए सज़ावार हैं जो सारे जहानों को पैदा करने वाला है। اَلرَّحۡمٰن वह बग़ैर आमाल के पैदा करने वाला है और बग़ैर किसी अमल के इनायत करने वाला है।" इस की रहमानियत काम करती है। "اَلرَّحِيۡم आमाल का फल देने वाला।" जो काम करो उसका फल देता है, जो दुआएं करो उनको क़बूल करता है। ' مَالِكِ يَوۡمِ الدِّيۡنِ (फ़ातिहा : 4) जज़ा सज़ा के दिन का मालिक।" और जज़ा सज़ा इस दुनिया में भी है और अगले जहान में भी। फ़रमाया कि "इन चार सिफ़तों में कुल दुनिया के फ़िर्क़ों का वर्णन किया गया है।"

(मल्-फ़ूज़ात भाग 10 पृष्ठ 31-32 ऐडीशन 1984 ई.)

अब ग़ौर से अगर इन्सान पाँच वक़्त नमाज़ों में यह पढ़े तो बड़ी मार्फ़त हासिल कर सकता है फिर इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि

क़ुरआन एक चमत्कार है

आप फ़रमाते हैं : "चमत्कार की असल हक़ीक़त यह है कि मोजिज़ा ऐसे अमर ख़ारिक़ आदत को कहते हैं कि फ़रीक़े मुख़ालिफ़ उसकी नज़ीर पेश करने से आजिज़ आ जाए।" कोई मिसाल पेश न कर सके।" ख़ाह वह अमर बज़ाहिर नज़र-ए-इन्सा-नी की ताक़तों के अंदर ही मालूम हो जैसा कि कुरान-ए-शरीफ़ का मोजिज़ा जो मुल्क अरब के समस्त बाशिंदों के सामने पेश किया गया था। अतः वह अगरचे बंज़र सरसरी इन्सानी ताक़तों के अंदर मालूम होता था लेकिन इस की नज़ीर पेश करने से अरब के समस्त बाशिंदे आ गए। पस

चमत्कार की हक़ीक़त समझने के लिए क़ुरआन शरीफ़ का कलाम निहायत रोशन मिसाल है

कि बज़ाहिर वह भी एक कलाम है जैसा कि इन्सान का कलाम होता है लेकिन वह अपनी फ़सीह तक़रीर के लिहाज़ से और निहायत लज़ीज़ और मुसफ़्फ़ा और रंगीन इबारत के लिहाज़ से जो प्रत्येक जगह हक़ और हिक्मत की पाबंदी का इल्तिज़ाम रखती है और नीज़ रोशन दलायल के लिहाज़ से जो समस्त दुनिया के मुख़ालिफ़ाना दलायल पर ग़ालिब आगईं और नीज़ ज़बरदस्त भविष्यवाणी के लिहाज़ से एक ऐसा लाजवाब चमत्कार है जो बावजूद गुज़रने तेराह सौ बरस के अब तक कोई मुख़ालिफ़ इस का मुक़ाबला नहीं कर सका और न किसी को ताक़त है जो करे। क़ुरआन शरीफ़ को समस्त दुनिया की किताबों से यह विशेषत हासिल है कि वह मोजज़ाना भविष्य-वाणी को भी मोजज़ाना इबारात में जो आला दर्जा की बलाग़त और फ़साहत से परिपूर्ण और हक़ और हिक्मत से भरी हुई हैं बयान फ़रमाता है। ग़रज़ असली और भारी मक़सद मोजिज़ा से हक़ और बातिल या सादिक़ और काज़िब में एक इमतेयाज़ दिखलाना है और ऐसे इमटतेयाज़ी अमर का नाम मोजिज़ा या दूसरे लफ़्ज़ों में निशान है। निशान एक ऐसा ज़रूरी बात है कि इसके बग़ैर ख़ुदाए तआला के वजूद पर भी पूरा यक़ीन करना मुम्किन नहीं और न वह समरा हासिल होना मुम्किन है कि जो पूरे यक़ीन से हासिल हो सकता है। यह तो ज़ाहिर है कि मज़हब की असली सच्चाई ख़ुदा तआला की हस्ती की शनाख़्त से है।

सच्चे मज़हब के ज़रूरी और अहम लवाज़म में से यह अमर है कि इस में ऐसे निशान पाए जाएं जो ख़ुदाए तआला की हस्ती पर क़तई और यक़ीनी दलालत करें और वह मज़हब अपने अंदर ऐसी ज़बरदस्त ताक़त रखता हो जो अपने पैरौ का ख़ुदाए तआला के हाथ से हाथ मिला दे।"

ऐसा ताल्लुक़ पैदा कर दे अल्लाह से। "केवल बनावटी वस्तुओं पर नज़र करके स्रष्टा की केवल ज़रूरत ही महसूस करना और इस की वाक़ई हस्ती पर सूचना न पाना यह कामिल ख़ुदा शनासी के लिए काफ़ी नहीं है। "केवल इतना ही पता करना कि कोई बनाने वाला है, इतना ही काफ़ी नहीं है"

"और इसी हद तक ठहरने वाले कोई सच्चा ताल्लुक़ ख़ुदाए तआला से हासिल नहीं कर सकते और न अपने नफ़्स को जज़बात नफ़सानिया से पाक कर सकते हैं।" केवल इतना इलम हो जाना कि कोई है, इस से तो नफ़्स की सफ़ाई नहीं हो सकती, न अल्लाह तआला से ताल्लुक़ पैदा हो सकता है। "इस से अगर कुछ समझा जाता है तो केवल इस क़दर कि इस तरकीब मुहकम और अबलग़ का कोई स्रष्टा होना चाहिए न यह कि दरहक़ीक़त वह स्रष्टा है भी।" अर्थात जो भी कायनात में और दुनिया में हमें नज़र आता है इस का कोई बनाने वाला भी है। यह असल इलम भी चाहिए।

और जब उसका इलम हो कि कौन है वह? और जिस ख़ुदा की हम इबादत करते हैं वह है वह ख़ुदा तो फिर हक़ीक़ी ताल्लुक़ भी पैदा होता है। फिर अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलने की तरफ़ तवज्जा भी पैदा होती है। फिर इन्सान अपने नफ़्स की इस्लाह की तरफ़ भी तवज्जा करता है।

फ़रमाया : "और ज़ाहिर है कि केवल ज़रूरत को महसूस करना एक क़ियास है जो रोयत का क़ायम मक़ाम नहीं हो सकता और न रोयत के पाक नताइज इस से पैदा हो सकते हैं।" किसी को क़ियास करना और देखने में बड़ा फ़र्क़ है। "अतः जो मज़हब इन्सान की ख़ुदा शनासी को सिर्फ होना चाहिए के नाक़िस मरहला तक छोड़ता है वह उस की अमली हालत का चारागर नहीं है। अतः दरहक़ीक़त ऐसा मज़हब एक मुर्दा मज़हब है जिससे किसी पाक तबदीली की तवक़्क़ो रखना एक व्यर्थ का काम है। ज़ाहिर है कि केवल अकली दलायल मज़हब की सच्चाई के लिए कामिल शहादत

नहीं हो सकते और यह ऐसी मोहर नहीं है कि कोई जालसाज़ उसके बनाने पर क़ादिर न हो बल्कि यह तो अक़ल के चश्म-ए-आम की एक गदागरी मुतसव्वर हो सकती है।" केवल अकली दलीलें तो दी जा सकती हैं या अक़ल से कोई बहुत बड़ी बातें भी कर सकता है लेकिन इतना ही काफ़ी नहीं है जब तक कि अल्लाह तआला की सिफ़ात को इन्सान न जाने और उनसे इस्तेफ़ादा न करे।

फ़रमाया : "फिर इस बात का कौन फ़ैसला करे कि अकली बातें जो एक किताब ने लिखें दरहक़ीक़त वह इल्हामी हैं या किसी और किताब से चुरा कर लिखी गई हैं। और अगर फ़र्ज़ भी करलीं कि वह चुराई हुई नहीं हैं तो फिर भी हस्ती बारी तआला पर वह कब दलील क़ाते हो सकती हैं और कब किसी तालिब-ए-हक़ का नफ़्स इस बात पर पूरी तसल्ली पा सकता है कि फ़क़त वही अकली बातें यक़ीनी तौर पर आयत ख़ुदा नुमा हैं और कब यह इतमीनान भी हो सकता है कि वे बातें पूर्णतः ग़लती से पाक हैं।" अर्थात वे ऐसे निशानात हैं जो अल्लाह तआला की तरफ़ ले जाने वाले हैं या हर किस्म की ग़लती से पाक हैं। "अतः अगर एक मज़हब सिर्फ़ चंद बातों को अक़ल या फ़लसफ़ा की तरफ़ मंसूब करके अपनी सच्चाई की वजह वर्णन करता है और आसमानी निशानों और ख़ारिक़ आदत उमूर के दिखलाने से क़ासिर है तो ऐसे मज़हब का पैरौ फ़रेब-ख़ुर्दा या फ़रेब दिहिंदा है ओ रूह तारीकी में मरेगा। उद्देश्य केवल अकली दलायल से तो ख़ुदाए तआला का वजूद भी यक़ीनी तौर पर साबित नहीं हो सकता जबकि किसी मज़हब की सच्चाई इस से साबित हो जाएगी और जब तक एक मज़हब इस बात का ज़िम्मेवार न हो कि वह ख़ुदा की हस्ती को यक़ीनी तौर पर साबित करके दिखलाय तब तक वह मज़हब कुछ चीज़ नहीं है और बदक़िस्मत है वह इन्सान जो ऐसे मज़हब पर फ़रेफ़्ता हो। प्रत्येक वह मज़हब लानत का दाग़ अपनी पेशानी पर रखता है जो इन्सान की मार्फ़त को इस मरहला तक नहीं पहुंचा सकता जिससे गोया वह ख़ुदा को देख ले।"

(बराहीन-ए-अहमदिया भाग पंजुम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 21 पृष्ठ 59 से 61)

अतः यह है वह मुक़ाम जिसको हासिल करने की हमें कोशिश करनी चाहिए।

ख़ुदा को पहचानें। निशानों से पहचानें। ज़ाती ताल्लुक़ से पहचानें केवल अकली दलायल नहीं और फिर जो हक़ीक़त है अल्लाह तआला की वह हक़ीक़त इन्सान पर खुलती है।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया में ऐसी मिसालें हैं कि ग़ैर मज़हब बल्कि ला मज़हब और ख़ुदा को न मानने वालों को भी ख़ुदा के वजूद का यक़ीन दिलाया गया। अकली दलायल दिए गए और फिर जब निशान दिखाए गए और वाक़ियात वर्णन किए गए तो उन्होंने मज़हब को भी माना और इस्लाम को भी माना। यहां मग़रिब में भी ऐसे लोग हैं।

उदाहरणतः बेल्जियम के एक बेल्जियन दोस्त थे। नास्तिक थे। इंडोनेशियन औरेजन के थे फिर बेल्जियम आ गए और वहीं के हो गए। उन्होंने बैअत की और मुझे ख़ुद उन्होंने बताया मैंने जब ख़ुदा तआला के वजूद को तस्लीम कर लिया न सिर्फ अक़ल से बल्कि वास्तविक तर्कों से और निशानात से तो फिर मेरे लिए और कोई चारा न था कि मैं अहमदीयत और हक़ीक़ी इस्लाम को तस्लीम करूँ और कहते हैं यह रास्ता क्योंकि मुझे अहमदीयत ने दिखाया था इसलिए मैं अहमदी मुस्लमान हुआ फिर क़ुरआन-ए-करीम दावा करता है कि यह मुत्तक़ियों के लिए हिदायत है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इस बारे में फ़रमाते हैं कि "इन आयात में जो मार्फ़त का नुक्ता मख़फ़ी है वह यह है कि .. ख़ुदा तआला ने यह फ़रमाया है कि الٓمٓ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ فِيْهِ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ (अल् बकरः : 2-3) यानी यह वह किताब है जो ख़ुदा तआला के इलम से ज़हूर पज़ीर हुई है और चूँकि उस का इलम जहल और निस्यान से पाक है।' जहालत और भूल चौक से पाक है "इस लिए यह किताब प्रत्येक शक-ओ-शुबा से ख़ाली है और चूँकि ख़ुदा तआला का इलम इन्सानों की तकमील के लिए अपने अंदर एक कामिल ताक़त रखता है इस लिए यह किताब मुत्तक़ीन के लिए एक कामिल हिदायत है। और उनको इस मुक़ाम तक पहुंचाती है जो इन्सानी फ़ितरत की प्रगति के लिए आख़िरी मुक़ाम है। और फिर इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि मुत्तक़ी कौन हैं जिनको हिदायत फ़रमाता है, फ़रमाते हैं "ख़ुदा इन आयात में फ़रमाता है कि

मुत्तक़ी वे हैं कि जो गुप्त ख़ुदा पर ईमान लाते हैं और नमाज़ को क़ायम करते हैं और अपने मालों में से कुछ ख़ुदा की राह में देते हैं और क़ुरआन शरीफ़ और पहली किताबों पर ईमान लाते हैं वही हिदायत के सिर पर हैं और वही निजात पाएँगे।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 136-137)

यह मुत्तक़ी की तारीफ़ है फिर क़ुरआन बतौर दीन होने के बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "यह अमर साबित शूदा है कि क़ुरआन शरीफ़ ने दीन के कामिल करने का हक़ अदा कर दिया है जैसा कि वह ख़ुद फ़रमाता है। اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا (अल् मायदा : 4) अर्थात आज मैंने तुम्हारा दीन तुम्हारे लिए कामिल कर दिया है और अपनी नेअमत तुम पर पूरी कर दी है और मैं इस्लाम को तुम्हारा दीन चुन करके ख़ुश हुआ। अतः क़ुरआन शरीफ़ के बाद किसी किताब को क़दम रखने की जगह नहीं क्योंकि जिस क़दर इन्सान की हाजत थी वह सब कुछ क़ुरआन शरीफ़ वर्णन कर चुका अब केवल मुकालमात-ए-इलाही का दरवाज़ा खुला है और वह भी ख़ुद बख़ुद नहीं बल्कि सच्चे और पाक मुकालमात जो सरीह और खुले तौर पर नुसरत-ए-इलाही का रंग अपने अंदर रखते हैं और बहुत से उमूर ग़ैबिया पर मुश्तमिल होते हैं वह बाद तज़किया नफ़्स महिज़ पैरवी कुरान-ए-शरीफ़ और इत्तिबा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से हासिल हैं।"

(चशमा-ए-मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 80)

अफ़सोस कि हमारे मुख़ालेफ़ीन यह मार्फ़त की बातें सुनना नहीं चाहते और हम पर इल्ज़ाम लगाते हैं कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) हमने क़ुरआन-ए-करीम में फैर बदल कर दी। क़ुरआन-ए-करीम के बतौर तिब्ब-ए-रुहानी के बारे में

आप अलैहिस्सलाम अपनी तसनीफ़ चशमा मार्फ़त में फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ एक ऐसी पुर हिकमत किताब है जिसने तिब्ब-ए-रुहानी के क़वायद-ए--कुल्लिया को अर्थात दीन के उसूल को जो दरअसल तिब्ब-ए-रुहानी है तिब्ब-ए--जस्मानी के क़वायद कुल्लिया के साथ समानता दी है।" इस के मुताबिक़ ठहराया है। "और यह समानता एक ऐसी लतीफ़ है जो कई सौ मआरिफ़ और हक़ायक़ के खुलने का दरवाज़ा है और सच्ची और कामिल तफ़सीर क़ुरआन शरीफ़ की वही शख़्स कर सकता है जो तिब्ब-ए-जस्मानी के क़वायद कुल्लिया पेश-ए-नज़र रख कर क़ुरआन शरीफ़ के वर्णन करदा क़वायद में नज़र डालता है। "फ़रमाया कि "एक दफ़ा मुझे बाअज़ मुहक़्क़िक़ और हाज़िक़ तबीबों की बाअज़ किताबें कशफ़ी रंग में दिखलाई गईं।" अल्लाह तआला ने ख़ुद राहनुमाई फ़रमाई। बाअज़ तबीबों की कशफ़ी रंग में किताबें दिखलाई गईं "जो तिब्ब-ए-जस्मानी के क़वायद कुल्लिया और उसूल इलमिया और सत्ता ज़रुरिया इत्यादि की बेहस पर मुश्तमिल और मुतज़म्मिन थीं।" इस विषय में थीं" जिनमें तिब्ब हाज़िक़ क़ुरशी की किताब भी थी।" उनमें से एक किताब क़ुरशी जो हकीम हैं उनकी भी थी" और इशारा किया गया कि यही तफ़सीर क़ुरआन है इस से मालूम हुआ कि शरीर का ज्ञान और संसार के ज्ञान में निहायत गहरे और अमीक़ ताल्लुक़ात हैं और एक दूसरे के मुसद्दिक़ हैं और जब मैंने उन किताबों को पेश-ए-नज़र रखकर जो तिब्ब-ए- जस्मानी की किताबें थीं कुरान--ए-शरीफ़ पर नज़र डाली तो वह अमीक़ दर अमीक़ तिब्ब-ए-जिस्मानी के पूर्णतः क़वायद की बातें निहायत बलीग़ पैराया में क़ुरआन शरीफ़ में मौजूद पाईं।"

(चश्म-ए-मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 102-103)

अर्थात जस्मानी और रुहानी ईलाज के लिए भी क़ुरआन-ए-करीम से ही सही मदद मिलती है और इस में ग़ौर करने के लिए, मार्फ़त हासिल करने के लिए ज़माने के इमाम की बातों को सुनने की ज़रूरत है, उस के लिटरेचर को पढ़ने की ज़रूरत है फिर इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि ताल्लुक़ बिल्लाह का असल ज़रीया क़ुरआन-ए-करीम ही है

आप फ़रमाते हैं "याद रहे कि इन्सान उस ख़ुदा-ए परोक्ष को कदापि अपनी क़ुव्वत से शनाख़्त नहीं कर सकता जब तक वह ख़ुद अपने बारे में अपने निशानों से शनाख़्त न करावे और ख़ुदा तआला से सच्चा ताल्लुक़ कदापि पैदा नहीं हो सकता जब तक वह ताल्लुक़ ख़ास ख़ुदा तआला के ज़रीया से पैदा न हो और नफ़सानी इच्छाएं कदापि नफ़्स में से निकल नहीं सकतीं जब तक ख़ुदाए क़ादिर की तरफ़ से एक रोशनी दिल में दाख़िल न हो और देखो कि मैं इस शहादत-ए-रवैय्यत को पेश करता हूँ कि वह ताल्लुक़ महज़ क़ुरआन-ए-करीम की पैरवी से हासिल होता है दूसरी किताबों में अब कोई ज़िंदगी नहीं और आसमान के नीचे केवल एक ही किताब है जो इस महबूब हक़ीक़ी का चेहरा दिखलाती है अर्थात क़ुरआन शरीफ़।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 2)

अतः क़ुरआन-ए-करीम के हुक्मों पर अमल करने से ख़ुदा तआला का चेहरा देखा जा सकता है

हम अहमदियों के लिए भी यह ग़ौर का मुक़ाम है। हम में कितने हैं जो क़ुरआन--ए-करीम की तालीम पर अमल करते हैं, ग़ौर से देखते हैं, पढ़ते हैं। इस के लिए हमें भरपूर कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला हमें इस की तौफ़ीक़ भी दे।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 9-16 March 2023 Issue No. 10-11

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

हमारा और उन ईमानदारों का जो हमसे पहले गुज़र चुके हैं यह चश्मदीद वृत्तान्त और व्यक्तिगत अनुभव है कि पवित्र क़ुर्आन और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे अनुकरण में जो निष्कपटता और श्रद्धा से हो यह विशेषता है की धीरे-धीरे भागीदार रहित एक ख़ुदा का प्रेम दिल में बैठता जाता है और ख़ुदा के कलाम की रूहानी शक्ति मनुष्य की रूह को एक रोशनी प्रदान करती है जिस से उसकी आंख खुलती है और अन्ततः उसे दूसरे लोक (परलोक) के चमत्कार दिखाई देते हैं। तो उस दिन से उसको ज्ञान द्वारा विश्वास के तौर पर पता लगता है कि ख़ुदा है और फिर वह विश्वास उन्नति करता जाता है यहां तक कि ज्ञान द्वारा विश्वास से आंखों देखे विश्वास तक पहुँचता है और फिर आंखों देखे विश्वास से अटल विश्वास तक पहुँच जाता है। जो व्यक्ति पवित्र क़ुर्आन और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाता है उसे पहले कोई आत्म शुद्धि प्राप्त नहीं होती और कई प्रकार के गुनाह में ग्रस्त होता है फिर ख़ुदा की दया (रहमत) उसकी सहायता करती है और विलक्षण ढंगों से उसके ईमान को शक्ति दी जाती है, और जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में वादा है कि

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

यूनुस-65) अर्थात् ईमानदारों को ख़ुदा की ओर से ख़ुशख़बरियां मिलती रहती) हैं। ऐसा ही वह भी अपने बारे में कई प्रकार की ख़ुशख़बरियां पाता रहता है और जैसे-जैसे उन ख़ुशख़बरियों के द्वारा उसका ईमान पुख़्ता होता जाता है वैसे-वैसे वह गुनाह से बचता और नेकियों की ओर चलता है।

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 423-424)

इस्लाम की बरतरी पर एक मज़मून में जो आर्या समाज के जलसा में पढ़ा गया इस में क़ुरआन शरीफ़ की इमतेयाज़ी विशेषताओं

का वर्णन फ़रमाते हुए आप फ़रमाते हैं कि "वह इतेयाज़ी निशान कि जो इल्हामी किताब की शनाख़्त के लिए अक़्ल-ए-सलीम ने क़रार दिया है वह सिर्फ़ ख़ुदा तआला की मुक़द्दस किताब क़ुरआन शरीफ़ में पाया जाता है और इस ज़माना में वह समस्त ख़ूबियां जो ख़ुदा की किताब में इमतेयाज़ी निशान के तौर पर होनी चाहिऐं दूसरी किताबों में पूर्णतः नहीं हैं मुम्किन है कि उनमें वह ख़ूबियां पहले ज़माना में होंगी मगर अब नहीं हैं और जबकि हम एक दलील से जो हम पहले लिख चुके हैं उनको इल्हामी किताबें समझते हैं परंतु वह गो इल्हामी हूँ लेकिन अपनी मौजूदा हालत के लिहाज़ से बिल्कुल व्यर्थ हैं और उस शाही क़िला की तरह हैं जो ख़ाली और वीरान पड़ा है और दौलत और फ़ौजी ताक़त सब इस में से कूच कर गईं हैं।"

फिर इमतेयाज़ी ख़ूबियों का मज़ीद वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "अब मैं क़ुरआन शरीफ़ इमतेयाज़ी ख़ूबयां जो इन्सानों की ताक़त से बरतर हैं निम्नलिखित में वर्णन करता हूँ।" फ़रमाया "प्रथम यह कि इस में एक ज़बर-दस्त ताक़त है जो अपने पैरवी करने वालों को ज़न्नी मार्फ़त से यक़ीनी मार्फ़त तक पहुंचा देती है।"

केवल ज़न नहीं होता बल्कि यक़ीन होता है और यक़ीनी मार्फ़त पैदा हो जाती है। "और रूह यह कि जब एक इन्सान कामिल तौर पर इस की पैरवी करता है तो ख़ुदाई ताक़त के नमूने मोजिज़ा के रंग में उस को दिखाए जाते हैं और ख़ुदा उस से कलाम करता है और अपने कलाम के ज़रीया से ग़ैबी उमूर पर उस को सूचना देता है और मैं इन क़ुरआनी बरकात को क़िस्सा के तौर पर वर्णन नहीं करता बल्कि मैं वे मोजज़ात पेश करता हूँ कि जो मुझको ख़ुद दिखाए गए हैं। वे समस्त मोजज़ात एक लाख के क़रीब हैं बल्कि ग़ालिबन वे एक लाख से ज़्यादा हैं।

ख़ुदा ने क़ुरआन शरीफ़ में फ़रमाया था कि जो शख़्स मेरे इस कलाम की पैरवी करे वह न केवल इस किताब के मोजज़ात पर ईमान लाएगा बल्कि उसको भी मोजज़ात दीए जाऐंगे। अतः मैंने बज़ात-ए-ख़ुद वह मोजज़ात ख़ुदा के कलाम की तासीर से पाए जो इन्सानों की ताक़त से बुलंद और महिज़ ख़ुदा का कार्य हैं। वे ज़लज़ले जो ज़मीन पर आए और वे ताऊन जो दुनिया को खा रही है वे उन्हीं मोजज़ात में से हैं जो मुझ को दिए गए।"

(चशमा मार्फ़त, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 402 – 403)

फ़रमाया कि ये मोजज़ात मेरे नहीं बल्कि क़ुरआन शरीफ़ के हैं क्योंकि हम उसी की ताक़त और उसी की अता करदा रूह से यह काम कर रहे हैं। फ़रमाते हैं :

"उद्देश्य क़ुरआन शरीफ़ की ज़बरदस्त ताक़तों में से एक यह ताक़त है कि इस की पैरवी करने वाले को मोजज़ात और ख़वारिक़ दिए जाते हैं और वे इस कसरत से होते हैं कि दुनिया उनका मुक़ाबला नहीं कर सकती।

इसलिए मैं यही दावा रखता हूँ और बुलंद आवाज़ से कहता हूँ कि अगर दुनिया के समस्त मुख़ालिफ़ क्या पश्चिम के और क्या पूरब के एक मैदान में जमा हो जाएं और निशानों और ख़वारिक़ में मुझ से मुक़ाबला करना चाहें तो मैं ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से और तौफ़ीक़ से सब पर ग़ालिब रहूँगा और यह ग़लबा इस वजह से नहीं होगा कि मेरी रूह में कुछ ज़्यादा ताक़त है बल्कि इस वजह से होगा कि ख़ुदा ने चाहा है कि उस के कलाम क़ुरआन शरीफ़ की ज़बरदस्त ताक़त और उस के रसूल हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रुहानी क़ुव्वत और आला मर्तबत का मैं सबूत दूं।

उसने महिज़ अपने फ़ज़ल से न मेरे किसी हुनर से मुझे यह तौफ़ीक़ दी है कि मैं उस के अज़ीमुश्शान नबी और उस के बड़ी ताकत कलाम की पैरवी करता हूँ और उस से मुहब्बत रखता हूँ और वह ख़ुदा का कलाम जिस का नाम क़ुरआन शरीफ़ है जो रब्बानी ताक़तों का मज़हर है मैं इस पर ईमान लाता हूँ।

और क़ुरआन शरीफ़ का यह वादा है कि لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا (यूनुस : 65) और यह वादा है कि اَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ (अल् मुजादला : 23) और यह वाअदा है कि يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا (अनफ़ाल : 30) इस वादा के मुवाफ़िक़ ख़ुदा ने ये सब मुझे इनायत किया है और अनुवाद इन आयात का यह है कि जो लोग क़ुरआन शरीफ़ पर ईमान लाएँगे उनको मुबश्शिर ख़्वाबें और इलहाम दिए जाऐंगे अर्थात बकसरत दिए जाऐंगे अन्यथा कभी कभी के तौर पर किसी दूसरे को भी कोई सच्ची ख़ाब आ सकती है परंतु एक क़तरा को एक दरिया के साथ कुछ निसबत नहीं और एक पैसा को एक ख़ज़ाना से कुछ मुशाबहत नहीं और फिर फ़रमाया कि कामिल पैरवी करने वाले की रूहुल-क़ुदुस से ताईद की जाएगी अर्थात उनके फ़हम और अक़ल को ग़ैब से एक रोशनी मिलेगी और उनकी कशफ़ी हालत निहायत सफ़ा की जाएगी और उनके कलाम और काम में तासीर रखी जाएगी और उनके ईमान निहायत मज़बूत किए जाऐंगे और फिर फ़रमाया कि ख़ुदा उनमें और उनके ग़ैर में एक फ़र्क़वर्णन का रख देगा अर्थात दूसरे के समक्ष उनके बारीक मआरिफ़ के जो उन को दिए जाऐंगे और समक्ष उनकी करामात और ख़वारिक़ के जो उनको अता होंगी दूसरी समस्त कौमें

शेष पृष्ठ 08 पर

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad